

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182872

UNIVERSAL
LIBRARY

कबीर साहिब की शब्दावली

दूसरा भाग

जिस में

उन महात्मा के अति मनोहर और हृदय-
वेधक भजन और उपकारक उपदेश
बहुत सी लिखी हुई पुस्तकों से
चुनकर और शोध कर मुख्य मुख्य
अंगों में यथाक्रम रखे गये हैं

और गूढ़ शब्दों के अर्थ व संकेत भी
नोट में लिख दिये गये हैं ।

[कोई साहिब बिना इजाज़त के इस पुस्तक को नहीं छाप सकते]

इलाहाबाद

बेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग वर्क्स में प्रकाशित हुई ।

सन १९२१ ई०

तीसरा एडिशन]

[दाम ॥]

॥ संतबानी ॥

CHECKED 1953

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जक्त-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी और उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और जो छपी थीं सो प्रायः ऐसे छिन्न भिन्न और बेजोड़ रूप में या छेपक और त्रुटि से भरी हुई कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ हस्तलिखित दुर्लभ ग्रंथ या फुटकल शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नक़ल कराके मंगवाये। भर सक तो पूरे ग्रंथ छापे गये हैं और फुटकल शब्दों की हालत में सर्व-साधारण के उपकारक पद चुन लिये हैं, प्रायः कोई पुस्तक बिना दो लिपियों का मुकाबला किये और ठीक रीति से शोध नहीं छापी गई है और कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत फुट-नोट में दे दिये हैं। जिन महात्मा की बानी है उन का जीवन-चरित्र भी साथ ही छपा गया है और जिन भक्तों और महापुरुषों के नाम किसी बानी में आये हैं उन के वृत्तांत और कौतुक संक्षेप से फुट-नोट में लिख दिये गये हैं।

दो अंतिम पुस्तकें इस पुस्तक-माला की अर्थात् “संतबानी संग्रह” भाग १ [साखी] और भाग २ [शब्द] छप चुकीं जिन का नमूना देख कर महामहोपाध्याय श्री पंडित सुधाकर द्विवेदी बैकुंठ-वासी ने गद्गद होकर कहा था—
“न भूतो न भविष्यति”।

एक अनूठी और अद्वितीय पुस्तक महात्माओं और बुद्धिमानों के बचनों की “लोक परलोक हितकारी” नाम की गद्य में सन् १९१६ में छपी है जिसके विषय में श्रीमान महाराजा काशी नरेश ने लिखा है—“वह उपकारी शिदाओं का अचरजी संग्रह है जो सोने के ताल सस्ता है”।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तक-माला के जो दोष उन की दृष्टि में आवें उन्हें हम को कृपा करके लिख भेजें जिस से वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावें।

प्राप्रेटर, बेलवेडियर छापाखाना,

अप्रैल सन् १९२१ ई०

इलाहाबाद।

॥ संतवानी ॥

संतवानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जक्त-प्रसिद्ध महात्माओं की वानी और उपदेश के जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और जो छपी थीं सो प्रायः ऐसे त्रिभुज भिन्न और बेजोड़ रूप में या छेपक और त्रुटि से भरी हुई कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ हस्तलिखित दुर्लभ ग्रंथ या फुटकल शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नकल कराके मँगवाये। भर सक तो पूरे ग्रंथ छापे गये हैं और फुटकल शब्दों की हालत में सर्व-साधारण के उपकारक पद चुन लिये हैं, प्रायः कोई पुस्तक बिना दो लिपियों का मुकाबला किये और ठीक रीति से शोध नहीं छापी गई है और कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत फुट-नोट में दे दिये हैं। जिन महात्मा की वानी है उन का जीवन-चरित्र भी साथ ही छपा गया है और जिन भक्तों और महापुरुषों के नाम किसी वानी में आये हैं उन के वृत्तांत और कौतुक संक्षेप से फुट-नोट में लिख दिये गये हैं।

दो अंतिम पुस्तकें इस पुस्तक-माला की अर्थात् “संतवानी संग्रह” भाग १ [साखी] और भाग २ [शब्द] छप चुकीं जिन का नमूना देख कर महामहोपाध्याय श्री पंडित सुधाकर द्विवेदी बैकुंठ-वासी ने गद्गद होकर कहा था—
“न भूतो न भविष्यति”।

एक अनूठी और अद्वितीय पुस्तक महात्माओं और बुद्धिमानों के बचनों की “लोक परलोक हितकारी” नाम की गद्य में सन् १९१६ में छपी है जिसके विषय में श्रीमान महाराजा काशी नरेश ने लिखा है—“वह उपकारी शिक्षाओं का अचरजी संग्रह है जो सोने के ताल सस्ता है”।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तक-माला के जो दोष उन की दृष्टि में आवें उन्हें हम को कृपा करके लिख भेजें जिस से वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावें।

प्रोप्रेटर, बेलवेडियर छापाखाना,

लीजिये 

अभी ही छपी है 

“सिद्धि”

[इस पुस्तक में संसार में प्रविष्ट नवयुवकों के कठनाइयों को बड़ी सरलता से सुलभाया गया है] दाम ॥)

—:~:—

“उत्तर ध्रुव की भयानक यात्रा”

[इस पुस्तक में यह बतलाया गया है कि विपत्ति पड़ने पर मनुष्य को धीरज रखकर उसके टालने का उपाय कैसे करना] दाम ॥)

—:~:—

“गायत्री-सावित्री”

[प्रेम कहानियों के द्वारा इस पुस्तक में शिक्षा बतलाई गई है ज्ञान और बुद्धि बढ़ाने वाली बड़ी उपयोगी पुस्तक] दाम ॥)

मिलने का पता—

—THIS LIST CANCELS ALL PREVIOUS LISTS.

सूचना—कागज़ का दाम इधर और भी बढ़ जाने और छपाई तथा सिलाई बहुत बढ़ जाने से किताबों का दाम अब नीचे लिखे मुताबिक रखना ही पड़ा—

फ़िहरिस्त छपी हुई पुस्तकों की

जीवन-चरित्र हर महात्मा के उन की बानी के आदि में दिया है

कबीर साहिब का साखी संग्रह	...	...	...	१=)
कबीर साहिब की शब्दावली, भाग पहला III), भाग दूसरा	...	...	...	III)
" " " भाग तीसरा I=), भाग चौथा	...	...	...	II)
" " ज्ञान-गुदड़ी, रेखने और भूलने	...	...	...	I=)
" " अखरावती	...	...	...	II)
धनी धरमदास जी की शब्दावली और जीवन-चरित्र	...	...	...	II-)
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की शब्दावली और जीवन-चरित्र भाग प०	...	...	...	१=)
" " भाग २, पद्मसागर ग्रंथ सहित	...	...	...	१=)
" " रत्न सागर मय जीवन-चरित्र	...	...	...	१I-)
" " घट रामायन मय जीवन चरित्र, भाग १	...	...	...	१II)
" " " " भाग २	...	...	...	१II)
गुरु नानक की प्राण-संगली सटिप्पण, और जीवन-चरित्र, भाग पहिला	...	...	...	१II)
" " " भाग दूसरा	...	...	...	१II)
दादू दयाल की बानी, भाग १ "साखी" १II) भाग २ "शब्द"	...	...	...	१I)
सुंदर बिलास	...	...	...	१-)
पलटू साहिब भाग १—कुंडलियाँ	...	...	...	III)
" भाग २—रेखने, भूलने, अरिस्त, कवित्त, सवैया	...	...	...	III)
" भाग ३—भजन और साखियाँ	...	...	...	III)
जगजीवन साहिब की बानी भाग पहला III-) भाग दूसरा	...	...	...	III-)
दुलन दास जी की बानी	...	...	...	I)II
चरनदासजी की बानी और जीवन-चरित्र, भाग प० III-), भाग दू०	...	...	...	III)
गुरीबदास जी की बानी और जीवन-चरित्र	...	...	...	१I-)
रैदास जी की बानी और जीवन-चरित्र	...	...	...	II)
दरिया साहिब (बिहार वाले) का दरिया सागर और जीवन-चरित्र	...	...	...	I=)II
" " के खुने हुए पद और साखी	...	...	...	I-)
दरिया साहिब (मारावाड़ वाले) की बानी और जीवन-चरित्र	...	...	...	I=)
भीखा साहिब की शब्दावली और जीवन-चरित्र	...	...	...	II=)II

गुलाल साहिब (भास्वा साहिब के गुप्त की बानी और जीवन-चरित्र	...	...	...	111)
बाबा मलकदास जी की बानी और जीवन-चरित्र	...	...	...	112)
गुसाईँ तुलसीदास जी की बारहमासी	...	...	...	1)
यागी साहिब की रत्नावली और जीवन-चरित्र	...	...	...	2)
बुल्ला साहिब का शब्दसार और जीवन-चरित्र	...	...	...	1)
केशवदास जी की अमीचूट और जीवन-चरित्र	...	...	...	111)
धरनोदासजी की बानी और जीवन-चरित्र	...	...	...	12)
मीरा बाई की शब्दावली और जीवन-चरित्र	...	...	...	11)
सहजो बाई का सहज-प्रकाश और जीवन-चरित्र	...	...	...	113)
क्या बाई की बानी और जीवन-चरित्र	...	...	...	1)
संतबानी संग्रह, भाग १ [साम्बरी]	...	...	...	111)

[प्रत्येक महात्मा के संक्षिप्त जीवन-चरित्र सहित]

भाग २ [शब्द]	...	...	...	111)
--------------	-----	-----	-----	------

[ग्रे महात्माओं के संक्षिप्त जीवन-चरित्र सहित जो भाग १ में नहीं दाईं]

कुल ३३-)

दूसरी पुस्तकें

लोक परलोक हितकारी सर्पशिष्ट [जिसमें ऐतिहासिक]	तसवीर सहित	
सूची व १०२ स्वदेशी और विदेशी संतों, महात्माओं		
और विद्वानों और ग्रंथों के अनुमान ६५० चुने हुए वचन		
१६२ पृष्ठों में छपे हैं।		
(परिशिष्ट लोक परलोक हितकारी)		...
अहिल्याबाई का जीवन चरित्र अंग्रेजी पद्य में		...
		...
सिद्धि	...	...
उत्तर ध्रुव की भयानक यात्रा	...	...
"गायत्री सावित्री" स्त्रियों के लिए अत्यन्त उपयोगी और शिक्षाप्रद पुस्तक		...

दाम में डारु महसूल व रजिस्टरी शामिल नहीं हैं वह इसके ऊपर लिया जायगा।

[सन् १९२१]

मनेजर, बेलवेडियर प्रेस इलाहाबाद।

सूची शब्दों की ।

शब्द	पृष्ठ
अ—अखंड साहिब का नाम	६७
अखियाँ लागि रहन दे	२६
अगमपुरी को ध्यान	६६
अनगढ़िया देवा	१७
अपनपौ आपुहि तँ बिसरो	११२
अवधू कुदरत की गति न्यारी	२५
अब मैं भूला रे भाई	१५
अब कहँ चले अकेले मीता	३३
अब तोहि जान न छँ	७३
अब हम आनंद को घर	६७
अब कोई खेतिया	१०६
अबिनासी दुलहा	७३
अरे दिल गाफिल	४६
अरे मन धीरज काहे न धरे	१
अस कोई मनहिँ	१०६
अस सतगुरु बोले	११६
आ—आई गवनवाँ की सारी	८३
आऊँगा न जाऊँगा	११४
आज दिन के मैं जाऊँ बलिहारी	६६
आज मेरे सतगुरु आये	६५
आज सुबेलो सुहावने	६५
आज सुहाग की रात पियारी	६८
आपन काहे न सँवारै काजा	३५
आयौ दिन गौने कैहो	४१
आरत कीजै आनम पूजा	१०३
उ—उड़ि जा रे कुमनिया काज	८३
ए—एक नगरिया तनिक सीमँ	५०
ए जियरा तँ अमर लोक को	५
ऐ—ऐसा रंग कहाँ है भाई	५३

शब्द	पृष्ठ
ऐसी खेल ले होरी	८८
ऐसी नगरिया में	४३
क — कव गुरु मिलिहौ	६७
कबिरा कव से भये बैरागी	४७
कर गुजरान गरीबी से	१५
कर साहब से प्रीति	४२
करिके कौल करार	१०३
कलयुग में प्यारी मेहरिया	४४
कहा नर गरवस थोरी बात	२६
कहै कबीर सुनो	१०३
का जोगी मुद्रा करे	११
का नर सोवत	४५
काया बौरी चलत प्रात	३४
काया सगाय में	४०
काया गढ़ जीतो रे	६०
का ले जैयो समुर घर ऐवो	४०
का संग होरी खेला	८७
किसी दा भइया	४४
कैसे खेलौ पिया संग	८५
कोइ कुच्छ कहै	२७
कोइ मोपे रंग न डारौ	८८
कोइ हरे हमारै गाँव को	८६
कौन रंगरेजवा रंगै	७५
कैवल से भारा बिछुड़ल	११४
ख — खेलक सब रैन का सपना	३१
खसम न चीन्है बाधरी	१२
खालिक खूबै खूब ही	७७
खेल ले दिन चार पियारी	६१
खेलै फाग सबै नर नारी	८४
खेलौ साथ सदा होरी	६०
खेलौ नित मंगल होरी	८६
ग — गगन मंडल अरुभाई	८७
गाफिल मन	३६

शब्द	पृष्ठ
गुरु दियना बारू रे	८०
गुरु रंग लागा	२३
गुरु से कर मेल	१२
घ—घर घर दीपक बरे	८
घूँघट को पट खोल रे	७६
च—चरखा चले सुरत	१०
चरखा नहीं निगोड़ा चलता	१४
चल चल रे भँवरा कँवल पास	४१
चलना है दूर मुसाफिर	३८
चल हंसा सत लोक हमारे	१३
चली चल मग में	११५
चली मैं खोज में पिय की	७१
चली है कुल-बोरनी गंगा नदाय	४३
चलु हंसा वा देस	६३
चलो जहाँ बसत पुरुष	६२
चाचरि खेलो हो	६३
चार दिन अपनी नाँवत	२६
चुनरिया, पचरँग	७५
चुवत अमीँ रस	५०
वेत सवेरे चलना बाट	३६
छ—छिमा गहौ हो भाई	११
ज—जग में गुरु समान नहीं दाता	१८
जग में सोइ बैरागी कहावै	११६
जतन बिन मिरगन खेत उजाड़े	२८
जनम तेरो धोखे में बीता जाय	६५
जनम सिरान भजन कब करिहौ	१७
जब कोई रतन पारखी पैदौ	१६
जहुँ बारह मास बसंत	१०
जाके नाम न आवत द्विये	६
जाके रहनि अपार जगत में	२३
जागत जोगेसर पाया मेरे रबिजू	४६
जाग पियारी अब का सोवै	२७

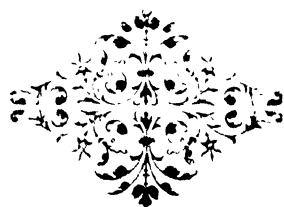
शब्द	पृष्ठ
जा दिन मन पंछी उड़ि जैहँ	६४
जिन प्रिया प्रेम रस प्याला	६४
जियन न मार मुआ मन लैयो	५४
जीवन मुक्त मोह मुक्ता हो	१०
जोगवै निस बासर	११३
जो तू प्रिय की लाइली	६७
हु—हुगहुगी सहर में बाजी हो	११३
त—तलफैं बिन बालम	७७
तुम घट बसंत खेलो सुजान	६३
तुम साहिव बहुरंगी	१००
तू सूरन नैन निहार	५५
तेरो को है रोकनहार	७०
तेरा हीरा दिगाइलवा किचडे में	४०
द—दरमाँदा ठाढ़ी तुम दरबार	७२
दरस तुम्हारे दुर्लभ	७२
दिन दस नैहरवाँ खेलि ले	६०
दिन रातै गावो	१०७
दुनिया आमार भूपर अरुभी	३२
दुबिधा को करि दूर	१०२
दुलहिनी तोहि प्रिय के घर जाना	४०
दूर गवन तेरो हंवा	६३
देखि माया हो रूप	१०१
ध—धन सतगुरु जिन दिपो उपदेश	२३
धुबिया जल बिच मरत प्रियासा	७
न—नदी जाय रे महलिया	७६
नाम अमल उतरे ना	८१
नाम विमल पकवान	५०
नाम लगन छूटे नहीं	४
नाम सुमिर नर बावरो	१०
ना मैं धर्मी नहीं अयर्मी	१११
निज बैपारी नाम का	१४
नित मंगल होगी खेला	८५

शब्द	पृष्ठ
नैहर से जियरा फाटि रे	३७
प —पढ़ो मन ओनामासीधंग	८
परमातम गुरु निकट बिराजै	२७
प्रथम एक जो आपै आप	११८
प्रीति उसी से कीजिये	२
प्रीति लगी तुम नाम की	६७
प्रेम सखी तुम करो विचार	७८
पायौ सत नाम गरे कै हरवा	८०
पिय विन होरी	८६
पिया मोरा मिलिया	२४
व —बन्दी छोर कवीर	१०५
वन्दे करि ले आप निबेग	४२
बलिहारी जाउँ मै सतगुरु के	१८
बहुत दिनन में प्रीतम आये	६८
बातौं मुक्ति न होई है	४
बावरो सखि ज्ञान है मेरा	८४
बिरहिन भुकोग मारी	८७
भ —भजन विन योंही जनम गँवायो	४३
भजन में होत आनन्द	८१
भजि ले सिरजन द्वार	२
भलु मन जीवन नाम सबेरा	४१
भाई तैं ने बड़ा ही झुलम गुजारा	४५
म —मन करि ले साहिव से प्रीति	६
मन को न तौल्यौ	१४
मन तू जाव रे महलिया	६
मन तू थकत थकत थकि जाई	२
मन तू पार उतरि कहँ जैहँ	४२
मन तू मानत क्यों न	१
मन तोहिँ नाच	८६
मन न रँगाये	१३
मन मिलि सतगुरु	६०
मन मैल न जाय कैसे कै धोवौं	२६
मन रे अश की बेर सस्टारो	५

शब्द	पृष्ठ
मन रंगी खेलै धमार	६५
मानुष तन पायो	८६
मारग बिहंग बतावै	५२
मेरा दिल सतगुरु से राजी	३७
मेरी नजर में मोती आया है	५५
मेरे सतगुरु पकड़ी बाँह	२२
मेरो साहिब आवनहार	६६
मैं तो घा दिन फाग	८२
मैं देख्यो तोरी नगरी	७४
मोर बनिजरया लादे जाय	३१
मेरी रंगी चुनरिया धो	७५
य—यद कलि ना कोइ अपनो	१०२
यद मन जालिम	११०
या जग अंधा मैं केहिँ समझावै	३६
ये अस्त्रियाँ अलसानी हो	८२
र—रतन जतन करि प्रेम के तन धरि	२०
राखि लेहु हम तेँ बिगरी	७१
रिम भिम बरसै बूंद	११३
ल—लोगवै बड़ मतलब के यार	४४
व—वारी जाऊँ मैं सतगुरु के	२०
वाह वाह अमर घर पाया है	१२१
वाह वाह सरना गति	११०
स—सखि आज हमारे गृह बसंत	६३
सखी री ऐसी होरी खेल	६१
सतगुरु चीन्हो रे भाई	२०
सत सबद कमान	१०५
सतगुरु सबद सहाई	२४
सतगुरु साह संत सौदागर	२१
सतगुरु सोई दया करि दीन्हा	२२
सतगुरु हैं रंगरेज	६६
सत साहिब खेल	६५
सतसंग लागि रहो रे भाई	१३

शब्द	पृष्ठ
सब का साखी मेरा साईं	५१
सब जग रोगिया हो	५२
सबद की चोट लगी है तन में	७१
सब बातन में चतुर हैं	७
समुझ देख मन मोत पियरवा	६
समुझि बूझि के देखो	१०६
ससुरे का व्योहार	३६
साईं मोर बसत अगम पुरवा	४८
साचा साहिब एक तू	७८
साचे सतगुरु की बलिहारी	२०
साध संगत गुरु देव	१०१
साधो ई मुर्दन के गाँव	३३
साधो कर्ता कर्म तैं न्यारा	१६
साधो भजन भेद है न्यारा	१६
साधो यह मन है	११०
साधो सार सबद गुन गाओ	६
साधो सो सतगुरु मोहि भावै	१८
साहिब हम म साहिब तुम में	४७
सुकिरत करि ले	४
सुख सागर में ब्राह्म के	७
सुगमा बोल तैं निज नाम	६२
सुन सतगुरु की तान	७६
सुन सतगुरु की बानी लो	२१
सुनहु अहो मेरि राँध परोसिन	७२
सुनो सोहागिन नारि	६७
सुरत सरोवर न्हाइ के	६८
सुरसरि बुकवा बटावै	५६
सूतल रहलूँ मैं नींद भरि हो	६६
सृष्ट गई जहँ डाय	२८
सैयाँ बुलावै	७६
सो पंछी मोहि	५३
सँग लागी मेरे, ठगनी	५४
संत जन करत साहबी तन में	१६

शब्द	पृष्ठ
ह—हंसा कहा पुरातम बात	५२
हंसा सुधि कर अपनो देसा	४५
हम ऐसा देखा सतगुरु	१०६
हम तो एक ही करि जानो	७४
हमरे सत्तनाम धनाखेती	२१
हम से रहा न जाय	५२
हमें रे कोई कानन देइ सिखाय	३८
हरि ठगि जगत ठगोरी लाई	११२
हरि दरजी का मरम	११२
हिरवा भुलाय समुरे जाल	३२
हीरा नाम अमोल है	११५
हीरा वहाँ भँजैये	१११
हुआ जय इस्क मस्ताना	७६
हूँ वारी मुख फेर पियारे	६६
है कोई भूला मन समुझावै	१०
है सब में सबही तें न्यारा	२५
होइ है कस नाम बिना निस्तारा	२५
होरी खेलत फाग	८२
हो तुम हंसा सत्तलोक के	४६
ज्ञ—ज्ञान आरती	११५



कबीर शब्दावली

दूसरा भाग

उपदेश

॥ शब्द १ ॥

अरे मन धीरज काहे न धरै ।

सुभ और असुभ करम पूरवले, रती घटै न बढ़ै ॥ १ ॥

होनहार होवै पुनि सोई, चिन्ता काहे करै ।

पसु पंछी जिव कीट पतंगा, सब की सुहु करै ॥ २ ॥

गर्भ वास मैं खबर लेतु है, बाहर क्यों विसरै ।

मात पिता सुत सम्पति दारा, मोह के ज्वाल जरै ॥ ३ ॥

मन तू हंसन से साहिव के, भटकत काहे फिरै ।

सतगुरु छोड़ और को ध्यावै, कारज इक न सरै ॥ ४ ॥

साधुन सेवा कर मन मेरे, कोटिन व्याधि हरै ।

कहत कबीर सुनो भाई साधो, सहज मैं जीव तरै ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

मन तू मानत क्यों न मना रे ।

कैान कहन को कैान सुनन को, दूजा कैान जना रे ॥ १ ॥

दर्पन मैं प्रतिबिम्ब जो भासै, आप चहूँ दिसि सोई ।

दुविधा मिटै एक जब होवै, तौ लखि पावै कोई ॥ २ ॥

जैसे जल तैं हेम' बनतु है, हेम घूम जल होई ।

तैसे या तत' वाहू तत' सो, फिर यह अरु वह सोई ॥ ३ ॥

जो समुझै तो खरी कहन है, ना समुझै तो खाटी ।
कहै कबीर दोऊ पख त्यागै, ता की मति है मोटी ॥४॥

॥ शब्द ३ ॥

मन तू थकत थकत थक जाई ।

बिन थाकै तेरो काज न सरिहै, फिर पाछे पछिताई ॥१॥

जब लग तोकर जीव रहतु है, तब लग परदा भाई ।

टूटि जाय ओट तिनुका की, रसक रहै ठहराई ॥ २ ॥

सकल तेज तज होय नपुनसक, यह मति सुन ले मेरी ।

जीवन मितक दसा बिचारै, पावै वस्तु घनेरी ॥ ३ ॥

या के परे और कछु नाहीं, यह मति सब से पूरा ।

कहै कबीर मान मन चंचल, हो रहु जैसे धूरा ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

प्रीति उसी से कीजिये, जो ओर निभावै ।

बिना प्रीति के मानवा, कहिँ ठौर न पावै ॥ १ ॥

नाम सनेही जब मिलै, तब ही सब पावै ।

अजर अमर घर ले चलै, भवजल नहिँ आवै ॥ २ ॥

ज्यों पानी दरियाव का, दूजा न कहावै ।

हिल मिल ऐकै हूँ रहै, सतगुरु समुझावै ॥ ३ ॥

दास कबीर बिचारि के, कहि कहि जतलावै ।

आपा मिटि साहिव मिलै, तब वह घर पावै ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५ ॥

भजि ले सिरजनहार, सुघर तन पाइ के ॥ टेक ॥

काहे रहौ अचेत, कहाँ यह औसर पैहौ ।

फिर नाहिँ ऐसी देह, बहुरि पाछे पछितैहो ॥

लख चौरासी जोनि मैं, मानुष जन्म अनूप ।
 ताहि पाइ नर चेतत नाहीं, कहा रंक कहा भूप ॥१॥
 गर्भ वास मैं रह्यो कह्यो, मैं भजिहैं तोहों ।
 निस दिन सुमिरैं नाम, कष्ट से काढो मोहिं ॥
 चरनन ध्यान लगाइ के, रहैं, नाम लौ लाय ।
 तनिक न तोहिं बिसारिहैं, यह तन रहै कि जाय ॥२॥
 इतना क्रियौ करार, काढ़ि गुरु बाहर कीन्हा ।
 भूलि गयौ वह बात, भयौ माया आधीना ॥
 भूलैं बातें उद्र की, आनि पड़ी सुधि एन ।
 बारह बरस बीत गे या बिधि, खेलत फिरत अचेत ॥३॥
 बिषया बान समान, देह जोवन मद माते ।
 चलत निहारत छाँह, तमक के बोलत बाते ॥
 चोवा चंदन लाइ के, पहिरे बसन रँगाय ।
 गलियाँ गलियाँ भाँकी मारै, परतिरिया लख मुसकाय ॥४॥
 तुरनापन गइ बीत, बुढ़ापा आन तुलाने ।
 काँपन लागे सीस, चलत दोउ चरन पिराने ॥
 नैन नासिका चूवन लागे, मुख तैं आवत वास ।
 कफ पित कंठै घेर लियो है, छुटि गइ घर की आस ॥५॥
 मातु पिता सुत नागि, कहौ का के संग जाई ।
 तन धन घर औ काम धाम, सबही छुटि जाई ॥
 आखिर काल घसिटहै, परिहौ जम के फन्द ।
 बिन सतगुरु नहिं बाचि है, समुझि देख मतिमन्द ॥६॥
 सुफल होत यह देह, नेह सतगुरु से कीजै ।
 मुक्ती मारग जानि, चरन सतगुरु चित दीजै ॥

नाम गहौ निरभय रहौ, तनिक न व्यापै पीर ।
यह लीला है मुक्ति की, गावत दास कबीर ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६ ॥

बातैं मुक्ति न होइहै, छाड़ै चतुराई हो ।
एक नाम जानै बिना, भूला दुनियाई हो ॥१॥
बेद कतेय भवजाल है, मरि है बौराई हो ।
मुक्ति भेव कछु और है, कोइ बिरलै पाई हो ॥२॥
काग छाड़ि बिन हंस हूँ, नहिँ मिलत मिलाई हो ।
जो पै कागा हंस हूँ, वा से मिल जाई हो ॥३॥
बसहु हमारे देशवा, जम तलय नसाई हो ।
गुरु बिन रहनि न होइहै, जम धैधै खाई हो ॥ ४ ॥
कहै कबीर पुकार के, साधुन समझाई हो ।
सत्त सजीवन नाम है, सतगुरु हि लखाई हो ॥५॥

॥ शब्द ७ ॥

नाम लगन छूटै नहीं, सोइ साधु सयाना हो ॥टेक॥
माटी के बरतन बन्यो, पानी लै साना हो ।
बिनसत बार न लागिहै, राजा क्या राना हो ॥१॥
क्या सराय का वासना, सब लोग बिगाना हो ।
हात भीर सब उठि चले, दूर देश को जाना हो ॥२॥
आठ पहर सन्मुख लड़ै, सो बाँधै बाना' हो ।
जीत चला भवसागर सोइ, सूर मरदाना हो ॥३॥
सतगुरु की सेवा करै, पावै परवाना' हो ।
कहै कबीर धर्मदास से, तेहि काल डेराना हो ॥४॥

॥ शब्द ८ ॥

सुकिरत करि ले नाम सुमिर ले, को जानै कल की ।
जगत में खबर नहीं पल की ॥१॥

झूठ कपट करि माया जोरिन, बात करै छल की ।
 पाप की पोत धरे सिर ऊपर, किस विधि है हलकी ॥२॥
 यह मन तो है हस्ती मस्ती, काया मही की ।
 साँस साँस मैं नाम सुमिरि ले, अवधि घटै तन की ॥३॥
 काया अंदर हंसा बोलै, खुसियाँ कर दिल की ।
 जब यह हंसा निकरि जाहिंगे, मही जंगल की ॥४॥
 काम क्रोध मद लोभ निवारो, याही बात असल की ।
 ज्ञान वैराग दया मन राखो, कहै कबीरा दिल की ॥५॥

॥ शब्द ६ ॥

ए जियरा तैं अमर लोक को, पखो काल बस आई हो ।
 मनै सरूपी देव निरंजन, तोहि राखो भरमाई हो ॥१॥
 पाँच पचीस तीन को पिंजरा ता मैं तो को राखै हो ।
 तो को बिसरि गई सुधि घर की, महिमा आपन भावै हो ॥२॥
 निरंकार निरगुन हू माया, तो को नाच नचावै हो ।
 चमर दृष्टि की कुलफी दीन्हो, चौरासो भरमावै हो ॥३॥
 चार वेद जाकी है स्वासा, ब्रह्मा अस्तुति गावै हो ।
 सो कथि ब्रह्मा जगत भुलाये, तोहि मारग सब धावै हो ॥४॥
 जाग जाप नेम व्रत पूजा, बहु परपंच पसारा हो ।
 जैसे अधिक ओट टाटो के, दे बिस्वासै चारा हो ॥ ५ ॥
 सतगुरु पोव जीव के रच्छक, ता से करो मिलाना हो ।
 जा के मिले परम सुख उपजै, पावो पद निर्याना हो ॥६॥
 जुगन जुगन हम आय जनाई, कोइ कोइ हंस हमारा हो ।
 कहै कबीर तहाँ पहुँचाऊँ, सत्त पुरुष दरबारा हो ॥७॥

॥ शब्द १० ॥

मन रे अब की बेर सम्हारो ॥ टेक ॥
 जन्म अनेक दगा मैं खोयो, बिन गुरु बाजी हारो ॥१॥

बालापने ज्ञान नहि तन में, जय जनमो तव बारो ॥२॥
 तरुनाई सुख वास में खोयो, बाज्यो कूच नगारो ॥३॥
 सुत दाग मतलब के साथी, ता को कहत हमारो ॥४॥
 तीन लोक औ भवन चतुरदस, सब हि काल को चारो ॥५॥
 पूर रह्यो जगदीश गुरू तन, वा से रह्यो निवारो ॥६॥
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, सब घट देखनहारो ॥७॥

॥ शब्द ११ ॥

मन करि ले साहित्य से प्रीति ।

सरन आये सो सब ही उबरे, ऐसी उनकी रीत ॥१॥
 सुन्दर देह देखि मत भूलो, जैसे तन पर सीत ।
 काँची देह गिरै आखिर को, ज्यों बारू की भीत ॥२॥
 ऐसी जन्म बहुर नहि पैहौ, जात उमिरि सब बीत ।
 दास कबीर चढ़े गढ़ ऊपर, देव नगारा जीत ॥३॥

॥ शब्द १२ ॥

साधो सार सबद गुन गायो ॥ टेक ॥

काया कोट में काम बिराजै, सो जम के गढ़ छाये ।
 चौदह बुरुज दसो दरवाजा, कोठरी अनेक बसाये ॥१॥
 पाँचो यार पचीसो भाई, सगरि गुडार बुलाओ ।
 तेगा तरकसि कसि के बाँधो, दुरमति दूर बहाओ ॥२॥
 काढि कटारी जम को मारो, तबै अमल गढ़ पाओ ।
 त्रिकुटी मध्य तिरबेनी धारा, सूरमा भक्त कहाओ ॥ ३ ॥
 मन बन्दूक औ ज्ञान पलीता, प्रेम पियाला लाओ ।
 सबद कै गोली धुनि कै रंजक, काल मारि बिचलाओ ॥४॥

(१) पाला । (२) दस इन्द्रो और चार अंतःकरण । (३) दस अंतरी द्वार ।

(४) अंतरी चक्र ।

जो कोइ बीर चढ़ै लड़ने पर, मन के मैल धुवाओ ।
 द्वादस घाटी छेके बाटी, सुरत संगीन चढ़ाओ ॥५॥
 गगनमें गहगह होत महा धुन, साधक सुनि उठि धाओ ।
 संतन धीरा महा कबीरा, सूतल' ब्रह्म जगाओ ॥ ६ ॥

॥ शब्द १३ ॥

सुख सागर में आइ के, मत जा रे प्यासा ॥ टेक ॥
 अजहु समझ नर बावरे, जम करत तिरासा ॥ १ ॥
 निर्मल नीर भयो तेरे आगे, पी ले स्वासा स्वासा ॥ २ ॥
 मृग-तृस्ना जल छाड़ बावरे, करो सुधा रस आसा ॥ ३ ॥
 गोपोचंदा और भयंरो, विहिन प्रेम भर कासा ॥ ४ ॥
 ध्रू प्रहलाद भीखन पीया, और पिया रैदासा ॥ ५ ॥
 प्रेमहि संत सदा मतवाला, एक नाम की आसा ॥ ६ ॥
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, मिट गई भव की बासा ॥ ७ ॥

॥ शब्द १४ ॥

धुबिया' जल बिच मरत पियासा ॥ टेक ॥
 जल में ठाढ़ पियै नहिं मूरख, अच्छा जल है खासा ।
 अपने घट कै मरम न जानै, करै धुबियन कै आसा ॥ १ ॥
 छिन में धुबिया रोवै धोवै, छिन में होइ उदासा ।
 आपै बरै' करम की रस्सी, आपन गर' कै फाँसा ॥ २ ॥
 सच्चा साबुन लेहिन मूरख, है संतन के पासा ।
 दाग पुराना छूटत नाहीं, धोवन बारह मासा ॥ ३ ॥
 एक रती कै जोरि लगावै, छोरि दिये भरि मासा ।
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, आछत अन्न उपासा ॥ ४ ॥

॥ शब्द १५ ॥

सब बातन में चतुर है, सुमिरन में काँचा ।
 सत्तनाम को छाँड़के, माया संग राचा ॥ १ ॥

दोनवन्धु विसराइया, आया दे वाचा ।

ज्यौहि नचाया कामिनी, त्यों त्यों ही नाचा ॥ २ ॥

इन्द्रि विषे के कारने, सही नर्क को आँचा ।

कहै कबीर हरि जय मिलै, हरिजन हो साचा ॥ ३ ॥

॥ शब्द १६ ॥

घर घर दिपक बरै, लखै नहिँ अंध है ।

लखत लखत लखि परै, कटै जम फंद है ॥ १ ॥

कहन सुनन कछु नाहिँ, नहीं कछु करन है ।

जीते ही मरि रहै, बहुरि नहि मरन है ॥ २ ॥

जोगी पड़े विजोग, कहैं घर दूर है ।

पासहि बसत हजूर, तु चढ़त खजूर है ॥ ३ ॥

ब्राम्हन दिच्छा देत, सो घर घर पालिहै ।

मूर सजीवन पास, सो पाहन पालिहै ॥ ४ ॥

ऐसन दास कबीर, सलोना आप है ।

नहीं जोग नहीं जाप, पुन्रनहिँ पाप है ॥ ५ ॥

॥ शब्द १७ ॥

पढ़े मन ओनामासीधंग' ॥ टेक ॥

ओंकार सबै कोई सिरजै, सबद सखूपी अंग ।

निरंकार निर्गुन अविनासी, कर वाही को संग ॥ १ ॥

नाम निरंजन नैनन महुँ, नाना रूप धरंत ।

निरंकार निर्गुन अविनासी, निरखै एकै रंग ॥ २ ॥

माया मोह मगन होइ नाचै, उपजै अंग तरंग ।

माटो कै तन थिर न रहतु है, मोह ममत के संग ॥ ३ ॥

सील संतोष हृदे बिच दाया, सबद सखूपी अंग ।

साध के बचन सत्त करि मानौ, सिर्जनहारो संग ॥ ४ ॥

ध्यान धीरज ज्ञान निर्मल, नाम तत्त गहंत ।

कहै कबीर सुनो भाई साधो, आदि अंत परयंत ॥ ५ ॥

॥ शब्द १८ ॥

मन तू जाव रे महलिया, आपन बिरना जगाव ॥टेक॥

भौजिया मरै जगाइ न जागै, लग न सकै कछु दाव ।

कायागढ़ तेरे निसिअंधियरिया, कौन करै वा को भाव ॥१॥

अकिल की आग दया की बाती, दीपक बारि लगाव ।

तत कै तेल चुवै दियना मैं, ज्ञान मसाल दिखाव ॥२॥

भ्रम कै ताला लगा महल मैं, प्रेम की कुंजी लगाव ।

कपट किवरिया खोल के रे, यहि विधि पिय को जगाव ॥३॥

चित्त चुनरिया भक्ति घाघरा, चोली चाव सिलाव ।

प्रेम कै पवन करौ प्रीतम पर, प्रीति पिछौरी उढ़ाव ॥४॥

बार बार पैहौ नहिं नर तन, फेरि भूलि मन जाव ।

कहै कबीर सुनो भाई साधो, फिरि न लगै अस दाव ॥५॥

॥ शब्द १९ ॥

समुझ देख मन मीत पियरवा, आसिक होकर सोना क्या रे ॥१॥

रूखा सूखा गम का टुकड़ा, चिकना और सलोना क्या रे ॥२॥

पाया हो तो देले प्यारे, पाय पाय फिर खोना क्या रे ॥३॥

जिन आँखन मैं नौंद घनेरी, तक्रिया और बिछौना क्या रे ॥४॥

कहै कबीर सुनो भाई साधो, सास दिया तब रोना क्या रे ॥५॥

॥ शब्द २० ॥

जाके नाम न आवत हिये ॥ टेक ॥

काह भये नर कासी बसे से, का गंगाजल पिये ॥ १ ॥

काह भये नर जटा बढ़ाये, का गुदरी के सिये ॥ २ ॥

का रे भये कंठी के बाँधे, काह तिलक के दिये ॥ ३ ॥

कहै कबीर सुनो भाई साधो, नाहक ऐसे जिये ॥ ४ ॥

॥ शब्द २१ ॥

नाम सुमिर नर बावरे, तोरी सदा न देहियाँ रे ॥टेक॥
 यह माया कहे कौन की, केकरे सँग लागी रे ।
 गुदरी' सी उठि जायगी, चित चेत अभागी रे ॥१॥
 सोने की लंका बनी, भइ धूर की धानी रे ।
 सोइ रावन की साहिबी, छिन माहिँ बिलानी रे ॥२॥
 सोरह जोजन के मट्ठ में, चले छत्र की छाँही रे ।
 सोइ दुर्जोधन मिलि गये, माटी के माहीं रे ॥३॥
 भवसागर में आइ के, कछु कियो न नेका रे ।
 यह जियरा अनमोल है, कैड़ी को फेका रे ॥४॥
 कहै कबीर पुकारि के, इहाँ कोइ न अपना रे ।
 यह जियरा चलि जायगा, जस रैन का सपना रे ॥५॥

॥ शब्द २२ ॥

है कोइ भूला मन समुझावै ।

या मन चंचल चोर हेरि ले, छूटा हाथ न आवै ॥१॥
 जोरि जोरि धन गहिरे गाढ़े, जहाँ कोइ लेन न पावै ।
 कंठ का पौल' आइ जम घेरे, दै दै सैन बतावै ॥२॥
 खोटा दाम गाँठि ले बाँधै, बड़ि बड़ि बस्तु भुलावै ।
 बाय बबूल दाख' फल चाहै, सो फल कैसे पावै ॥३॥
 गुरु की सेवा साध की संगत, भाव भगती बनि आवै ।
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, बहुरि न भव जल आवै ॥४॥

॥ शब्द २३ ॥

जीवत मुक्त सोइ मुक्ता हो ।

जबलग जीवन मुक्तानाहीं, तबलग दुख सुख भुगताहो ॥टेक॥

(१) बाज़ार जो कसबों में थोड़ी देर को तीसरे पहर लगता है । (२) कंठ का द्वार—गला घुँटने से भाव है । (३) बुझावा ।

देह संग ना होवै मुक्ता, मुए मुक्ति कहँ होई हो ।
 तीरथवासी होय न मुक्ता, मुक्ति न धरनी सोई हो ॥१॥
 जीवत भर्म की फाँस न काटी, मुए मुक्ति की आसा हो ।
 जल प्यासा जैसे मर कोई, सपने फिरै पियासा हो ॥ २ ॥
 हूँ अतीत बंधन तैं छूटै, जहँ इच्छा तहँ जाई हो ।
 बिना अतीत सदा बंधन में, कितहूँ जानि न पाई हो ॥३॥
 आवागवन से गये छूटि के, सुमिरि नाम अबिनासी हो ।
 कहै कबीर सोई जन गुरु है, काटी भ्रम की फाँसी हो ॥४॥

॥ शब्द २४ ॥

छिमा गहौ हो भाई, धरि सतगुरु चरनी ध्यान रे ॥१॥
 मिथ्या कपट तजो चतुराई, तजो जाति अभिमान रे ॥२॥
 दया दीनता समता धारो, हो जीवत मृतक समान रे ॥३॥
 सुरत निरत मन पवन एक करि, सुनो सबद धुन तान रे ॥४॥
 कहै कबीर पहुँचौ सतलोका, जहँ रहै पुरुष अमान रे ॥५॥

॥ शब्द २५ ॥

का जोगी मुद्रा करै, साहिव गति न्यारी ॥ टेक ॥
 नेती धोती वह करै, बहु भाँति सँवारी ।
 बाजोगर का पेखना' सब देखनहारी ॥ १ ॥
 झाड़ी जंगल वे फिरै, अंधे वैपारी ।
 पूजा तर्पन जाप में, भूले ब्रम्हचारी ॥ २ ॥
 उलटा पवन चढ़ाइ के, जीवै अधिकारी ।
 तन तजि के अजगर भये, गये बाजी हारी ॥ ३ ॥
 सुन्न महल कहा सोइये, जहँ निसि अँधियारी ।
 कहै कबीर वहँ सोइये, रबि ससि उँजियारी ॥ ४ ॥

॥ शब्द २६ ॥

स्वसम न चीन्है बावरी, का करत बड़ाई ॥ टेक ॥
 बातन भगत न होहिंगे, छोड़ी चतुराई ।
 कागा हंस न होहिंगे, दुविधा नहिं जाई ॥ १ ॥
 गुरु बिन ज्ञान न पाइहौ, मरिहौ भटकाई ।
 चेत करौ वा देस, नहीं जम हाथ बिकाई ॥ २ ॥
 दिल दरियाव की माछरी, गंगा बहि आई ।
 कोटि जतन से धोवही, तहु वास न जाई ॥ ३ ॥
 साखी सबद सँदेस पढ़ि, मत भूलो भाई ।
 संत मता कछु और है, खोजा सो पाई ॥ ४ ॥
 तीनि लोक दसहौं दिसा, जम धै धै खाई ।
 जाइ बसो सतलोक मै, जहँ काल न जाई ॥ ५ ॥
 कहै कबीर धर्मदास से, हंसा समुझाई
 आदि अंत की बारता, सतगुरु से पाई ॥ ६ ॥

॥ शब्द २७ ॥

गुरु से कर मेल गँवारा, का सोचत बारम्बारा ॥ १ ॥
 जब पार उतरना चाहिये, तब केवट से मिलि रहिये ॥ २ ॥
 जब उतरि जाय भवपारा, तब छूटै यह संसारा ॥ ३ ॥
 जब दरसन देखा चाहिये, तब दर्पन माँजत रहिये ॥ ४ ॥
 जब दर्पन लागत काई, तब दर्सन कहँ तैं पाई ॥ ५ ॥
 जब गढ़ पर वजी बधाई, तब देख तमासे जाई ॥ ६ ॥
 जब गढ़ बिच होत सकेला, तब हंसा चलत अकेला ॥ ७ ॥
 कह कबीर देख मन करनी, वा के अंतर बीच कतरनी ॥ ८ ॥
 कतरनि कै गाँठि न छूटै, तब पकरि पकरि जम लूटै ॥ ९ ॥

॥ शब्द २८ ॥

चल हंसा सतलोक हमारे, छोड़ो यह संसारा हो ॥टेक॥
 यहि संसार काल है राजा, करम को जाल पसारा हो ।
 चौदह खंड बसै जाके मुख, सब को करत अहारा हो ॥१॥
 जारि वारिकोड़ला करि डारत, फिरि फिरि दे औतारा हो ।
 ब्रम्हा विष्णु सिव तन धरि आये, और को कौन बिचारा हो ॥२॥
 सुर नर मुनि सब छल छल मारिन, चौरासी में डारा हो ।
 मट्ट अकास आप जंह बैठे, जोति सबद उजियारा हो ॥३॥
 सेत सरूप सबद जहँ फूले, हंसा करत बिहारा हो ।
 कोटिन सूर चँद छिप जैहँ, एक रोम उजियारा हो ॥४॥
 वहि पार इक नगर बसतु है, बरसत अमृत धारा हो ।
 कहै कबीर सुनो धर्मदासा, लखो पुरुष दरबारा हो ॥५॥

॥ शब्द २९ ॥

सतसंग लागि रहो रे भाई, तेरी बिगरी बात बन जाई ॥टेक॥
 दौलत दुनियाँ माल खजाने, बधिया बेल चराई ।
 जबही काल कै डंडा बाजै, खोज खबरि नहिं पाई ॥१॥
 ऐसी भगति करौ घट भीतर, छोड़ कपट चतुराई ।
 सेवा बँदगी अरु अधीनता, सहज मिलै गुरु आई ॥२॥
 कहत कबीर सुनो भाई साधो, सतगुरु बान बतवाई ।
 यह दुनियाँ दिन चार दहाड़े, रहो अलख लौ लाई ॥३॥

॥ शब्द ३० ॥

मन न रँगाये रँगाये जोगी कपड़ा ॥टेक॥
 आसन मारि मन्दिरमें बैठे ।

नाम छाड़ि पूजन लागे पथरा ॥१॥
 कनवाँ फड़ाय जोगी जटवा बढ़ौलै ।
 दाढ़ी बढ़ाय जोगी होइ गैलै बकरा ॥२॥

जंगल जाइ जोगी धुनिया रमौलै ।

काम जराय जोगी होइ गैलै हिजरा ॥३॥

मथवा मुड़ाय जोगी कपरा रँगौलै ।

गीता बाँचि के होइ गैलै लवरा ॥४॥

कहहि कबीर सुनो भाई साधो ।

जम दरवजवाँ बाँधल जैवै पकरा ॥५॥

॥ शब्द ३१ ॥

मन को न तौल्यौ तो का तौल्यौ बनियाँ ॥टेक॥

काहे की पूँजी काहे का सौदा, काहे की कैले दुकनियाँ ।

काहे की डाँडी काहे का पलरा, काहे की मारौ टेनियाँ ॥१॥

करम की पूँजी धरम का सौदा, चित की कैले दुकनियाँ ।

मर तन कै जो डाँडी पलरा, मर की मारौ टेनियाँ ॥२॥

काया नगर के हाट में रे, ऊँची कैले दुकनियाँ ।

कैसन तोरी सौँठ औ आदी, कैसन तोरी धनियाँ ॥३॥

पकरि पैहँ बजार के बाहर, फँक देहँ तोरी दुकनियाँ ।

कहै कबीर सुनो भाई साधो, छाड़ि दे तन की लदनियाँ ॥४॥

॥ शब्द ३२ ॥

निज वैपारी नाम का हाटै चलु भाई ॥टेक॥

साध संत गहकी भये, गुरु हाट लगाई ।

सार सबद कलु बस्तु है, सौदा करु भाई ॥१॥

भाव खुला पँच रंग का, बहु करत दलाली ।

जाके हाथ बिबेक है, करि देत सवाई ॥२॥

पाप पुन पलरा भये, सुरत भइ डाँडी ।

ज्ञान दुसेरा डारि कै, पूरा करु भाई ॥३॥

करि सौदा घर को चले, रोका दरबानी ।

लेखा दे निज नाम का, कहँ का वैपारी ॥४॥

पानी सी बानी बही, गुरु छाप दिखाई ।
 इतना सुन कायल भये, जम सीस नवाई ॥५॥
 संत चले सतलोक को, छोड़ा संसारी ।
 कुंदन भये दरबार मैं, प्रभु नजर गुजारी ॥ ६ ॥
 कहै कबीर बैठा सही, सिख लेहु हमारी ।
 काल कलप व्यापै नहीं, इहै नफा तुम्हारी ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३३ ॥

कर गुजरान गरीबी से, मगरूरी किस पर करता है ॥१॥
 गीदी काया देख भुलाया, दीनन से क्यों डरता है ॥२॥
 जगत पुकारै कूका मारै, हो हो कहि कर हलता है ॥३॥
 रूह जलाली करत हलाली, क्यों दोजख आगी जलता है ॥४॥

स्वप्न सुराजग नाहग पुताका, जनका बकरा चलता है ॥५॥
 जम बदजाती तोड़ै छाती, क्यों नहीं उससे डरता है ॥६॥
 तजि अभिमाना सीखा ज्ञाना, सतगुरु संगत तरता है ॥७॥
 कहै कबीर कोई बिरला हंसा, जीवत ही जो मरता है ॥८॥

॥ शब्द ३४ ॥

अब मैं भूला रे भाई, मेरे सतगुरु जुगत लखाई ॥टेक॥
 किरिया कर्म अचार मैं छाड़ा, छाड़ा तिरथ का न्हाना ।
 सगरी दुनिया भई सयानी, मैं ही इक बौराना ॥१॥
 ना मैं जानूँ सेव बंदगी, ना मैं घंट बजाई ।
 ना मैं मूरत धरी सिंघासन, ना मैं पुहुप चढ़ाई ॥२॥
 जौ यह मूरत मुख से बोलै, कर असनान न्हावाई ।
 पाँच टका हौं देत ठठेरे, एकहि हौं लै आई ॥ ३ ॥
 ना हरि रीझै जप तप कीन्हे, ना काया के जारे ।
 ना हरि रीझै धोती छाड़े, ना पाँचो के मारे ॥ ४ ॥

दाया राखि धरम को पालै, जग से रहै उदासी ।
अपनासा जिव सब का जानै, ताहि मिलै अविनासी ॥५॥
सहै कुसबद बाद को त्यागै, छाड़ै गर्व गुमाना ।
सत्तनाम ताही को मिलिहै, कहै कबीर सुजाना ॥६॥

॥ शब्द ३५ ॥

साधो भजन भेद है न्यारा ॥टेक॥
का माला मुद्रा पहिरे, चंदन घसे लिलारा ।
मूँड़ मुड़ाये सिर जटा रखाये, अंग लगाये छारा ॥१॥
का पानी पाहन के पूजे, कंदमूल फरहारा ।
कहा नेम तीरथ व्रत कीन्हें, जो नहिं तत्त्व बिचारा ॥२॥
का गाये का पढ़ि दिखलाये, का भरमे संसारा ।
का संध्या तरपन के कीन्हें, का पट कर्म अचारा ॥३॥
जैसे बधिक ओट टाटी के, हाथ लिये बिख' चारा ।
ज्यों बक्र ध्यान धरै षट भीतर, अपने अंग विकारा ॥४॥
दै परचे स्वामी हूँ बैठे, करैं बिषय व्योहारा ।
ज्ञान ध्यान को मरम न जानैं, बाद करैं निःकारा ॥५॥
फूँके कान कुमति अपने से, बोझि लियो सिर भारा ।
बिन सतगुरु गुरु केतिक बहिगे, लाभ लहर की धारा ॥६॥
गहिर गँभीर पार नहिं पावै, खंड अखंड से न्यारा ।
दृष्टि अपार चलब को सहजै, कटै भरम कै जारा ॥७॥
निर्मल दृष्टि आत्मा जा की, साहब नाम अधारा ।
कहै कबीर तेही जन आवै, मै तैं तजै विकारा ॥८॥

॥ शब्द ३६ ॥

साधो करता कर्म तैं न्यारा ।
आवै न जावै मरै नहिं जीवै, ता को करै बिचारा ॥१॥

(१) विशिष का अपभ्रंश जिसका अर्थ "बान" है। (२) जाल।

राम को पिता जो जसरथ कहिये, जसरथ कैने जाया ।
 जसरथ पिता राम को दादा, कहे कहाँ तँ आया ॥२॥
 राधा रुकमिन किसन की रानी, किसन दोऊ को मीरा ।
 सोलह सहस गोपी उन भोगी, वह भयो काम को कीरा ॥ ३॥
 बासुदेव पितु मात देवकी, नंद महर घरि आयो ।
 ता को करता कैसे कहिये, (जो) करमन हाथ बिकायो ॥४॥
 जा के धरनि गगन है सहसै', ता को सकल पसारा ।
 अनहद नाद सबद धुनि जाके, सोई खसम हमारा ॥५॥
 सतगुरु सबद हृदय दृढ़ राखो, करहु विवेक विचारा ।

राम को पिता जो जसरथ कहिये, जसरथ कैने जाया ।
 जसरथ पिता राम को दादा, कहे कहाँ तँ आया ॥२॥
 राधा रुकमिन किसन की रानी, किसन दोऊ को मीरा ।
 सोलह सहस गोपी उन भोगी, वह भयो काम को कीरा ॥ ३॥
 बासुदेव पितु मात देवकी, नंद महर घरि आयो ।
 ता को करता कैसे कहिये, (जो) करमन हाथ बिकायो ॥४॥
 जा के धरनि गगन है सहसै', ता को सकल पसारा ।
 अनहद नाद सबद धुनि जाके, सोई खसम हमारा ॥५॥
 सतगुरु सबद हृदय दृढ़ राखो, करहु विवेक विचारा ।

सतगुरु महिमा

॥ शब्द १ ॥

जग मैं गुरु समान नहिं दाता ॥ टेक ॥

यस्तु अगोचर दइ सतगुरु ने, भली यताई बाटा ।
 काम क्रोध कैद करि राखे, लाभ को लीन्ह्यो नाथा ॥१॥
 काल्ह करै सो हाल हि करि ले, फिर न मिलै यह साथी ।
 चौरासी मैं जाइ पड़ोगे, भुगतो दिन और राता ॥२॥
 सबद पुकार पुकार कहन है, करि ले संतन साथी ।
 सुमिर बंदगी कर साहिब की, काल नवावै माथा ॥३॥
 कहै कबीर सुनो हो धर्मन, मानो बचन हमारा ।
 परदा खोलि मिलो सतगुरु से, आवो लोक दयारा ॥४॥

॥ शब्द २ ॥

साधो सो सतगुरु मोहिं भावै ।

सत्त नाम का भरि भरि प्याला, आप पिवै मोहिं प्यावै ॥१॥
 मेले जाय न महँत कहावै, पूजा भेंट न लावै ।
 परदा दूरि करै आँखिन को, निज दरसन दिखलावै ॥२॥
 जा के दरसन साहिब दरसै, अनहद सबद मुनावै ।
 माया के सुख दुख करि जानै, संग न सुपन चलावै ॥३॥
 निसि दिन सतसंगत मैं राचै, सबद मैं सुरत समावै ।
 कहै कबीर ता को भय नाहीं, निर्भय पद परसावै ॥४॥

॥ शब्द ३ ॥

बलिहारी जाऊँ मैं सतगुरु के, मेरा दरस करत भ्रम भागा ॥१॥
 धर्मराय से तिनुका तोड़ा, जम दुसमन से दूर किया ॥२॥
 सबद पान परवाना दीया, काग करम तजि हंस किया ॥३॥

गुरु की मिहर से अगम निगम लखि, बिन गुरु कोई न मुक्त भया ॥५॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, आवागवन से राखि लिया ॥५॥

॥ दोहा ॥

कबीर फकीरी अजब है, जो गुरु मिलै फकीर ।
संसय सोक निवारि के, निरमल करै सरीर ॥

॥ शब्द ४ ॥

संत जन करत साहिबी तन मैं ॥ टेक ॥
पाँच पचीस फौज यह मन की, खेलै भीतर तन मैं ।
सतगुरु सबद से मुरचा काटो, बैठो जुगत के घर मैं ॥१॥
बंक्रनाल का धावा करिके, चढ़ि गये सूर गगन मैं ।
अष्ट कँवल दल फूल रह्यो है, परखे तत्त नजर मैं ॥२॥
पच्छिम दिसि की खिड़की खोला, मन रहै प्रेम मगन मैं ।
काम क्रोध मद लोभ निवारो, लहरि लेहु या तन मैं ॥३॥
संख घंट सहनाई बाजै, सोभा सिंध महल मैं ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, अजर साहिब लख घट मैं ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

जब कोइ रतन पारखी पैहो, हीरा खोल भँजैहो ॥ टेक ॥
तन कै तुला सुरत कै पलरा, मन कै सेर बनैहो ।
मासा पाँच पचीस रती को, तोला तीन चढ़ैहो ॥१॥
अगम अगोचर वस्तु गुरु की, लै सराफ पै जैहो ।
जहँ देख्यो संतन की महिमा, तहवाँ खोलि भँजैहो ॥२॥
पाँच चोर मिलि घुसे महल मैं, इन से वस्तु छिपैहो ।
जम राजा के कठिन दूत हैं, उन से आप बचैहो ॥३॥
दया धरम से पार उतरिहो, सहज परम पद पैहो ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, हीरा गाँठि लगैहो ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

साचे सतगुरु की बलिहारो, जिन यह कुंजी कुफल उघारो ॥१॥
 नख सिख साहिब है भरपूर, सो साहिब क्यों कहिये दूर ॥२॥
 सतगुरु दया अमीर सभों जै, तन मन धन सब अर्पन कीजै ॥३॥
 कहै कबीर संत सुख दाई, सुख सागर इस्थिर घर पाई ॥४॥

॥ शब्द ७ ॥

वारी जाऊँ मैं सतगुरु के, मेरा किया भरम सब दूर ॥टेक॥
 चंद चढ़ा कुल आलम देखै, मैं देखूँ भ्रम दूर ॥१॥
 हुआ प्रकास आस गइ दूजी, उगिया निरमल नूर ॥२॥
 माया मोह तिमिर सब नासा, पाया हाल हजूर ॥३॥
 बिषय बिकार लार' है जेता, जारि किया सब धूर ॥४॥
 पिया पियाला सुधि बुधि बिसरी, हो गया चकनाचूर ॥५॥
 हूआ अमर मरै नहिँ कबहूँ, पाया जीवन मूर ॥६॥
 बंधन कटा छूटिया जम से, किया दरस मंजूर ॥७॥
 ममता गई भई उर समता, दुख सुख डारा दूर ॥८॥
 समझे बनै कहे नहिँ आवै, भयो आनंद भरपूर ॥९॥
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, बजिया निरमल तूर ॥१०॥

॥ शब्द ८ ॥

सतगुरु चीन्हे रे भाई ।

सत्तनाम बिन सब नर बूढ़े, नरक पड़ी चतुराई ॥१॥
 बेद पुरान भागवत गीता, इन को सबै दृढ़ावै ।
 जा को जनम सुफल रे प्राणी, सो पूरा गुरु पावै ॥२॥
 बहुत गुरु संसार कहावै, मंत्र देत हैं काना ।
 उपजै बिनसै या भौसागर, मरम न काहू जाना ॥३॥

(१) साथ—एक लिपि में 'रार' (भगड़ा) है ।

सतगुरु एक जगत में गुरु हैं, सो भव से कड़िहारा ।
कहै कबीर जगत के गुरुवा, मरि मरि लैं औतारा ॥४॥
॥ शब्द ६ ॥

सतगुरु साह संत सौदागर, तहँ मैं चलि के जाऊँ जी ॥टेक
मन की मुहर धरौँ गुरु आगे, ज्ञान कै घोड़ा लाऊँ जी ।
सहज पलान चित्त कै चाबुक, अलख लगाम लगाऊँ जी ॥१
बिबेक बिचार भरे तिर' तरकस, सुरत कमान चढ़ाऊँ जी ।
धीर गँभीर खड्ग लिये दल मल, माया कैकोट ढहाऊँ जी ॥२
रिपु कै दल मैं सहजहि रौँदौँ, आनँद तबल बजाऊँ जी ।
कहै कबीर मेरे सिर पर साहिव, ताको सीस नवाऊँ जी ॥३
॥ शब्द १० ॥

सुन सतगुरुकी बानी ले ।
ताहि चीन्ह हम भये वैरागी, परिहर कुल की कानी ले ॥१
तब हम बहुतक दिन लैं अटके, सुन सुन बात बिरानी ले ।
अब कुछ समझ पड़ी अंतरगत, आदि कथा परमानी ले ॥२
मनमति गई प्रगट भइ सम गति, रमता से रुचि मानी ले ।
लालच लोभ मोह ममता की, मिट गइ ऐँचा तानी ले ॥३॥
चंचल तैं मन निरुचल कीन्हा, सुरत निरत ठहरानी ले ।
कहै कबीर दया सतगुरु तैं, लखी अटल रजधानी ले ॥४॥
॥ शब्द ११ ॥

हमरे सत्तनाम धन खेती ॥ टेक ॥
मन कै बैल सुरत हरवाहा, जय चाहै तय जोती ॥१॥
सत्तनाम का बीज बोवाया, उपजै हीरा मोती ॥२॥
उन खेतन मैं नफा बहुत है, संतन लूटा सैंती ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, उलटि पलटि नर जोती ॥४॥

॥ शब्द १२ ॥

सतगुरु सोई दया करि दीन्हा, तातैं अनचिन्हार मैं चीन्हा ॥
 बिन पग चलना बिन पर उड़ना, बिन चुंच का चुगना ।
 बिना नैन का देखन पेखन, बिन सरवन का सुनना ॥१॥
 चंद न सूर दिवस नहिं रजनी, तहाँ सुरत लौ लाई ।
 बिन अन्न अमृत रस भोजन, बिन जल तृषा बुझाई ॥२॥
 जहाँ हरप तहें पूरन सुख है, यह सुख का से कहना ।
 कहै कबीर बलबल सतगुरु की, धन्य सिष्य का लहना ॥३॥

॥ शब्द १३ ॥

मेरे सतगुरु पकड़ी बाँह, नहीं तो मैं बहि जाता ॥टेक॥
 करम काटि कोइला किया, ब्रम्ह अग्नि परिचार ।
 लोभ मोह भ्रम जारिया, सतगुरु बड़े दयार ॥ १ ॥
 कागा से हंसा किया, जाति बरन कुल खोय ।
 दया दृष्टि से सहज सब, पातक डारे धोय ॥ २ ॥
 अज्ञानी भटकत फिरै, जाति बरन अभिमान ।
 सतगुरु सबद सुनाइया, भनक पड़ी मेरे कान ॥ ३ ॥
 माया ममता तजि दई, धिपया नाहिं समाय ।
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, हृद तजि बेहद जाय ॥४॥

॥ शब्द १४ ॥

सब जग रोगिया हो, जिन सतगुरु बैद न खोजा ॥१॥
 सीखा सीखी गुरुमुख हुआ, किया न तत्त बिचारा ॥२॥
 गुरु चेला दोउन के सिर पै, जम मारै पैजारा ॥ ३ ॥

भूठेगुरु को सब कोइ पूजै, साचे ना पतियाई ॥ ४ ॥
अंधे बाँह गही अंधे की, मारग कैान दिखाई ॥ ५ ॥

॥ शब्द १५ ॥

गुरु रँग लागा सत रँग लागा, मेरे मन का संसय भागा ॥ टेक
जब हम रहली हठिल' दिवानी, तब पिया मुखहु न बोले ॥
जब दासी भइं खाक बराबर, साहिव अंतर खोले ॥ १ ॥
साचे मन तैं साहिव नेरे, भूठे मन तैं भागा ।
भक्त जनन अस साहिव मिलनो, [जस] कंचन संग सुहागा । २ ॥
लोक लाज कुल की मर्जादा, तोरि दियो जस धागा ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, भाग हमारा जागा ॥ ३ ॥

॥ शब्द १६ ॥

जाकै रहिन अपार जगत में, सो गुरु नाम पियारा हो ॥ टेक
जैसे पुरइन' रहि जल भीतर, जलहि में करत पसारा हो ।
वा के पानी पत्र न लागै, ठरकि चलै जस पारा हो ॥ १ ॥
जैसे सती चढ़ै सत ऊपर, स्वामी बचन न टारा हो ।
आप तरै औरन को तारै, तारै कुल परिवारा हो ॥ २ ॥
जैसे सूर चढ़ै रन ऊपर, पाछे पग नहिं डारा हो ।
वा की सुरत रहै लड़ने में, प्रेम मगन ललकारा हो ॥ ३ ॥
भवसागर इक नदी अगम है, लख चौरासी धारा हो ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, बिरले उतरे पारा हो ॥ ४ ॥

॥ शब्द १७ ॥

धन सतगुरुजिन दियो उपदेश, भव बूढ़त गहि राखे केस ॥ १ ॥
साकित से गुरु अपना किया, सत्तनाम सुमिरन को दिया ॥ २ ॥
जाति बरन कुल करम नसाया, साध मिले जब साध कहाया ॥ ३ ॥

पारस परसे कंचन होई, लोहा वाहि कहै नहिं कोई ॥४॥
 पारस कै गुन देखौ आय, लोहा महंगे मोल बिकाय ॥५॥
 स्वाँति बूँद कदली में परै, रूप बरन कछु औरहि धरै ॥६॥
 नाम कपूर वासना' होई, कदली वा को कहै न कोई ॥७॥
 निसि दिन सुमिरौ एकै नाम, जा सुमिरे तेरो भट हूँ कामाक्षी
 कहै कबीर यह साचो खेल, फूल तेल मिलि भयो फुलेल ॥८॥

॥ शब्द १८ ॥

सतगुरु सबद सहाई ॥ टेक ॥
 निकटि गये' तन रोग न व्यापै, पाप ताप मिटि जाई ।
 अठवन पठवन दोठि न लागै, उलटे तेहि धरि खाई ॥१॥
 मारन मोहन उचाटन बसिकरन, मनहिं माहि पछिताई ।
 जादू जंतर जुक्ति भुक्ति नहिं, लागे सबद के वान ठहाई ॥२॥
 ओम्हा डाइनि डरसे डरपै, जहर जूड़' हो जाई ।
 बिषधर' मन में करि पछितावा, बहुरि निकट नहिं आई ॥३॥
 जहँ तक देवी काली के गुन, संत चरन लौ लाई ।
 कह कबीर काटो जम फंदा, सुकृतो लाख दुहाई ॥ ४ ॥

॥ शब्द १९ ॥

पिया मेरा मिलिया सत्त गियानी ॥ टेक ॥
 सब में व्यापक सब से न्यारा, ऐसा अंतरजामी ।
 सहज सिंगार प्रेम का चोला, सुरत निरत भरि आनी ॥१॥

(१) सुगंधित । (२) ठंढा । (३) साँप ।

सीलसंतोष पहिरि दोउ सत गुन, हो रहि मगन दिवानी ।
कुमति जराइ करौँ मैँ कोइला, बढ़ी प्रेम रस बानी ॥२॥
ऐसा पिय हम कबहु न देखा, सूरत देखि लुभानी ।
कहै कबीर मिला गुरु पूरा, तन की तपन बुझानी ॥३॥

॥ शब्द २० ॥

अवधू कुदरत की गति न्यारी ।
रंक निवाज करै वह राजा, भूपति करै भिखारी ॥ १ ॥
जा से लैंग गाछ फर लागै, चंदन फूलन फूला ।
मच्छ सिकारी रमै जंगल मैँ, सिंह समुंदर झूला ॥ २ ॥
रैंड रूख भयौ मलियागिरि, चहुँ दिसि फूटै वामा ।
तीनि लोक ब्रह्मंड खंड मैँ, अंधरा देखि तमासा ॥ ३ ॥
पँगुला मेरु सुमेरु उड़ावै, त्रिभुवन माहीं डोलै ।
गूँगा ज्ञान विज्ञान प्रकासै, अनहद बानी बोलै ॥ ४ ॥
पतालै बाँध अकासै पठावै, सेस स्वर्ग पर राजै ॥
कह कबीर समरथ है स्वामी, जो कछु करै सो छाजै ॥५॥

॥ शब्द २१ ॥

है सब मैँसब ही तैं न्यारा ॥ टंक ॥
जीव जंतु जलथलसब ही मैँ, सबद बियापन बोलन हारा ॥१॥
सबके निकट दूर सब ही तैं, जिन जैसा मन कान्ह विचारा ॥२॥
सार सबद को जो जन पावै, सो नहिँ करन नेम आचारा ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सबद गहै सो हंस हमारा ॥४॥

॥ शब्द २२ ॥

होइ है कस नाम बिना निस्नारा ॥ टेक ॥
देवी देवा भूतउ पूजा, आत्म नाम बिसारा ।
बेस्या कै पुत्र पितु कान से कहिहै, ऐसा ही संसारा ॥१॥

कंचन मेरु सुमेरु लैं द्रव्य, दिजै दान अपारा ।
 जो जस देइ सो तैसे पावै, मुक्ति भेद है न्यारा ॥२॥
 नामहि नौका या जग माहीं, जा चढ़ि उतरौ पारा ।
 ज्ञान की कड़िया सतगुरु कर ले, खेड़ लगा दें पारा ॥३॥
 सतगुरु चान्हि चरन चित लावो, उतरौ भौजल पारा ।
 नाम बराबर और न दूजा, कहै कबीर पुकारा ॥४॥

॥ शब्द २३ ॥

अँखियाँ लागि रहन दो साधो, हिरदे नाम सम्हारा ।
 रीझै बूझै साहिब तेरा, कौन पड़ा है द्वारा ॥ १ ॥
 जम जालिम के सब डर मिटिगे, जा दिन दृष्टि निहारा ।
 जब सतगुरु ने किरपा कीन्हो, लीन्हो आप उबारा ॥२॥
 लख चौरासी बंधन छूटे, सदा रहै गुरु संगी ।
 प्रेम पियाला हर दम पीवै, सदा मस्त बौरंगी ॥३॥
 जब लग वस्तु पिछाने नाहीं, तब लग झूठी आसा ।
 झिलमिलि जाति लखै कोइ गुरुमुख, उनमुनि घर के बासा ॥
 सब को दृष्टि पड़ै अविनासी, बिरला संत पिछानै ।
 कहै कबीर यह भर्म किवाड़ी, जो खोलै सो जानै ॥५॥

॥ शब्द २४ ॥

मन मैल न जाय कैसे कै धोवौ ॥ टंक ॥
 गाँव गड़हिया में गाढ़' पानी, धुबिया रसिया गुदरी पुरानी ॥१॥
 बालू रेहिया साबुन घोट, वही बयार कछु मिलै न ओट ॥२॥

(१) गदला ।

सतगुरु घटिया सौँदन होई, साधू संगति मिलि ले धोई ॥३॥
कहै कबीर या गुदरी के भाग, मिलि गैल सतगुरु छुटि गैलें दाग ॥४॥

॥ शब्द २१ ॥

कोइ कुच्छ कहै कोइ कुच्छ कहै, हम अटके हैं जहँ अटके हैं १
सुरत कमल पर अमल किया, महबूब के नामसे मटके हैं २
संसार विचार के छोड़ दिया, हम इसी बात पै सटके हैं ३
दास कबीर के भूलने में, सब पंडित काजी फटके हैं ॥४॥

चितावनी ।

॥ शब्द १ ॥

परमात्म गुरु निकट विराजै, जागु जागु मन मेरे ॥टेक॥
धाई के सतगुरु चरनन लागौ, काल खड़ा सिर तेरे ।
छिन छिन पल पल सबाहि सँघारै, बहु विधि देत न देरे ॥१॥
जुगन जुगन तोहि सोवन बीता, अजहुँ न जागु सवेरे ।
काम क्रोध मद लाभ फंद नजि, छिमा दया दिल हेरे ॥२॥
भाई बंधु कुटुम्ब कबीला, सब स्वारथ के चरे ।
जब जम जाल में आनि पकरि है, कोइ न संग चले रे ॥३॥
भौसागर बाँकी है धारा, लख चौरासी फेरे ।
कहै कबीर सुनो हो साधो, जग से किये निवेरे ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

जाग पियारी अब का सोवै, रैन गइ दिन काहे को खोवै ॥१॥
जिन जागा तिन मानिक पाया, तँ चोरी सब सोइ गँवाया ॥२॥

(१) टेंही, कड़ी ।

पिय नेरे चतुर तु मृग्य नागी, कबहुँ न पिया की सेज सँवारी ॥३॥
 तँवौरी वौरापन कीन्हो, भर जौवन पिय अपन न चीन्हो ॥४॥
 जागु देखु पिय सेजन नेरे, तोहि छाड़ि उठि गये सबेरे ॥५॥
 कहै कबीर सोई धन जागै, सबद्वान उर अंतर लागे ॥६॥

॥ शब्द ३ ॥

जनन बिन मिरगन खेत उजाड़े ॥ टेक ॥
 पाँच बिरग पञ्चीस मिरगनी, तिन में तीन चितारे' ।
 अपने अपने रस के मोली, चुगते न्यारे न्यारे ॥ १ ॥
 पाँच डार मृदल' की भाई, उतरे खेत मँभारे ।
 हा हा करत बाल ले भागे, हरि रहे रखवारे ॥ २ ॥
 सुनियो रे हम कहत जवन की ऊँचे हाँक हँकारे ।
 यह नर देह बहरि नहिँ पैहो, काहे न रहत सँभारे ॥३॥
 तन कर खेती मन कर बाड़ी, मूल सुरत रखवारे ।
 ज्ञान वान और ध्यान धनुष करि, क्यों नहिँ लेत सँघारे'४
 सार सबद बन्दूख सुरत धरि, मारे तीन चितारे ।
 कहत कबीर गुना भाई साधो, उबरे' खेत तिहारे ॥५॥

॥ शब्द ४ ॥

सृष्टि गई जहँ डाय, दृष्टि करि देखि ले ॥ टेक ॥
 चीन्हो करो विचार, दयानिध कहाँ बिराजै ।
 कहाँ पुरुष के देस, कहाँ बैठे बिलगाजै ॥
 जब लगि नैन न देखिये, तब लगि हिय न जुड़ाय ।
 जल बिन मीन कथं बिन बिरहिन, तलफि तलफि जिय जाय १

(१) चितकरे, चीतक । (२) तोना । (३) मार लेना । (४) बच गये ।

(५) उगाय ।

बाढ़े बिरह बिरोग, रोग काहू ना चीन्हा ।
घर घर बाढ़े बैद, रोग अधिका रचि दीन्हा ॥
बिरह बिरोग कैसे मिटै, कैसे तपन बुझाय ।
बैद मिलै जय औषदी, जिय कै भरम नसाय ॥ २ ॥
औरौ कहूँ बनाय सुनो, परपंच कै फंदा ।
पूजै भूत पिसाच, काहूँ घर करै अनंदा ॥
एकादसी निर्जल रहै, भगना सुनै पुगान ।
बकरा माँसि माँस कै भोजन, ऐसे चतुर सुजान ॥ ३ ॥
अरे निपट चंडाल, महा मापी अपराधी ।
बिन दया अज्ञान, काया काहे नहि साधी ॥
तोहिँ अस निगुरा बहुत फिरत हँ, मन में करै गुमाना ।
कहै कबीर जो सबद से चिछुड़ै, ता को नरक निदाना ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

चार दिन अपना नौबत चले बजाइ ॥ टेक ॥
उतानै खटिया गड़िले माँटिया, संग न कछु ले जाइ ॥१॥
देहरी बैठी मेहरी रोचै, द्वारे लौँ संग माइ ॥ २ ॥
मरघट लौँ सब लोग कुटुंब मिलि, हंस अकेला जाइ ॥३॥
बहिसुत बहि बिन बहि पुर पाटन, बहूरि न देखै आइ ॥४॥
कहत कबीर भजन बिन बंदे, जनम अकारण जाइ ॥५॥

॥ शब्द ६ ॥

कहा नर गरबम' योगी बान ।
मन दस नाज टका चार गाँठी, ऐंडो टेढ़ा जात ॥१॥

(१) शेखी करता है ।

बहुत प्रताप गाँव से पाये, दुइये टका बरात' ।
 दिवस चारि कै करो साहिबी, जैसे बन हर पात' ॥२॥
 ना कोऊ लै आयो यह धन, ना कोऊ लै जात ।
 रावनहूँ से अधिक छत्रपति, छिन में गये बिलात ॥३॥
 मैं उन संत सदा धिर पूजौं, जो सतनाम जपात ।
 जिन पर कृपा करत हैं सतगुरु, ते सतसंग मिलात ॥४॥
 मात पिता बनिना सुत संपनि, अँत न चलत सँगात ।
 कहत कबीर संग कर सनगुरु, जनम अकारथ जान ॥५॥

॥ शब्द ७ ॥

रतन जतन करि प्रेम कै तत धरि,
 सतगुरु इमरित' नाम, जुगत कै राखव रे ॥१॥
 बाया घर रहलौं बबुइ कहैलौं,
 सैयाँ घर चतुर सयान, चेतब घरवा आपन रै ॥२॥
 खेलत रहलौं मैं सुपली मौनिया,
 औचक आये लेनिहार, चलब केसिया' झारि रे ॥३॥
 एक तो अंधेरी राती, चोरवा मुसल थाती',
 सैयाँ कै बान कुबान, सुतल गोड़वा तानि रे ॥४॥
 चुनि चुनि कलियाँ मैं सेजिया बिछौलौं,
 बिना रे पुरुषवा कै नारि, भँखैले दिनवा राति रे ॥५॥
 ताल झुराइ गैले फूल कुम्हिलाय गैले,
 ऊड़त हंसा अकेल, कोई नहिँ देखल रे ॥ ६ ॥

(१) पूँजी । (२) हरा पत्ता । (३) अमृत । (४) बालकों के खेलने के नन्हे
 नन्हे सूप मौनी । (५) बाल ।

अब का भँखैलु नारि, बैठलु मन मारि,

यह बाटे मोतिया हेराल' रे ॥ ७ ॥

दास कबीर इहै गावै निरगुनवाँ,

अब की उहवाँ जाय, तो फिरि नहिँ आउय रे ॥८॥

॥ शब्द ८ ॥

मेर बनिजरवा लादे जाय, मैं तो देखहु न पौल्यै ॥ टेक

करम कै सेर धरम कै पलरा, बेल पचीस लदाय ।

भूल गई है सुमारग पैड़ा, कोइ नहिँ देत बताय ॥ १ ॥

माया पापिन गर्बिया, विपति न कहिये रोय ।

जो माया होती नहीं, विपति कहाँ से होय ॥२॥

माया काली नागिनी, जिन डसिया संसार ।

एक डस्यौ ना साध जन, जिन के नाम अधार ॥३॥

मंगन से क्या माँगिये, बिन माँगे जो देय ।

कहै कबीर मैं हौं वाही को, होनी होय सो होय ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

खलक सब रैन का सपना । समझ मन कोइ नहीं अपना ॥१॥

कठिन है मोह की धारा । बहा सब जात संसारा ॥२॥

घड़ा ज्येँ नीर का फूटा । पत्र ज्येँ डार से टूटा ॥३॥

ऐसे नर जात जिंदगानी । अजहुँ तौ चेत अभिमानी ॥४॥

निरखि मत भूल तन गोरा । जगत मैं जीवना थोरा ॥५॥

तजो मद लाभ चतुराई । रहे निःसंक जग माहीं ॥६॥

सजन परिवार सुत दारा । सभी इक रोज है न्यारा ॥७॥

निकसि जय प्रान जावैगे । कोइ नहिँ काम आवैगे ॥८॥

सदा जिनि जान यह देही । लगा ले नाग से नेही ॥९॥

कहत कबीर अबिनासी । लिये जम काल की फाँसी ॥१०॥

॥ शब्द १० ॥

हिरवा भुलाय ससुरे जालू बारी धनियाँ ॥ टेक ॥
 कौने तन तारा कौने मन है, कौने वेद तुम जनियाँ ।
 कौन पुरुष के ध्यान धरतु है, कौन नाम निसनियाँ ॥१॥
 काया तन ओंकार मन है, सूच्छम वेद हम जनियाँ ।
 सत्तपुरुष के ध्यान धरतु है, और सतनाम निसनियाँ ॥२॥
 ई मत जानो हिरवा जिरवा, बनिया हाट विकनियाँ ।
 ई हिरवा अनमोल रतन है, अगहन देम तैं अनियाँ ॥३॥
 आयौ चोर सबन के मुसलस, राजा रैयन रनियाँ ।
 लाखन में कोई बिरले बचिगे, जिनके अलख लखनियाँ ॥४॥
 काया नगर इक अजब वृच्छ है, साखा पत्र तेहि भरियाँ
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, पावै बिरले टिकनियाँ ॥५॥

॥ शब्द ११ ॥

दुनिया भासर भूमर अरुभी ॥ टेक ॥
 अपने सुन कै मुँड़न करावै, लूरा लगन न पावै ।
 अजया' कै चिंगना धरि मारै, तनिकौ दया न आवै ॥१॥
 लैके तेगा चला बाँकुरा', अजया कै सिर काटा ।
 पूजा रही सो मालिन लै गइ, कूकुर मूरत चाटा ॥ २ ॥
 माटी कै चौतरा बनाइन, कुत्ता मुत मुत जाई ।
 जो देउता में सक्ती होती, कुत्ता धरि धरि खाई ॥ ३ ॥
 गोबर लैके गौर बनाइन, पूजैं लाग लुगाई ।
 यह बोलै वह बोल न जाने, पानी में डुबकाई ॥ ४ ॥
 सोने की इक मुरति बनाइन, पूजन को सब धाई ।
 बिपति पड़े गहने' धरि खाई, भल कान्हो सेवकाई ॥५॥

(१) बधिया किया हुआ बकरा । (२) बहादुर । (३) गिरवी ।

देखी जी कौ खस्सी भेड़ा, पीरन कौ नौ नेजा ।
 उन साहिब को कुछ भी नाहीं, बाँह पकरि जिन भेजा ॥६॥
 निरगुन आगे सरगुन नाचै, बाजै सोहँग तूरा ।
 चेला के पाँव गुरू जी लागै, यही अचम्भा पूरा ॥ ७ ॥
 जाति बरन दूनों हम देखा, झूठी तन की आसा ।
 तीनों लोक नरक में बूढ़े, बाम्हन के बिस्वासा ॥ ८ ॥
 रही एक की भइ अनेक की, बेस्या सहस भतारी ।
 कहै कबीर केहि के संग जरिहौ, बहुत पुरुष की नारी ॥९॥

॥ शब्द १२ ॥

साधो ई मुर्दन कै गाँव ॥ टेक ॥
 पीर मरे पैगम्बर मरिगे, मरिगे जिन्दा जागी ।
 राजा मरिगे परजा मरिगे, मरिगे, बैद्य औ रोगी ॥१॥
 चाँदौ मरिहै सुर्जा मरिहै, मरिहै धरनि अकासा ।
 चौदह भुवन चौधरी मरिहै, इनहूँ कै का आसा ॥२॥
 नौ हू मरिगे दस हू मरिगे, मरिगे सहस अठासी ।
 तैंतिस कोट देवता मरिगे, पारिगे काल की फाँसी ॥३॥
 नाम अनाम रहै जो सदही, दूजा तत्त न होई ।
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, भटकि मरै मत कोई ॥४॥

॥ शब्द १३ ॥

अब कहूँ चले अकेले मीसा, उठि क्यों करहु न घर की चेता ।१।
 खीर खाँड़ घृत पिंड सँवारा, सो तन लै बाहर करि डारा ।२।
 जेहि सिर रांच रचि बाँधिसु पागा, सो सिर रतन बिडारै कागा ॥३॥
 हाड़ जरै जस सूखी लकरी, केस जरै जस तन की कूरी ।४।
 आवत संग न जात सँघाती, कहा भये दल बाँधे हाथी ॥५॥

(१) साथी, संगी ।

माया कै रस लेन न पाया, अंतर जम बिलार होइ धाया ॥६॥
कहै कबीर नर अजहुँ न जागा, जम कौ मुँगरा बरसन लागा ।७।

॥ शब्द १४ ॥

काया बैरी चलत प्रान काहे रोई ॥ टेक ॥

काया पाय बहुत सुख कीन्हो, नित उठि मलि मलि धोई ।
सो तन छिया छार होइ जैहै, नाम न लेहै कोई ॥ १ ॥
कहत प्रान सुन काया बैरी, मोर तोर संग न होई ।
तोहि अस भित्र बहुत हम त्यागा, संग न लीन्हा कोई ॥२॥
ऊसर खेत कै कुसा मँगाये, चाँचर चवर' कै पानी ।
जीवन ब्रम्ह को कोई न पूजै, मुरदा कै मेहमानी ॥३॥
सिव सनकादि आदि ब्रम्हादिक, सेस सहस मुख होई ।
जो जो जनम लिये वसुधा' में, थिर न रहा है कोई ॥४॥
पाप पुन्य हैं जनम सँघाती, समुझ देखु नर लोई ।
कहत कबीर अभिअंतर की गति, जानत विरले कोई ॥५॥

॥ शब्द १५ ॥

जा दिन मन पंछी उड़ि जैहैं ॥ टेक ॥

ता दिन तेरे तन तरवर के, सबै पात भरि जैहैं ॥१॥
या देही को गर्व न कीजै, स्यार काग गिध खैहैं ॥२॥
तन गति तीन बिष्ट किर्म हूँ, नातर खाक उड़ैहैं ॥३॥
कहँ वह नैन कहाँ वह सोभा, कहँ वह रूप दिखैहैं ॥४॥

(१) परती ज़मीन की छिछली तलैया । (२) पृथ्वी ।

(३) मरने पर शरीर की तीन गति होती है—(१) लुटंत अर्थात् जानवरों का आहार होकर बिष्टा हो जाना, (२) गड़ंत अर्थात् क़बर में गड़ कर कीड़े पड़ जाना, (३) फुकंत अर्थात् जलकर राख हो जाना ।

जिन लोगन तैं नेह करतु है, तेई देखि चिनैहैं ॥ ५ ॥
 घर के कहत सवेरे काढ़ो, भून होय धरि खैहैं ॥ ६ ॥
 जिन पूतन को बहु प्रतिपाल्यो, देवी देव मनैहैं ॥ ७ ॥
 तेइ लै बाँस दियो खोपरी मैं, सीस फोरि बिखरैहैं ॥ ८ ॥
 अजहूँ मूढ़ करै सतसंगत, संतन मैं कछु पैहै ॥ ९ ॥
 कहै कबीर सुनो भाइ साधो, आवागवन नसैहै ॥ १० ॥

॥ शब्द १६ ॥

आपन काहे न सँवारै काजा ॥ टेक ॥
 ना गुरु भगति साध की संगत, करत अधम निर्लाजा ।
 मानुष जनम फेर नहिँ पैहौ, सब जीवन मैं राजा ॥ १ ॥
 पर नारी प्यारी करि जानै, सो नर नरक समाजा ।
 जिनके पंथ भूलि गे भौँदू, करु चलने कै साजा ॥ २ ॥
 इहाँ नहाँ कोइ मीत तुम्हारा, मात पिता सुत आजा ।
 ये हैं सब मतलब के साथी, काहे करत अकाजा ॥ ३ ॥
 लुट्ट भये पर नाम भजतु हैं, निकसत सुरत अवाजा ।
 टूटी खाट पुराना भिल्लंगा, पड़े रहो दरवाजा ॥ ४ ॥
 ब्रह्मा बिष्णु महेस डिराने, सुनत काल कै गाजा ।
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, चढ़िले नाम जहाजा ॥ ५ ॥

॥ शब्द १७ ॥

जनम तेरो धोखे म बीता जाय ॥ टेक ॥
 माटो कै गौँद हंस बनिजारा, उड़िगे पंछो बोलनहारा ॥ १ ॥
 चार पहर धंधा मैं बीता, रैन गँवाय सुख सोवत खाट ॥ २ ॥
 जस अंजुल जल छीजत देखा, तैसे भरिगे तरवर पान ॥ ३ ॥

(१) इस शब्द को कोई कोई सूरदास जी का बताते हैं पर हम ने इस को तीन लिपियों में जिन में से एक डेढ़ सौ बरस से अधिक पुरानी है कबीर साहिब के नाम से पाया ।

भौसागर में केहि गुहरैवौ, ऐंठो जीभ जम मारै लात ॥४॥
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, फिरि पछितैहौ मलमल हाथ ॥

॥ शब्द १८ ॥

गाफिल मन काहे बिसारत धनी ॥ टेक ॥

पानी के बूंद से काया प्रगट कियो, काया सुघर बनी ।
 यह काया तोरे संग न जैहै, कीरनि रहै बनी ॥ १ ॥
 रामनगर में बाजन बाजत, चादर लाल तनी ।
 मारि मारि मुगदर प्रान निकासत, माथ में भाल' हनी ॥२॥
 धीरे धीरे पग धरो मुसाफिर, सीढ़ी है अधबनी ।
 मन में चिंता क्या करै वारे, ना साहिव से बनी ॥ ३ ॥
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, अब जो समुझ बड़ी ।
 या घर से जब वा घर जैहौ, लिखनी सूझि पड़ी ॥ ४ ॥

॥ शब्द १९ ॥

चेत सवेरे चलना बाट ॥ टेक ॥

मनमालो तन बाग लगाया, चलत मुसाफिर को बिलमाया ।
 बिष के लेडुवा देत खियाई, लूट लीन्ह मारग पर हाट ॥१॥
 तन सराय में मन अरुझाना, भठियारिन के रूप लुभाना ।
 निसि दिन वासे बचि के रहना, सौदा करु सतगुरु की हाट ॥२॥
 मन कै घोड़ा लियो बनाई, सुरत लगाम ताहि पहिराई ।
 जुगति कै एड़ा दियौ लगाई, भौसागर कै चौड़ा पाट ॥३॥
 जलदी चेतौ साहिव सुमिरौ, दसौ द्वार जम घेर लियौ है ।
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, अब का सोवै बिछाये खाट ॥४॥

॥ शब्द २० ॥

नैहर से जियारा फाटि रे ॥ टेक ॥

नैहर नगरी अस कै बिगरो, ठग लागै घर बाट रे ।
 तनिक जियरवा मोर न लागै, तन मन बहुत उचाट रे ॥१॥
 या नगरी में दस दरवाजा, बीच समुंदर पाट रे ।
 कैसे कै पार उतरिहौ सजनी, अगम पंथ कै घाट रे ॥२॥
 अजब तरह का बना तँबूरा, तार लगे सौ साठ रे ।
 खूँटी टूटि तार बिलगाना, कोऊ न पूछत बात रे ॥३॥
 हँस हँस पूछै मातु पिता से, भोरै सासुर जाब रे ।
 जो चाहै सो वोही करिहै, पत वाही के हाथ रे ॥४॥
 न्हाय खोर दुलहिन होय बैठो, जोहै पिय की बाट रे ।
 तनिक घुँघटवा दिखाव सखी री, आज सुहाग की रात रे ॥५॥
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, पिया मिलन की आस रे ।
 भोर होत बंदे याद करोगे, नौंद न आवै खाट रे ॥६॥

॥ शब्द २१ ॥

जनम सिरान भजन कब करिहौ ॥ टेक ॥

गर्भ वास पै भगति कबूल्यौ, बाहर आय भुलान ॥१॥
 बालापन तो खेल गँवायौ, तरुनाई अभिमान ॥२॥
 बृद्ध भये तन काँपन लागा, सिर धुन धुन पछितान ॥३॥
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, जम के हाथ चिकान ॥४॥

॥ शब्द २२ ॥

मेरा दिल सतगुरु से राजी ॥ टेक ॥

नंगे हि आवन नंगे हि जावन, झूठी रचिया बाजी ।
 या दुनिया में जीवन थोरा, गरब करे सो पाजी ॥१॥

(१) नहाय और सज कर । (२) निहारै ।

स्याही गई सपेदी आई, हो गया राज बिराजी ।
 बेद पढ़ते पंडित भूले, कतेब पढ़ते काजी ॥ २ ॥
 सार सबद से सुरत लगाई, मारा रावन' पाजी ।
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, सतपुर नौबत बाजी ॥३॥

॥ शब्द २३ ॥

हमै रे कोइ कातन देइ सिखाइ ॥ टेक ॥
 कात ननदिया! कात जिठनिया, कात परोसिन आइ ।
 पिउनी पाँच पचीस रंग की, हम से कात न जाइ ॥१॥
 ब्रम्हा काता बिसनू काता, नारद काता आइ ।
 बिस्वामित्र वसिष्ठ दोउ काता, तबहुँ न कात सिराइ ॥२॥
 तन के काते का भया, जो मन ही कात न जाइ ।
 टेकुवा साधन जो बनि आवै, महँगे मोल बिकाइ ॥३॥
 बाला काता तरुना काता, बिरधै कात न जाइ ।
 कहै कबीर तीनों पन काता, चरखा धरा उठाइ ॥ ४ ॥

॥ शब्द २४ ॥

चलना है दूर मुसाफिर काहे सोवै रे ॥ टेक ॥
 चेत अचेत नर सोच आवरे, बहुत नींद मत सोवै रे ।
 काम क्रोध मद लोभ मैं फँसिगे, हो हुसियार उमिरि काहे खोवै रे ॥१॥
 सिर पर माया मोह की गठरी, संग दूत तेरे होवै रे ।
 सो गठरी तोरी बीच मैं छिनि गइ, मूढ़ पकरि कहा रोवै रे ॥२॥
 रस्ता तो वह दूरि बिकट है, तजि चलब अकेला होवै रे ।
 संग साथ तेरे कोइ न चलैगा, डगरिया काकै जोवै रे ॥३॥
 नदिया गहरी नाव पुरानी, केहि बिधि पार तू होवै रे ।
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, ब्याजके धोखे मूल मत खोवै रे ॥४॥

॥ शब्द २५ ॥

ससुरे का द्यूहार, अनेखी बहू सीखि ले रे ॥टेक॥
 पिया तुम्हारे रंग बिरंगे, तुम हो नार कुचाल ।
 संग तुम्हारी कैसे निबहै, मूरख मूढ़ गँवार ॥ १ ॥
 इत उत तकना छोड़ि दे बहुवा, अपने महल चढ़ि आव ।
 अंतर भाड़ू देके सजनी, कूड़ा दूर बहाव ॥ २ ॥
 ज्ञान ध्यान का गहना पहिरौ, सुखमन सेज बिछाव ।
 हँसि के प्रीतम आन मिलैंगे, दुबिधा दूर बहाव ॥ ३ ॥
 कहै कबीर सुनो हो बहुवा, सतसंगत को धाव ।
 सार सबद निरवार के रे, अमर लोक चलि आव ॥४॥

॥ शब्द २६ ॥

या जग अंधा मैं केहि समुभावौ ॥ टेक ॥
 इक दुइ होयँ उन्हें समभावौ
 सबही भुलाना पेट के धन्धा (मैं केहि०) ॥१॥
 पानी कै घोड़ा पवन असवरवा ।
 ठरकि परै जस ओस कै बुन्दा (मैं केहि०) ॥२॥
 गहिरी नदिया अगम बहै धरवा ।
 खेवनहारा पड़िगा फंदा (मैं केहि०) ॥३॥
 घर की वस्तु निकट नहि आवत ।
 दियना बारि के हूँदत ग्रंधा (मैं केहि०) ॥४॥
 लागी आग सकल बन जरिगा ।
 बिन गुरुज्ञान भटकिगा बन्दा (मैं केहि०) ॥५॥
 कहै कबीर सुनो भाई साधे ।
 इक दिन जाइ लंगोटी फार बन्दा (मैं केहि०) ॥६॥

॥ शब्द २७ ॥

दुलहिनी तोहि पिय के घर जाना ॥ टेक ॥

काहे रोवो काहे गावो, काहे करत बहाना ॥ १ ॥

काहे पहिरो हरि हरि चुरियाँ, पहिरो नाम कै बाना ॥ २ ॥

कहै कबीर सुनो भाई साधो, बिन पिया नाहि ठिकाना ॥ ३ ॥

॥ शब्द २८ ॥

तेरा हीरा हिराइलया किंचड़े में ॥ टेक ॥

कोई हूँदै पूरब कोई हूँदै पच्छिम, कोई हूँदै पाती पथरे में ॥ १ ॥

सुर नर मुनि अरु पीर औलिया, सब भूलनवाड़ै नखरे में ॥ २ ॥

दास कबीर ये हीरा को परखै, बाँधि लिदलै जनन से अचरे में ॥ ३ ॥

॥ शब्द २९ ॥

काया सराय मैं जीव मुसाफिर, कहा करत उनमाद' रे ।

रेन बसेरा करि ले डेरा, चला सबेरे लाद रे ॥ १ ॥

तन कै चोला खरा अमोला, लगा दाग पर दाग रे ।

दो दिन की जिंदगानी मैं क्या, जरै जगत की आग रे ॥ २ ॥

क्रोध के चुली उठी चित्त मैं, भये मनुष तैं नाग रे ।

सूझत नाहि समुँद सुख सागर, बिना प्रेम बैराग रे ॥ ३ ॥

सरवन सबद बूझि सतगुरु से, पूरन प्रगटे भाग रे ।

कहै कबीर सुनो भाई साधो, पाया अवल सुहाग रे ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३० ॥

का लै जैवो, ससुर घर ऐवो ॥ टेक ॥

गाँव के लोग जब पूछन लगिहैं, तब तुम का रे बतैवौ ॥ १ ॥

खाल घुँघट जब देखन लगिहैं, तब बहुतै सरमैवौ ॥ २ ॥

कहत कबीर सुनो भाई साधो, फिर सासुर नहिँ पैवौ ॥ ३ ॥

॥ शब्द ३१ ॥

चल चल रे भँवरा' कवल पास । तेरी भँवरी बोलै अति उदास ॥१॥
 चौज करत वहँ बार बार । तन बन फूलयो डार डार ॥२॥
 बनस्पती का लियो है भोग । सुखन भयो तन बढ़यो रोग ॥३॥
 दिवस चार के सुरँग फूल । तेहि लखि भँवरा रह्यो भूल ॥४॥
 बनस्पती जब लागै आग । तब भँवरा कहाँ जैहौ भाग ॥५॥
 पुहुप पुराने गये सूख । तब भँवरा लगि अधिक भूख ॥६॥
 उड़िन सकत बल गयो छूट । तब भँवरा रोवै सीस कूट ॥७॥
 चहुँदिसिचितवै भुँइ पड़ाय । अब ले चल भँवरी सिर चढ़ाय ॥८॥
 कहै कबीर ये मन के भाव । इकनाम बिना सब जम के दाव ॥९॥

॥ शब्द ३२ ॥

अयौ दिन गौने कै हो, मन होत हुलास ॥टेक॥
 पाँच भीट कै पोखरा हो, जा में दस द्वार ।
 पाँच सखी बैरिन भइँ हो, कस उतरव पार ॥१॥
 छोट मोट डोलिया चँदन कै हो, लागे चार कहार ।
 डोलिया उतारै बीजा बनवाँ हो, जहँ कोइ न हमार ॥२॥
 पड़याँ तोरी लागौँ कहरवा हो, डोली धरु छिन बार ।
 मिलि लेवँ सखिया सहेलरि हो, मिलौँ कुल परवार ॥३॥
 दास कबीर गावै निरगुन हो, साधे करि ले बिचार ।
 नरम गरम सौदा करि ले हो, आगे हाट न बजार ॥४॥

॥ शब्द ३३ ॥

भजु मन जीवन नाम सवेरा ॥ टेक ॥
 सुंदर देह देखि जिनि भूलौ, भ्रष्ट लेत जस वाज बटेर ॥१॥
 या देही कौ गरब न कीजै, उड़ि पंछी जस लेत बसेरा ॥२॥

(१) मन ।

या नगरी में रहन न पैहौ, कोइ रहि जाय न दुख घनेरा ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, मानुष जनम न पेहो फेरा ॥४॥

॥ शब्द ३४ ॥

मन तू पार उतरि कहँ जैहै ।

आगे पंथी पंथ न कोइ, कूच मुकाम न पैहै ॥ १ ॥
नहिं तहँ नीर नाव नहिं खेवट, ना गुन' खँचनहारा ।
धरनी गगन कल्प कुछ नाहीं, ना कुछ वार न पारा ॥२॥
नहिं तन नहिं मन नाहिं अपनपो, सुन मैं सुद्धि न पैहौ ।
बलवाना है पैठो घट मैं, वहाँ हों ठौरँ होइ हो ॥३॥
बारहि बार बिचारि देखु मन, अंत' कहूँ मत जैहौ ।
कहै कबीर सब छाड़ि कल्पना, ज्योँ कै त्योँ ठहरैहौ ॥४॥

॥ शब्द ३५ ॥

कर साहिब से प्रीत रे मन, कर साहिब से प्रीत ॥टेक॥
ऐसा समय बहुरि नहिं पैहौ, जैहै औसर बीत ।
तन सुंदर छवि देख न भूला, यह बारू की भीत ॥१॥
सुख संपत्ति सुपने की बतियाँ, जैसे तन पर सीत ।
जाही कर्म परम पद पावै, सोई कर्म कस मीत ॥२॥
सरन आये सो सबाहि उबारै, यहि साहिब की रीत ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, चलिहौ भवजल जीत ॥३॥

॥ शब्द ३६ ॥

बंदे करिले आप निबेरा ॥ टेक ॥

आप चेत लखु आप ठौर करु, मुए कहाँ घर तेरा ॥१॥
यहि औसर नहिं चेतो प्रानी, अंत कोइ नहिं तेरा ॥२॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, कठिन काल का घेरा ॥३॥

॥ शब्द ३७ ॥

भजन बिन योँहीं जनम गँवायो ॥ टेक ॥
गर्भ बास मैं कौल क्रियो थो, तब तोहि बाहर लायो ॥१॥
जठर अगिन तँ काढ़ि निकारो, गौँठि बाँधि क्या लायो ॥२॥
बह बह मुवो बैल की नाई, सोइ रह्यो उठ खायो ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, चौरासी भरमायो ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३८ ॥

ऐसी नगरिया मैं केहि बिधि रहना,
नित उठि कलँक लगावै सहना' ॥ १ ॥
एकै कुवा पाँच पनिहारी ।
एकै लेजुर' भरै नौ नारी ॥ २ ॥
फटि गया कुवा बिनसि गड़ बारी' ।
बिलग भई पाँचो पनिहारी ॥ ३ ॥
कहै कबीर नाम बिन बेड़ा ।
उठि गया हाकिम लुटि गया डेरा ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३९ ॥

चली है कुल-बेारनो गंगा नहाय ॥ टेक ॥
सतुवा कराइन बहुरी भुंजाइन,
घूँघट ओटे भसकत' जाय ॥ १ ॥
गठरी बाँधिन मोटरी बाँधिन,
खसम के मूड़े दिहिन धराय ॥ २ ॥
बिछुवा पहिरिन औँठा पहिरिन,
लात खसम के मारिन धाय ॥ ३ ॥
गंगा न्हाइन जमुना न्हाइन,
नौ मन मैलहि लिहिन चढ़ाय ॥ ४ ॥

पाँच पचीस कै धक्का खाडुन,
 घरहु की पूँजी आई गँवाय ॥ ५ ॥
 कहै कबीर हेत करु गुरु से ।
 नहिँ तोर मुक्ती जाइ नसाय ॥ ६ ॥

॥ शब्द ४० ॥

कलजुग में प्यारी मेहरिया ॥ टेक ॥

बात कहत मुँह फारि खातु है, मिली धमधुसरि धँगरिया १
 भीतर रहत तो घूँघट काढ़त, बाहर मारत नजरिया ॥२॥
 सास ससुर को लातन मारत, खमम को मारत लतरिया ॥३॥
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, जमपुर जावै मेहरिया ॥४॥

॥ शब्द ४१ ॥

लागवै बड़ मतलब के यार, अब मोहिँ जान पड़ी । टेक
 जय लगि बैल रहे बनिया घर, तब लग चाह बड़ी ।
 पौरुष थके कोइ बात न पूछे, घूमत गली गली ॥ १ ॥
 बाँधे सत्त सती इक निकसी, पिया के फंद परी ।
 साचा साहिव ना पहिचाना, मुरदे संग जरी ॥ २ ॥
 हरा बृच्छ पंछी आ बैठा, रीति मनोरथ की ।
 जला बृच्छ पंछी उड़ि चाला, यही रीति जग की ॥ ३ ॥
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, मनसा विषय भरी ।
 मनुवाँ तो कहिँ औरहि डोलै, जपता हरी हरी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४२ ॥

किसी दा भइया क्या ले जाना, ओहि गया ओह गया भँवर निमाना १
 उड़ि गया तोता रहि गया पिँजरा, दसके जी जाना ठिकाना ॥२॥
 ना कोइ भाई ना कोइ बंधू, जो लिखिया सो खाना ॥३॥

काहू को नवा काहू को पुराना, काहू को अधुराना ॥ ४ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, जंगल जाई समाना ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४३ ॥

भाई तैं ने बड़ाही जुलम गुजारा, जो सतगुरु नाम बिसारा ॥ टेक
रखा ठका तोहि पूछन लागे, कुटुंब पूत परिवारा ॥ १ ॥
दर्द मर्द की कोई न जाने, झूठा जगत पसारा ॥ २ ॥
महल मड़ैया छिन मैं त्यागी, बाँधि काठ पर डारा ॥ ३ ॥
साहू थे सो हुए बदाऊ', लुटन गये घर बारा ॥ ४ ॥
घर की तिरिया चरचन' लागी, क्योँ नहिँ नाम सम्हारा ॥ ५ ॥
काम क्रोध लोभ नहिँ त्यागे, अब क्या करत बिचारा ॥ ६ ॥
सदा रंग महबूब गुमानी, यही सरूप तुम्हारा ॥ ७ ॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, अब क्योँ रोवे गँवारा ॥ ८ ॥

॥ शब्द ४४ ॥

हंसा सुधि कर अपना देसा ॥ टेक ॥

इहाँ आइ तोरी सुधि बुधि बिसरी, आनि फँसे परदेसा ।
अबहूँ चेतु हेतु करु पिउ से, सतगुरु के उपदेसा ॥ १ ॥
जौन देस से आये हंसा, कबहुँ न कीन्ह अँदेसा ।
आइ पखो तुम मोह फंद में, काल गह्यो तेरो केसा ॥ २ ॥
लाओ सुरत अस्थान अलख पर, जा को रतत महेसा ।
जुगन जुगन की संसय छूटै, छूटै काल कलेसा ॥ ३ ॥
का कहि आयौ काह करतु है, कहँ भूले परदेसा ।
कहै कबीर वहाँ चल हंसा, जनम न होय हमेसा ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४५ ॥

कानरसोवतमोहनिसा'में, जागतनहिँ कूचनियराना ॥ टेक
पहिले नगारा सेत केस भे, दूजे बैन सुनत नहिँ काना ॥ १ ॥
तीजे नैन दृष्टि नहिँ सूझै, चौथे आइ गिरा परवाना ॥ २ ॥

मातु पिता कहना नहिं माने, विप्रन से कीन्हा अभिमाना ॥३॥
 धरम की नाव चढ़न नहिं जानै, अयजमराज नेभेद बखाना ॥४॥
 होत पुकार नगर कसबे में, रैयत लोग सभै अकुलाना ॥५॥
 पूरन ब्रह्म की होत तयारी, अंत भवन विच प्रान लुकाना ॥६॥
 प्रेम नगरिया में हाट लगतु है जहँ रँगरेजवा है सतवाना' ॥७॥
 कहै कबीर कोइ काम न ऐहै, माटी कै देहिया माटी मिल जाना ॥८॥

॥ शब्द ४६ ॥

अरे दिल गाफिल, गफलत मत कर,

इक दिन जम तेरे आवेगा ॥टेक॥

सौदा करन को या जग आया, पूँजी लाया भूल गँवाया ।
 प्रेम नगर का अंत न पाया, ज्यों आया त्यों जावैगा १
 सुन मेरे साजन सुन मेरे मीता, या जीवन मैं क्या क्या कीता
 सिर पाहन का बोझा लीता, आगे कैान छुड़ावैगा ॥२॥
 परली पार मेरा मीता खड़िया, उस मिलने का ध्यान न धरिया ।
 टूटी नाव ऊपर जूझ बैठा, गाफिल गोता खावेगा ॥३॥
 दास कबीर कहै समुझाई, अंत काल तेरो कैान सहाई ।
 चला अकेला संग न कोई', किया अपना पावेगा ॥४॥

भेद

॥ शब्द १ ॥

[प्रश्न गोरखनाथ]

कबिरा कब से भये बैरागी, तुम्हरी सुरत कहाँ को लागी ॥

[उत्तर]

धुंधमई' का मेला नाहीं, नहीं गुरू नहिँ चेला ।
 सकल पसारा जेहि दिन नाहीं, जेहि दिन पुरुष अकेला ॥
 गोरख हम तब के बैरागी, हमरी सुरत नाम से लागी ॥१॥
 ब्रम्हा नहिँ जब टोपी दीन्हा, बिस्नु नहीं जब टीका ।
 सिव सक्ती कै जन्मै नाहीं, जबै जोग हम सीखा ॥२॥
 सतजुग मैं हम पहिरि पाँवरी', त्रेता भोरी भंडा ।
 द्वापर मैं हम अड़बँद' पहिरा, कलउ फिस्थौ नौ खंडा ३
 कासी मैं हम प्रगट भये हैं, रामानंद चिताये ।
 समरथ कै परवाना लाये, हंस उबारन आये ॥४॥
 सहजै सहजै मेला होइगा, जागी भगति उत्तंगा ।
 कहै कबीर सुनो हो गोरख, चलो सबद के संगी ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

साहिब हम मैं साहिब तुम मैं जैसे तेल तिलन मैं ।
 मत कर बंदा गुमान दिल मैं, खोज देखिले तन मैं ॥टेक
 चाँद सुरज के खंभ गाड़ि के, प्रान आसन कर घट मैं ।
 इँगला पिँगला सुरत लगा के, कमल पार कर घर मैं ॥१
 वा मैं बैठी सुखमन नारी, झुला झुलत बँगलन मैं ।
 कोटि सूर जहँ करते झिलि मिलि, नील सर सोती गगन मैं ॥२

तीन ताप मिठि गे दैही के, निर्मल होइ वैठी घट में ।
 पाँच चोर जहँ पकरि मँगाये, भंडा रोपे निरगुन में ॥३॥
 पाँच सहेली करत आरती, मनसा बाचा सतगुरु में ।
 अनहद घंटा बजै मृदंगा, तन सुख लेहि रतन में ॥४॥
 बिन पानी लागी जहँ वरषा, मोती देख नदिन में ।
 जहवाँ मनुआ बिलम रह्यो है, चलो हंस ब्रम्हँड में ॥५॥
 इकइस ब्रम्हँड छाड़ रह्यो है, समझै बिलै सूर ।
 मुख गँवार कहा समझैगे, ज्ञान कै घर है दूरा ॥ ६ ॥
 बड़े भाग अलमस्त रंग में, कबिरा बोलै घट में ।
 हंस उबारन दुख निवारन, आवागवन मिटै छिन में ॥७॥

॥ साखी ॥

साँझ पड़े दिन बीतवे, चकवी दीन्हा रोइ ।
 चल चकवी वा देस को, जहाँ रैन ना होइ ॥ ८ ॥
 चकवी बिछुरी साँझ की, आन मिलै परभात ।
 जो नर बिछुरे नाम से, दिवस मिलै नहिँ रात ॥ ९ ॥

॥ शब्द ३ ॥

साईँ मोर बसत अगम पुरवा, जहँ गम न हमार ॥टेक
 आठ कुंआ नौ बावड़ी, सौरह पनिहार ।
 भरल घड़लवा' ढरकि गे हो, धन ठाढ़ी पछितात ॥१॥
 छोटि मोटि डँड़िया चँदन कै हो, छोटि चार कहार ।
 जाय उतरि है वाही देसवाँ हो, जहँ कोइ न हमार ॥२॥
 ऊँची महलिया साहिब कै हो, लगी बिषमी बजार ।
 पाप पुन दोउ बनिया हो, हीरा लाल बिकात ॥ ३ ॥

कहै कबीर सुन साइयाँ, मोरे आ हिये देस ।
जो गये बहुरे नहीं, को कहत सँदेस ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

हो तुम हंसा सत्त लोक के, पड़े काल बस आई हो ।
मनै सरूपी देव निरंजन, तुम्हें राखि भरमाई हो ॥ १ ॥
पाँच पचीस तीन कै पिँजरा, तेहि माँ राखि छिपाई हो ।
तुमको बिसरि गईसुधि घर की, महिमा अपन जनाई हो ॥ २ ॥
निरंकार निरगुन है माया, तुम को नाच नचाई हो ।
चर्म दृष्टि का कुलफा दैके, चौरासी भरमाई हो ॥ ३ ॥
चार बेद है जा की स्वासा, ब्रम्हा अस्तुति गाई हो ।
सो कित ब्रम्हा जक्त भुलाये, तेहि मारग सब जाई हो ॥ ४ ॥
सतगुरु बहुरि जीव के रच्छक, तिन से कर सुमताई हो ।
तिन के मिले परम सुख उपजै, पद निर्वाणा पाई हो ॥ ५ ॥
चारेँ जुग हम आन पुकारा, कोइ कोइ हंस चिताई हो ।
कहै कबीर ताहि पहुँचाऊँ, सत्तपुरुष घर जाई हो ॥ ६ ॥

॥ शब्द ५ ॥

जागत जोगेसर' पाया मेरे रबजू, जागत जोगेसर' पाया ॥ टेका ॥
हंसा एक गगन बिच बैठा, जिसके पंख न काया ।
बिना चोँच का चून चुगत है, दसवें द्वार बसाया ॥ १ ॥
मूसा जाय बिल्ली संग अरुम्हा, स्यारन सिंह डराया ।
जल की मछरी उदयचल द्यार्ड, ऊनज' रुंड जमाया ॥ २ ॥
अलख पुरुष की अचला बस्ती, जा की सीतल छाया ।
कहत कबीर सुन गोरख जोगी, जिन ठूँढ़ा तिन पाया ॥ ३ ॥

॥ शब्द ६ ॥

एक नगरिया तनिक सी मैं, पाँच बसैं किसान ।
 एक बसै धरती के ऊपर, एक अगिन मैं जान ॥ १ ॥
 दोय बसैं पवना पानी मैं, एक बसै असमान ।
 पाँच पाँच उनकी घरवाली, नित उठि माँगैं खान ॥ २ ॥
 इनहीं से सब दुःखकत डोलैं, मुकट्टम और दिवान ।
 खान पान सब न्यारा राखैं, मन मैं उन के मान ॥ ३ ॥
 जगत की आसा तजि दे हंसा, धरि ले पिथ को ध्यान ।
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, बैठो जाइ बिवान ॥ ४ ॥

॥ शब्द ७ ॥

चुषत अमौरस भरत ताल जहँ, सबद उठै असमानी हो ॥ टेक ॥
 सरिता उमड़ सिन्धु को सोखै, नहिँ कछु जात बखानी हो ॥ १ ॥
 चाँद सुरज तारागन नहिँ वहँ, नहिँ वहँ रैन बिहानी हो ॥ २ ॥
 बाजे बजैं सितार बाँसुरी, ररंकार मृदु बानी हो ॥ ३ ॥
 कोटि झिलमिली जहँ वहँ झलकै, बिनु जल बरमत पानी हो ॥ ४ ॥
 सिव अज' बिस्नु सुरेस सारदा, निज निज मति उनमानी हो ॥ ५ ॥
 दस अवतार एक तत राजैं, अस्तुति सहज से आनी हो ॥ ६ ॥
 कहै कबीर भेद की बातैं, बिरला कोइ पहिचानी हो ॥ ७ ॥
 कर पहिचान फेर नहिँ आवै, जम जुलमी की खानी हो ॥ ८ ॥

॥ शब्द ८ ॥

नाम बिमल पकवान मनै हलवैया ॥ टेक ॥
 ज्ञान कराही प्रेम बीच करि, मन मैदा कर सान ।
 ब्रम्ह अगिनि उदगारि के, इक अजब मिठाई छान ॥ १ ॥
 तनै बनायो पालरा, मन पूरा करि सेर ।
 सुरत निरत कै डाँड़ी बनवो, तौलत ना कछु फेर ॥ २ ॥

गगन मँडल में घर है तुम्हरा, त्रिकुटी लागि दुकान ।
उनमुनिया में रहनि बनावो, तब कुछ सौदा विकान ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, या गति अगम अपार ।
सत्त नाम साधु जन लादै, विष लादै संसार ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

सब का साखी मेरा साई ।
ब्रम्हा बिस्नु रुद्र ईसुर लैँ, औ अव्याकृत नाहीं ॥१॥
पाँच पचीस से सुमती करि ले, ये सब जग भरमाया ।
अकार ओंकार मकार मात्रा, इनके परे बताया ॥ २ ॥
जागृत सुपन सुषीपति तुरिया, इन तैं न्यारा होई ।
राजस तामस सातिक निर्गुन, इन तैं आगे सोई ॥ ३ ॥
स्थूल सूक्ष्म कारन महाकारन, इन मिलि भोग बखाना ।
बिस्व तेजस पराग आतमा, इन में सार न जाना ॥४॥
परा पसंती मधमा बैखरि, चौबानी नहिं मानी ।
पाँच कोष नीचे करि देखो, इन में सार न जानी ॥५॥
पाँच ज्ञान औ पाँच कर्म हैं, ये दस इन्द्री जानो ।
चित सोई अंतःकरन बखानी, इन में सार न मानो ॥६॥
कुरम सेस किरकिला धनंजय, देवदत्त कह देखो ।
चौदह इन्द्री चौदह इन्द्रा, इन में अलख न पेखो ॥७॥
तत पद त्वं पद और असी पद, बाच लच्छु पहिचाने ।
जहद लच्छुना अजहद कहते, अजहद जहद बखाने ॥८॥
सतगुरु मिलै सत सबद लखावै, सार सबद बिलगावै ।
कहै कबीर सोई जन पूरा, जो न्यारा करि गावै ॥ ९ ॥

॥ शब्द १० ॥

हम से रहा न जाय, मुरलिया कै धुनि सुनि के ॥ टेक ॥
 पाँच तत्त को पूनला, रूयाल रच्यो घट माहिँ ॥ १ ॥
 बिना बसंत फूल इक फूलै, भँवर रह्यो अरुभाय ॥ २ ॥
 गगन गराजै बिजुली चमकै, उठती हिचे हिलोर ॥ ३ ॥
 बिगसन कंवल औ मेघ बरीसै, चितवत प्रभु की ओर ॥ ४ ॥
 तारी लगी तहाँ मन पहुँचा, गैय धुजा फहराय ॥ ५ ॥
 कह कबीर कोइ संत बिबेकी, जीवत ही मरि जाय ॥ ६ ॥

॥ शब्द ११ ॥

मारग बिहँग बतावै संत जन ॥ टेक ॥

कौने घर से जिव की उनपति, कौने घर को जावै ।
 कहाँ जाइ जिव प्रलय होइगा, सो सुर तहाँ चढ़ावै ॥ १ ॥
 गढ़ सुमेर वाही को कहिये, सुई नखा से जावै ।
 भू मँडल से परिचय करि ले, पर्वत धौल लखावै ॥ २ ॥
 द्वादस कोस' साहिब कै डेरा, तहाँ सुरत ठहरावै ।
 वा को रंग रूप नहिँ रेखा, कौन पुरुष गुन गावै ॥ ३ ॥
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, जो यह पद लखि पावै ।
 अमर लोक मैं झुलै हिंडोला, सतगुरु सबद सुनावै ॥ ४ ॥

॥ शब्द १२ ॥

हंसा कहो पुरातम' बात ॥ टेक ॥

कौन देस से आयौ हंसा, उतस्यो कौने घाट ।
 कहँ हंसा बिसराम कियो है, कहाँ लगायो आस ॥ १ ॥
 बंक देस से आयौ हंसा, उतस्यो भौजल घाट ।
 भूलि परयो माया के बसि मैं, बिसरि गयो वो बात ॥ २ ॥

अब ही हंसा चेतु सवेरा, चलो हमारे साथ ।
 संसय सोक वहाँ नहीं व्यापै, नहीं काल कै त्रास ॥३॥
 हुआँ मदन बन' फूलि रहे हैं, आवै सोहं बास ।
 मन भौँरा जहँ अरु भिरहो है, सुख की ना अभिलास ॥४॥
 मकर' तार तैं हम चढ़ि करते, बंकनाल परबेस ।
 वहि डोरी चढ़ि चढ़ि चले हंसा, सतगुरु के उपदेस ॥५॥
 जहँ संतन की चौकी बनी है, दुरै सोहंगम चौर ।
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, सतगुरु के सिर मौर ॥६॥

॥ शब्द १३ ॥

सो पंछी मोहिं कोई न बतावै, जो बोलै घट माहीं रे ।
 अथरन बरन रूप नहीं रेखा, बैठा नाम की छाहीं रे ॥टेक॥
 या तरवर मैं एक पखेरू, रंगत चुंगत वह डोलै रे ।
 वा की सन्ध लखै नहीं कोई, कैन भाव से बोलै रे ॥१॥
 दुर्म' डारि तहँ अति घनि छाया, पंछि बसेरा लेई रे ।
 आवै साँझ उड़ि जाइ सवेरा, मरम न काहू देई रे ॥२॥
 दुइ फल चाखि जाय रह्यो आगे, और नहीं दस बोसा रे ।
 अगम अपार निरन्तर बासा, आवत जात न दीसा रे ॥३॥
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, यह कछु अगम कहानी रे ।
 या पंछो को कैन ठौर है, बूझो पंडित ज्ञानो रे ॥ ४ ॥

॥ शब्द १४ ॥

ऐसा रंग कहाँ है भाई ॥ टेक ॥
 सात दीप नौ खंड के बाहर, जहवाँ खोज लगाई ।
 वा देसवा कै मरम न जानै, जहं से चूनरि आई ॥ १ ॥

या चूनर में दाग बहुत है, संत कहैं गुहराई ।
 जो यह चूनर जुगति से ओढ़ै, काल निकट नहीं आई ॥२॥
 प्रेम नगर की गैल कठिन है, वहाँ कोई जान न पाई ।
 चाँद सुरज जहं पौन न पानी, पतिया को लै जाई ॥३॥
 सोहंकार से काया भिरजी, ता में रंग समाई ।
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, बिरले यह घर पाई ॥४॥

॥ शब्द १५ ॥

जियत न मारमुआ मत लैयो, मास बिना मत ऐयो रे ॥टेक॥
 परली पार इक बेल का बिरवा, वा के पात नहीं है रे ।
 हात पात चुगि जात मिरगवा, मृग के सीस नहीं है रे ॥१॥
 धनुष बान लै चढ़ा पारधी, धनुआ के परच नहीं है रे ।
 सरसर बान तकातक मारै, मिरगा के घाव नहीं है रे ॥२॥
 उरबिनु खुर बिनु चरन चौंच बिनु, उड़न पंख नहीं जा के रे ।
 जो कोई हंसा मारि लियावै, रक्त माँस नहीं ता के रे ॥३॥
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, यह पद अतिहि दुहेला रे ।
 जो या पद को अर्थ बतावै, सोई गुरु हम चेला रे ॥४॥

॥ शब्द १६ ॥

सँग लागी मेरे ठगनी जानि पड़ी ॥ टेक ॥
 हमरे बलम कै प्रेम पटूका, चूनर लेत सुहाग भरी ॥१॥
 रंग महल बिच नौंद परी है, पाँचो चोर मसान मरी ॥२॥
 साखी सबद नवो दरवाजे, मूँदि खोलि ले दस भँभरी ॥३॥
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, यह दुनियाँ जंजाल भरी ॥४॥

(१) कठिन । (२) तीसरा तिल अथवा शिव नेत्र जो जोगियों का दसवाँ द्वार है ।

॥ शब्द १७ ॥

मेरी नजर मैं मोती आया है ॥ टेक ॥

कोइ कहे हलका कोइ कहे भारी, दूनों भूल भुलाया है ॥१॥

ब्रम्हा बिस्नु महेसुर धाके, तिनहूँ खोज न पाया है ॥२॥

संकर सेस औ सारद हारे, पढ़ि रटि गुन बहु गाया है ॥३॥

है तिल के तिल के तिल भीतर, बिरले साधू पाया है ॥४॥

चहुँ दल कँवल तिकुटी साजे, ओंकार दरसाया है ॥५॥

रंकार पद सेत सुन्न मध, षटदल कँवल बताया है ॥६॥

पारब्रम्ह महासुन्न मँभारा, सोइ निःअछर रहाया है ॥७॥

भँवर गुफा मैं सोहं राजै, मुरली अधिक बजाया है ॥८॥

सत्तलोक सत पुरुष बिराजै, अलख अगम दोउ भाया है ॥९॥

पुरुष अनामी सब पर स्वामी, ब्रम्हँड पारजो गाया है ॥१०॥

यह सब बातें देही माहीं, प्रतिबिम्ब अंड जो पाया है ॥११॥

प्रतिबिम्ब पिंड ब्रम्हँड है नकली, असली पार बताया है ॥१२॥

कहै कबीर सतलोक सार है, यहँ पुरुष नियारा पाया है ॥१३॥

॥ शब्द १८ ॥

तू सूरत नैन निहार, यह अंड के पारा है ।

तू हिरदे सोच बिचार, यह देस हमारा है ॥१॥

पहिले ध्यान गुरनका धारो, सुरत निरत मन पवन चितारो ।

सुहेलना धुन मैं नाम उचारो, तब सतगुरु लहो दीदारा है ॥२॥

सतगुरु दरस होइ जय भाई, वे दें तुम को नाम चिताई ।

सुरत सबद दोउ भेद बताई, तब देखे अंड के पारा है ॥३॥

सतगुरु कृपा दृष्टि पहिचाना, अंड सिखर बेहद मैदाना ।

सहज दास तहँ रोपा धाना, जो अग्रदीप सरदारा है ॥४॥

सात सुन्न बेहद के माहीं, सात संख तिन की ऊँचाई ।
 तीनि सुन्न लैँ काल कहाई, आगे सत्त पसारा है ॥५॥
 पिरथम अभय सुन्न है भाई, कन्या निकल यहँ बाहर आई ।
 जोग संतायन'पूछो वाही, (कहा) ममदारा' वह भरतारा है ६
 दूजे संकल सुन्न करि गाई, माया सहित निरंजन राई ।
 अमर कोट कै नकल बनाई, जिन अंड मधिरच्यो पसारा है ७
 तीजे है महसुन्न सुखाली, महाकाल यहँ कन्या ग्रासी ।
 जोग संतायन आये अविनासी, जिन गलनख छेद निकारा है ॥८॥
 चौथे सुन्न अजोख कहाई, सुद्ध ब्रम्ह पुर्ष ध्यान समाई ।
 आद्या यहँ बीजा ले आई, देखो दृष्टि पसारा है ॥ ९ ॥
 पंचम सुन्न अलेल कहाई, तहँ अदली बंदीवान रहाई ।
 जिनका सतगुरु न्याव चुकाई, जहँ गादी अदली सारा है ॥१०॥
 षष्ठे सार सुन्न कहलाई, सार भँडार याही के माहीं ।
 नीचे रचना जाहि रचाई, जा का सकल पसारा है ॥११॥
 सतवैँ सत्त सुन्न कहलाई, सत भंडार याही के माहीं ।
 निःतत रचना ताहि रचाई, जो सबहिन तँ न्यारा है ॥१२॥
 सत सुन ऊपर सत की नगरी, घाट बिहंगम बाँकी डगरी ।
 सो पहुँचे चाले बिन पगरी, ऐसा खेल अपारा है ॥१३॥
 पहिली चकरी समाप कहाई, जिन हंसन सतगुरु मति पाई ।
 वेद भर्म सब दियो उड़ाई, तिरगुन तजि भये न्यारा है ॥१४॥
 दूजी चकरी अगाध कहाई, जिन सतगुरु संग द्रोह कराई ।
 पीछे आनि गहे सरनाई, सो यहँ आन पधारा है ॥१५॥
 तीजी चकरी मुनिकर नामा, जिन मुनियन सतगुरु मति जाना ।
 सो मुनियन यहँ आइ रहाना, करम भरम तजि डारा ॥१६॥

चौथी चकरी धुनि है भाई, जिन हंसन धुनि ध्यान लगाई।
 धुनि संग पहुँचे हमरे पाहीं, यह धुनि सबद मँझारा है ॥१७॥
 पंचम चकरी रास जो भाखी, अलमोना है तहँ मधि भँकी।
 लीला कोट अनंत वहाँ की, जहँ रास बिलास अपारा है ॥१८॥
 षष्ठम चकरी बिलास कहाई, जिन सगगुरु संग प्रीति निबाही।
 छुटते दैह जगह यहँ पाई, फिर नहिँ भव अवतारा है ॥१९॥
 सतवीं चकरी बिनोद कहानो, कोटिन बंस गुरन तहँ जानो
 कलि में बोध किया ज्यों भानो, अंधकार खोया उजियारा है ॥२०॥
 अठवीं चकरी अनुरोध बखाना, तहाँ जुलहदी ताना ताना।
 जा का नाम कबीर बखाना, जो सब संतन सिर धारा है ॥२१॥
 ऐसी ऐसी सहस करोड़ी, ऊपर तले रची ज्यों पौड़ी।
 गादी अदली रही सिर मैरी, जहँ सतगुरु बंदीछोरा है ॥२२॥
 अनुराधी के ऊपर भाई, पद निर्बान के नीचे ताही।
 पाँच संख है याहि उँचाई, जहँ अद्भुत ठाठ पसारा है ॥२३॥
 सोलह सुत हित दीप रचाई, सब सुत रहँ तासु के माहीं।
 गादी अदल कबीर यहाँ ही, जो सबहिन में सरदारा है ॥२४॥
 पद निरबान है अनंत अपारा, नूतन सूरत लोक सुधारा।
 सत्तपुरुष नूतन तन धारा, जो सतगुरु संतन सारा है ॥२५॥
 आगे सत्तलोक है भाई, संखन कोस तासु उँचाई।
 हीरा पन्ना लाल जड़ाई, जहँ अद्भुत खेल अपारा है ॥२६॥
 बाग बगीचे खिली फुलवारी, अमृत नहरें हो रहिँ जारी।
 हंसा खेल करत तहँ भारी, जहँ अनहद धुरै अपारा है ॥२७॥
 ता मधि अधर सिंघासन गाजै, पुरुष सबद तहँ अधिक बिराजै।
 कोटिन सूर रोम इक लाजै, ऐसा पुरुष दीदारा है ॥२८॥

या चूनर मैं दाग बहुत है, संत कहैं गुहराई ।
 जो यह चूनर जुगति से ओढ़ै, काल निकट नहिं आई ॥२॥
 प्रेम नगर की गैल कठिन है, वहाँ कोइ जान न पाई ।
 चाँद सुरज जहं पौन न पानी, पतिया को लै जाई ॥३॥
 सोहंकार से काया भिरजी, ता मैं रंग समाई ।
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, बिरले यह घर पाई ॥४॥

॥ शब्द १५ ॥

जियत न मारमुआ मत लैयो, मास बिना मत ऐयो रे ॥टेक
 परली पार इक बेल का बिरवा, वा के पात नहीं है रे ।
 हात पात चुगि जात मिरगवा, मृग के सीस नहीं है रे ॥१॥
 धनुष बान लै चढ़ा पारधी, धनुआ के परच नहीं है रे ।
 सरसर बान तकातक मारै, मिरगा के घाव नहीं है रे ॥२॥
 उरबिनु खुर बिनु चरन चौंच बिनु, उड़न पंख नहिं जा के रे ।
 जो कोइ हंसा मारि लियावै, रक्त माँस नहिं ता के रे ॥३॥
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, यह पद अतिहि दुहेला रे ।
 जो या पद को अर्थ बतावै, सोई गुरु हम चेला रे ॥४॥

॥ शब्द १६ ॥

सँग लागी मेरे ठगनी जानि पड़ी ॥ टेक ॥
 हमरे बलम कै प्रेम पटूका, चूनर लेत सुहाग भरी ॥१॥
 रंग महल बिच नौंद परी है, पाँचो चोर मसान भरी ॥२॥
 साखी सबद नवो दरवाजे, मूँदि खोलि ले दस भँभरी ॥३॥
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, यह दुनियाँ जं जाल भरी ॥४॥

(१) कठिन । (२) तीसरा तिल अथवा शिव नेत्र जो जोगियों का दसवाँ द्वार है ।

॥ शब्द १७ ॥

मेरी नजर मैं मोती आया है ॥ टेक ॥

कोइ कहे हलका कोइ कहे भारी, दूनों भूल भुलाया है ॥१॥

ब्रम्हा बिस्नु महेसुर धाके, तिनहूँ खोज न पाया है ॥२॥

संकर सेस औ सारद हारे, पढ़ि रटि गुन बहु गाया है ॥३॥

है तिल के तिल के तिल भीतर, बिरले साधू पाया है ॥४॥

चहुँ दल कँवल तिकुटी साजे, ओंकार दरसाया है ॥५॥

रंरंकार पद सेत सुन्न मध, षटदल कँवल बताया है ॥६॥

पारब्रम्ह महासुन्न मँभारा, सोइ निःअछर रहाया है ॥७॥

भँवर गुफा मैं सोहं राजै, मुरली अधिक बजाया है ॥८॥

सत्तलोक सत पुरुष बिराजै, अलख अगम दोउ भाया है ॥९॥

पुरुष अनामी सब पर स्वामी, ब्रम्हँड पारजो गाया है ॥१०॥

यह सब बातें देही माहीं, प्रतिबिम्ब अंड जो पाया है ॥११॥

प्रतिबिम्ब पिंड ब्रम्हँड है नकली, असली पार बताया है ॥१२॥

कहै कबीर सतलोक सार है, यहाँ पुरुष नियारा पाया है ॥१३॥

॥ शब्द १८ ॥

तू सूरत नैन निहार, यह अंड के पारा है ।

तू हिरदे सोच बिचार, यह देस हमारा है ॥१॥

पहिले ध्यान गुरनका धारो, सुरत निरत मन पवन चितारो ।

सुहेलना धुन मैं नाम उचारो, तब सतगुरु लहो दीदारा है ॥२॥

सतगुरु दरस होइ जय भाई, वे दें तुम को नाम चिताई ।

सुरत सबद दोउ भेद बताई, तब देखे अंड के पारा है ॥३॥

सतगुरु कृपा दृष्टि पहिचाना, अंड सिखर बेहद मैदाना ।

सहज दास तहँ रोपा धाना, जो अग्रदीप सरदारा है ॥४॥

सात सुन्न बेहद के माहीं, सात संख तिन की ऊँचाई ।
 तीनि सुन्न लैँ काल कहाई, आगे सत्त पसारा है ॥५॥
 पिरथम अभय सुन्न है भाई, कन्या निकल यहँ वाहर आई ।
 जोग संतायन'पूछो वाही, (कहा)ममदारा' वह भरतारा है ६
 दूजे संकल सुन्न करि गाई, माया सहित निरंजन राई ।
 अमर कोट कै नकल बनाई, जिन अंड मधिरच्यो पसारा है ७
 तीजे है महसुन्न सुखाली, महाकाल यहँ कन्या ग्रासी ।
 जोग संतायन आये अविनासी, जिन गलनख छेद निकारा है ॥८॥
 चौथे सुन्न अजोख कहाई, सुद्ध ब्रम्ह पुष ध्यान समाई ।
 आद्या यहँ बीजा ले आई, देखो दृष्टि पसारा है ॥ ९ ॥
 पंचम सुन्न अलेल कहाई, तहँ अदली बंशीवान रहाई ।
 जिनका सतगुरु न्याव चुकाई, जहँ गादी अदली सारा है ॥१०॥
 षष्ठे सार सुन्न कहलाई, सार भँडार याही के माहीं ।
 नीचे रचना जाहि रचाई, जा का सकल पसारा है ॥११॥
 सतवैँ सत्त सुन्न कहलाई, सत भँडार याही के माहीं ।
 निःतत रचना ताहि रचाई, जो सबहिन तँ न्यारा है ॥१२॥
 सत सुन ऊपर सत की नगरी, घाट बिहंगम बाँकी डगरी ।
 सो पहुँचे चाले बिन पगरी, ऐसा खेल अपारा है ॥१३॥
 पहिली चकरी समाप कहाई, जिन हंसन सतगुरु मति पाई ।
 बेद भर्म सब दियो उड़ाई, तिरगुन तजि भये न्यारा है ॥१४॥
 दूजी चकरी अगाध कहाई, जिन सतगुरु सँग द्रोह कराई ।
 पीछे आनि गहे सरनाई, सो यहँ आन पधारा है ॥१५॥
 तीजी चकरी मुनिकर नामा, जिन मुनियन सतगुरु मति जाना ।
 सो मुनियन यहँ आइ रहाना, करम भरम तजि डारा ॥१६॥

चौथी चकरी धुनि है भाई, जिन हंसन धुनि ध्यान लगाई।
 धुनि संग पहुँचे हमरे पाहीं, यह धुनि सबद मँझारा है ॥१७॥
 पंचम चकरी रास जो भाखी, अलमोना है तहँ मधि झाँकी।
 लीला कोट अनंत वहाँ की, जहँ रास बिलास अपारा है ॥१८॥
 षष्ठम चकरी बिलास कहाई, जिन सगगुरु संग प्रीति निबाही।
 छुटते दैह जगह यहँ पाई, फिर नहिँ भव अवतारा है ॥१९॥
 सतवीं चकरी बिनोद कहानो, कोटिन बंस गुरन तहँ जानो
 कलि में बोध किया ज्योँ भानो, अंधकार खोया जजियार है ॥२०॥
 अठवीं चकरी अनुरोध बखाना, तहाँ जुलहदी ताना ताना।
 जा का नाम कबीर बखाना, जो सब संतन सिर धारा है ॥२१॥
 ऐसी ऐसी सहस करोड़ी, ऊपर तले रची ज्योँ पौड़ी।
 गादी अदली रही सिर मैरी, जहँ सतगुरु बंदीछोरा है ॥२२॥
 अनुराधी के ऊपर भाई, पद निर्बान के नीचे ताही।
 पाँच संख है याहि उँचाई, जहँ अद्भुत ठाठ पसारा है ॥२३॥
 सोलह सुत हित दीप रचाई, सब सुत रहँ तासु के माहीं।
 गादी अदल कबीर यहाँ ही, जो सबहिन में सरदारा है ॥२४॥
 पद निरबान है अनंत अपारा, नूतन सूरत लोक सुधारा।
 सत्तपुरुष नूतन तन धारा, जो सतगुरु संतन सारा है ॥२५॥
 आगे सत्तलोक है भाई, संखन कोस तासु उँचाई।
 हीरा पन्ना लाल जड़ाई, जहँ अद्भुत खेल अपारा है ॥२६॥
 बाग बगीचे खिली फुलवारी, अमृत नहरें हो रहिँ जारी।
 हंसा खेल करत तहँ भारी, जहँ अनहद धुरै अपारा है ॥२७॥
 ता मधि अधर सिंघासन गाजै, पुरुष सबद तहँ अधिक बिराजै।
 कोटिन सूर रोम इक लाजै, ऐसा पुरुष दीदारा है ॥२८॥

हंस हंसनी आरत उतारै, खोड़स भानू सुर पुनि चारै ।
 पद बीना सत सद्यद उचारै, जो बेधत हिये मँझरा है ॥२९॥
 ता पर अगम महल इक न्यारा, संखन कोटि नासु बिस्तारा ।
 बाग बावड़ी अमृत धारा, जहँ अधरी चलै फुडारा है ॥३०॥
 मोती महल औ हीरन चौंरा, सेत बरन तहँ हंस चकोरा ।
 सहस सूर छवि हंसन जोरा, ऐसा रूप निहारा है ॥३१॥
 अधर सिंघासन जिंदा साई, अर्चन सूर रोम सम नाहीं ।
 हंस हिरंवर चँवर दुलाई, ऐसा अगम अपारा है ॥३२॥
 तहँ अधरी ऊपर अधर धराई, संखन संख तासु ऊँचाई ।
 झिलमिलहट सो लोक कहाई, जहँ झिलमिल झिनमिल सारा है ॥३३॥
 बाग बगीचे झिलमिल कारी, रतन न जड़े पात औ डारी ।
 मोती महल औ रतन अटारी, तहँ पुरुष बिदेह पधारा है ॥३४॥
 कोटिन भानु हंस को रूपा, धुन है वहँ की अजब अनूपा ।
 हंसा करत चँवर सिर भूपा, बिन कर चँवर दुजारा है ॥३५॥
 हंसा केल सुनो मन लाई, एक हंस के जो चित आई ।
 दूजा हंस समझि पुनि जाई, बिन मुख बैन उचारा है ॥३६॥
 ता आगे निःलोक है भाई, पुरुष अनामी अकह कहाई ।
 जो पहुँचे जानेंगे वाही, कहन सुनन तँ न्यारा है ॥३७॥
 रूप सरूप वहाँ कछु नाहीं, ठौर ठाँव कछु दीसै नाहीं ।
 अरज तूल' कछु दृष्टि न आई, कैसे कहूँ सुमारा' है ॥३८॥
 जा पर किरपा करिह साई, गगनी मारग पावै ताही ।
 सत्तर परलय मारग माहीं, जय पावै दीदारा है ॥ ३९॥

कहै कबीर मुख कहा न जाई, ना कागद पर अंक चढ़ाई ।
मानो गूँगे सम गुड़ खाई, सैनन बैन उचारा है ॥ ४० ॥

॥ शब्द १६ ॥

सुरसरि'बुक्का'बटावै तो पिय के लगावै हो ॥ टेक ॥
सत्त सोहंगम नारि तो कुमति छुड़ावै हो ॥ १ ॥
घट हि मैं मानसरोवर घाट बंधावै हो ।
घट हि मैं पाँचौ कहार दुलहै नहवावै हो ॥ २ ॥
घट हि मैं दाया के दरजी तो दरज मिटावै हो ।
घट हि मैं मन कर माली तो मौर ले आवै हो ॥ ३ ॥
घट हि मैं जुक्ति के जेवर जिवै' पहिरावै हो ।
घट हि मैं सोरहो सिंगार सु दुलहै करावै हो ॥ ४ ॥
घट हि मैं लोह लोहार कँगन लै आवै हो ।
तीनि गुनन कै कँगन दुलहै पहिरावै हो ॥ ५ ॥
घट हि मैं नेह कै नाउन चरन पखारै हो ।
घट हि मैं पाँचो सोहागिन मंगल गावै हो ॥ ६ ॥
घट हि मैं चित कै चौका तो चौक पुरावै हो ।
सत्त सुकिरत कै कलस तहाँ धरवावै हो ॥ ७ ॥
घट ही मैं अनहद बाजन बजवावै हो ।
घट हि मैं सूरत नार तो दुलहै रिभावै हो ॥ ८ ॥
बार बार गुन गाऊँ तो बरनि सुनाऊँ हो ।
दुलहा कै न्योछावर परम पद पाऊँ हो ॥ ९ ॥
तीन लोक ओहि पार हंसा उहाँ जाउब हो ।
कहै कबीर धरमदास बहुरि नहिँ आउब हो ॥ १० ॥

॥ शब्द २० ॥

चरखा चलै सुरत बिरहिनि का ॥ टेक ॥

काया नगरी बनी अति सुन्दर, महल बना चेतन का ।
 सुरत भाँवरी होत गगन में, पीढ़ा ज्ञान रतन का ॥१॥
 चित चमरख तिरगुन कै टैकुआ, माल मनोरथ मन का ।
 पिउनी पाँच पचीस रंग की, कुखरी नाम भजन का ॥२॥
 दृढ़ बैराग गाढ़ि दुइ खूँटा, मंभा' जोग जुगत का ।
 द्वादस नाम धरो दुइ पखुरी, हथिया सार सबद का ॥३॥
 मिहीन सूत संत जन कातै, माभाँ' प्रेम भगति का ।
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, जुगन जुगन सत मत का ॥४॥

॥ शब्द २१ ॥

दिन दस नैहरवाँ खेलि ले, निज सासुर जाना हो ॥टेक॥
 इक तो अँधेरी कोठरी, ता में दिया न बाती हो ।
 बहियाँ पकरि जम लै चले, कोइ संग न साथी हो ॥१॥
 कोठा ऊपर कोठरी, जोगी धुनिया रमाया हो ।
 अंग भभूत लगाइ के, जोगी रैन गँवाया हो ॥ २ ॥
 गंग जमुन बिच रेतवा, तहँ बाग लगाया हो ।
 कच्ची कली इक तोरि के, मलिया पछिताया हो ॥३॥
 गिरि परबत कै माछरी, भौसागर आया हो ।
 कहै कबीर धर्मदास से, जम बंसी लगाया हो ॥ ४ ॥

॥ शब्द २२ ॥

काया गढ़ जीतो रे भाई ॥ टेक ॥

ब्रम्ह कोट चहुँ ओर मँडो है, माया ख्याल बनाई ।
 कनक कामिनी फंदा रोपे, जग राखे बिलमाई ॥ १ ॥

पाँचौ मुरचा गढ़के भीतर, तहाँ लाँघि कै जाई ।
 आसा तृस्ना मनसा कहिये, तृगुन बनी जो खाई ॥२॥
 पचिस सुभाव जहँ निसि दिन व्यापै, काम क्रोध दोउ भाई ।
 लालच लोभ खड़े दरवाजे, मोह करै ठकुराई ॥ ३ ॥
 मूल कँवल पर आसन कीन्हो, गुरु कै सीस नवाई ।
 छवो कँवल इक सुर मैं बेधे, चढ़ी गगन गढ़ जाई ॥४॥
 ज्ञान कै घोड़ा ध्यान कै पाखर, जुक्ति कै जीन बनाई
 सत्त सुकृत दोउ लगी पावरी, बिबेक लगाम लगाई ॥५॥
 सील छिमा के बखतर पहिरे, तत तरवार गहाई ।
 साजन सुरति चढ़ि छाजे ऊपर, निरंत के साँग' गहाई ॥६॥
 सतएँ कँवल त्रिकुट के भीतर, वहाँ पहुँचि के जाई ।
 जाति सूरूपी देव निरंजन, वेदन उन को गाई ॥ ७ ॥
 बंकनाल की औघट घाटी, तहाँ न पग ठहराई ।
 ओअं ररंग अड़े जहँ दुइ दल, अजपा नाम सहाई ॥८॥
 जोजन एक खरब के आगे, पुरुष बिदेह रहाई ।
 सेत कँवल निसि बासर फूले, सोभा बरनि न जाई ॥९॥
 सेत छत्र और सेत सिंघासन, सेत धुजा फहराई ।
 कोटिन भानु चन्द्र तारागन, छत्र की छाँह रहाई ॥१०॥
 मन मैं मन नैनन मैं नैना, मन नैन एक द्वै जाई ।
 सुरत सोहागिनि मिलत पिया को, तन कै तपन बुझाई ॥११॥
 द्वादस ऊपर अजपा फेरै, मनै पवन थकि जाई ।
 कहै कबीर मिले गुरु पूरे, सबद मैं सुरत मिलाई ॥ १२ ॥

॥ शब्द २३ ॥

सुगना बोल तैं निज नाम ॥ टेक ॥
 आवत जात बिलम' नहिं लागै, मंजिल आठौ जाम ।
 लाखन कोस पलक में जावै, कहूँ न करै मुकाम ॥ १ ॥
 हाथ पाँव मुख पेट पीठ नहिं, नहीँ लाल ना सेत न स्याम ।
 पंखन बिना उड़ै निसि वासर, सीत लगै नहिं घाम ॥ २ ॥
 बेद कहै सरगुन के आगे, निरगुन का विसराम ।
 सरगुन निरगुन तजहु सोहागिनि, जाइ पहुँच निज धाम ॥ ३ ॥
 लाल गुलाल बाग हंसन में, पंछी करै अराम ।
 दुख सुख वहाँ कहूँ नहिं व्यापै, दरसन आठौ जाम ॥ ४ ॥
 नूरै ओढ़न नूरै डोसन, नूरै कै सिरहान ।
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, सतगुरु नूर तमाम ॥ ५ ॥

॥ शब्द २४ ॥

बलो जहँ बसत पुरुष निर्वाणा ॥ टेक ॥
 अवगति गति जहँ गति गम नाहीँ, दुइ अंगुल परिमाना ।
 रबिससि दूनों पौन चलतुहँ, तेहि बिच धरु मन ध्याना ॥ १ ॥
 तीन सुन्न के पार बसतु है, चौथा तहँ अस्थाना ।
 उपजा ज्ञान ध्यान दृढ़ जागा, मगन भया मस्ताना ॥ २ ॥
 पोहि के डोरी चढ़ौ गगन पर, सुरत धरो सत नामा ।
 द्वादस चलै दसो पर ठहरै, ऐसा निरगुन नामा ॥ ३ ॥
 अजर अमर जहँ जरा मरन नहिं, पहुँचै संत सुजाना ।
 बहुतक चढ़ि चढ़ि के फिरि आये, बिरला जन ठहराना ॥ ४ ॥
 सबदै निराखि पराखि छवि भलकै, सुमिरन मूल ठिकाना ।
 उलटि पवन षट चक्रर बेधै, नैनन पियत अघाना ॥ ५ ॥

सबदै सबद प्रगट भये बाहर, कहि गये वेद पुराना ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सबद में सुरत समाना ॥६॥

॥ शब्द २५ ॥

दूर गवन तेरो हंसा हो, घर अगम अपार ॥ टेक ॥
नहिँ वहँ काया नहिँ वहँ माया, नहिँ वहँ त्रिगुन पसार ।
चार बरन उहवाँ है नाहीं, ना है कुल व्योहार ॥ १ ॥
नौ छः चौदह बिद्या नाहीं, नहिँ वहँ वेद बिचार ।
जप तप संजम तीरथ नाहीं, नाहीं जेम अचार ॥ २ ॥
पाँच तत्त नहिँ उत्पति भइलै, सो परलय के पार ।
तीन देव ना तैतिस कोटी, नाहिँ दसो अवतार ॥ ३ ॥
सोरह संख के आगे होई, समरथ कर दरबार ।
सेत सिंघासन आसन बैठे, जहाँ सबद भनकार ॥ ४ ॥
पुरुष रूप कहा बरनौँ महिमा, तिन गति अपरम्पार ।
कोटि भानु की सोभा जिन्ह के, इक इक रोम उजार ॥५॥
छर अकछर दूनों से न्यारा, सोई नाम हमार ।
सार सबद को लेइके आये, मिरतू लोक मँझार ॥ ६ ॥
चार गुरु मिलि थापल हो, जग के हैं कड़िहार ।
उन कर बहियाँ पकरि रहो हो, हंसा उतरौ पार ॥७॥
जम्बू दीप के तुम सब हंसा, गहि लो सबद हमार ।
दास कबीरा अब की दीहल, निर्गुन कै टकसार ॥ ८ ॥

॥ शब्द २६ ॥

बलु हंसा वा देस, जहाँ तोर पिया बसै ॥ टेक ॥
वहि देसवा में अर्द्धमुख कुइयाँ, साँकर वाकै मोहड़ ।
सुरत सोहागिनि है पनिहारिनि, भरै ठाढ़ बिन डोर ॥१॥

वहि देसवाँ बादर ना उमड़ै, रिमझिम बरसै मेह ।
 चौबारे मैं बैठि रहो ना, जा भोजहु निर्देह ॥ २ ॥
 वहि देसवाँ मैं नित्त पूर्निमा, कबहु न होइ अँधेर ।
 एक सुरज कै कौन बतावै, कोटिन सुरज उँजैर ॥ ३ ॥
 लछमी वा घर भाडू देत है, सिव करते कोतवाली ।
 ब्रम्हा वा के बने दहलुवा, बिस्नु करै चरवाही ॥ ४ ॥
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, ई पद है निर्बानी ।
 जो ई पद कै अरथ लगावै, पहुँचै मूल ठिकानी ॥ ५ ॥

॥ शब्द २७ ॥

चरखा नहीं निगोड़ा चलता ॥ टेक ॥
 पाँच तत्त का बना है चरखा, तीन गुनन में गलता ॥१॥
 माल टूटि तीन भया टुकड़ा, टेकुवा होइ गया टेढ़ा ॥२॥
 माँजत माँजत हार गया है, धागा नहीं निकलता ॥३॥
 मित्र बढ़ैया दूर बसत है, का के घर दे आया ॥ ४ ॥
 ठोकत ठोकत हार गया है, तौ भी नहीं सम्हलता ॥ ५ ॥
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, जले बिना नहीं छुटता ॥६॥

॥ शब्द २८ ॥

जिन पिया प्रेम रस प्याला, सोई जन है मतवाला ॥१॥
 मूल चक्र कौ बंद लगावै, उलटी पवन चढ़ावै ।
 जरा मरन भय व्यापै नाहीं, सतगुरु सरनी आवै ॥ २ ॥
 बिन धरनी हरि मन्दिर देखा, बिन सागर भर पानी ।
 बिन दीपक मन्दिर उँजियारा, बोलै गुरुमुख बानी ॥३॥
 इँगला पिंगला सुखमन नाड़ी उनमुन के घर मेला ।
 अष्ट कँवल पर कँवल बिराजै, सो साहिय अलबेला ॥४॥

चाँद न सुरज दिवस नहिँ रजनी, तहाँ सुरत लौ लावै ।
अमृत पियै मगन होय बैठी, अनहद नाद बजावै ॥ ५ ॥
चाँद सुरज एकै घरि राखै, भूला मन समझावै ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सहज सहज गुन गावै ॥ ६ ॥

प्रेम ।

॥ शब्द १ ॥

आज मेरे सतगुरु आये ।

रहस रहस मैं अँगना बुहारौ, मोतियन चौक पुराये ॥ १ ॥
चरन पखारि चरनामृत करिके, सब साधन बरताऊँ ।
पाँच सखी मिलि मंगल गावैं, सबद सुरत लौ लाऊँ ॥ २ ॥
करूँ आरती प्रेम निछावर, पल पल बलि बलि जाऊँ ।
कहै कबीर दया सतगुरु की, परम पुरुष बर पाऊँ ॥ ३ ॥

॥ शब्द २ ॥

आज सुबेला सुहानो, सतगुरु मेरे आये ।

चंदन अगर बसाये, मोतियन चौक पुराये ॥ १ ॥
सेत सिंघासन बैठे सतगुरु, सुरत निरत करि देखा ।
साध कृपा तैं दरसन पाये, साधू संग बिसेखा ॥ २ ॥
घर आँगन मैं आनंद होवै, सुरत रही भरपूर ।
भरि भरि पढ़ै अमीरस दुर्लभ, है नेढ़े नहिँ दूर ॥ ३ ॥
द्वादस महु देखि ले जोई, बिच है आपै आपा ।
त्रिकुटी महु तू सेज निरिखि ले, नहिँ मंतर नहिँ जापा ॥ ४ ॥
अगम अगाध गती जो लखि है, सो साहिब को जीवा ।
कहै कबीर धरमदाम से, भेंटि ले अपना पीवा ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

आज दिन के मैं जाऊँ बलिहारी ॥ टेक ।

सतगुरु साहिब आये मेरे पहुना ।

घर आँगन लगै सुहाना ॥ १ ॥

साध संत लगे मंगल गावन ।

भये मगन लखि छवि मन भावन ॥ २ ॥

चरन पखाऊँ वदन' निहाऊँ ।

तन मन धन सब गुरु पर वारूँ ॥ ३ ॥

जा दिन आये साध धन सोई ।

होत अनन्द परम सुख होई ।

सतगुरु मिलि मोरी दुर्मति खोई ॥ ४ ॥

सुरत लगी सतनाम की आसा ।

कहै कबीर दासन कर दासा ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

सतगुरु हैं रँगरेज, चुनर मेरी रँगि डारी ॥ टेक ॥

स्थाही रंग छुड़ाइ के रे, दियो मजीठा रंग ।

धोये से छूटै नहीं रे, दिन दिन होत सुरंग ॥ १ ॥

भाव के कुंड नेह के जल मैं, प्रेम रंग दइ बेर ।

चसकी चास लगाइ के रे, खूब रँगी भकभोर ॥ २ ॥

सतगुरु ने चुनरी रँगी रे, सतगुरु चतुर सुजान ।

सब कुछ उन पर वार दूँ रे, तन मन धन औ प्रान ॥ ३ ॥

कहै कबीर रँगरेज गुरु रे, मुझ पर हुए दयाल ।

सीतल चुनरी ओढ़ि के रे, भइ हौं मगन निहाल ॥ ४ ॥

(१) चिहरा ।

॥ शब्द ५ ॥

कब गुरु मिलिहौ सनेही आइ ॥ टेक ॥
 लाभ मोह को जार' बना है, ता मैं रह्यो अरुभाय ।
 जाकी साची लगन लगी है, सो वा घर को जाइ ॥१॥
 सुरत समानी सबद कुंड मैं, निरत रही लौ लाइ ।
 पिया बिना योँ प्यारी तलफै, तलफि तलफि जिय जाइ ॥२॥
 चलौ सखी वा देसै चलिये, जहाँ पुरुष को ठाँइ ।
 हंस हिरंवर' चँवर दुरत हैं, तनको तपन बुझाइ ॥ ३ ॥
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, सबद सुनो चित लाइ ।
 नाम पान' पाँजी जो पावै, सो वा लोकै जाई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

प्रीत लगी तुम नाम को, पल बिसरै नाहीं ।
 नजर करो अब मिहर की, मोहिँ मिलो गुसाईँ ॥ १ ॥
 बिरह सतावै मोहिँ को, जिव तड़पै मेरा ।
 तुम देखन की चाव है, प्रभु मिलो सबेरा ॥ २ ॥
 नैना तरसै दरस को, पल पलक न लागै ।
 दर्दबंद दीदार का, निसि वासर जागै ॥ ३ ॥
 जो अब के प्रीतम मिलै, करुं निमिष' न न्यारा ।
 अब कबीर गुरु पाइया, मिला प्रान पियारा ॥ ४ ॥

॥ शब्द ७ ॥

जो तू पिय का लाड़ली, अपना करिले री ।
 कलह कल्पना मेट के, चरनन चित दे री ॥ १ ॥
 पिय को मारग कठिन है, खाँड़े की धारा' ।
 डिगमिगै तो गिरि पड़ै, नहिँ उतरै पारा ॥ २ ॥

(१) जाल । (२) सुनहरे रंग के । (३) रास्ता । (४) द्विन मर । (५) धार,
 चोखा रख तलवार का ।

पिय कौ मारग सुगम है, तेरो चाल अनेड़ा ।
 नाचि न जानै बावरी, कहै आँगन टेढ़ा ॥ ३ ॥
 जो तू नाचन नीकसी, तो घूँघट कैसा ।
 घूँघट का पट खोलि दे, मत करै अँदेसा ॥ ४ ॥
 चंचल मन इत उत फिरै, पतिव्रत जनावै ।
 सेवा लागी आन की, पिय कैसे पावै ॥ ५ ॥
 पिय खोजत ब्रम्हा थके, सुर नर मुनि देवा ।
 कहै कबीर बिचारि के, कर सतगुरु सेवा ॥ ६ ॥

॥ शब्द ८ ॥

आज सुहाग की रात पियारी ।
 क्या सोवै मिलने की बारा ॥ १ ॥
 आये ढोल बजावत बाजन ।
 बनरी' ढाँपि रही मुख लाजन ।
 खोल घुँघट मुख देखैगा साजन ॥ २ ॥
 सिर सोहै सेहरा हाथ सोहै कँगना ।
 झूमत आवै बन्ना' मेरे अँगना ॥ ३ ॥
 कहत कबीर कर दरपन लीजै ।
 अब मन मानै सोइ सोइ कीजै ॥ ४ ॥

॥ शब्द ९ ॥

बहुत दिनन मैं प्रोतम आये ।
 भाग भले घर बैठे पाये ॥ १ ॥
 मंगल चार महा मन राखो ।
 नाम रसायन रसना' चाखो ॥ २ ॥

मंदिर महा भयो उजियारा ।

लै सूती अपना पिय प्यारा ॥ ३ ॥

मैं निरास जो नौनिधि पाई ।

कहा करूँ पिय तुमरी बड़ाई ॥ ४ ॥

कहै कबीर मैं कलु नहिं कीन्हा ।

सहज सुहाग पिया मोहिं दीन्हा ॥ ५ ॥

॥ शब्द १० ॥

हूँ वारी' मुख फेर' पियारे ।

करवट दे मोहिं काहे को मारे ॥ १ ॥

करवट' भला न करवट तोरी ।

लाग गले सुन विनती मोरी ॥ २ ॥

हम तुम बीच भया नहिं कोई ।

तुमहिं सो कंत नारि हम होई ॥ ३ ॥

कहत कबीर सुनो नर लोई ।

अब तुम्हरी परतीति न होई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ११ ॥

सूतल रहलूँ मैं नींद भरि हो, गुरु दिहलूँ जगाइ ॥ टेक ॥

चरन कँवल कै अंजन हो, नैना लेलूँ लगाइ

जा से निंदिया न आवै हो, नहिं तन अलसाइ ॥ १ ॥

गुरु के बचन निज सागर हो, चलु चली हो नहाइ ।

जनम जनम के पपवा हो, छिन में डारब धुवाइ ।

वाहि तन कै जग दीप कियो, खुत बतिया लगाइ ।

पाँच तत्त कै तेल चुआये, ब्रम्ह अगिन जगाइ ॥ ३ ॥

(१) बलिहारी । (२) मेरी तरफ़ मुँह कर । (३) कुरी ।

सुमति गहनवाँ पहिरलौँ हो, कुमति दिहलौँ उतार ।
 निर्गुन मँगिया संवरलौँ हो, निर्भय सँदुर लाइ ॥ ४ ॥
 प्रेम पियाला पियाइ के हो, गुरु दियो बैराइ ।
 बिरह अगिन तन तलफै हो, जिय कछु न सुहाइ ॥ ५ ॥
 जँच अटरिया चढ़ि बैठलुँ हो, जहँ काल न खाइ ।
 कहै कबोर बिचारि के हो, जम देखि डेराय ॥ ६ ॥

॥ शब्द १२ ॥

तेरो को है रोकनहार, मगन से आव चली ॥ टेक ॥
 लोक लाज कुल की मर्जादा, सिर डारि अली ।
 पटक्यो भार मोह माया कै, निरभय राह गही ॥ १ ॥
 काम क्रोध हंकार कलपना, दुरमति दूर करी ।
 मान अभिमान दोऊ धर पटक्यो, होइ निसंक रली ॥ २ ॥
 पाँच पचीस करे बस अपने, करि गुरु ज्ञान छड़ी ।
 अगल बगल के मारि उड़ाये, सनमुख डगर धरी ॥ ३ ॥
 दया धर्म हिरदे धरि राख्यो, पर उपकार बढ़ी ।
 दया सारूप सकल जीवन पर, ज्ञान गुमान भरी ॥ ४ ॥
 छिमा सील संतोष धीर धरि, करि सिंगार खड़ी ।
 भई हुलास मिली जब पिय को, जगत बिसारि चली ॥ ५ ॥
 चुनरी सबद बिबेक पहिर के, घर की खबर परी ।
 कपट किवरिया खोल अंतर की, सतगुरु मेहर करी ॥ ६ ॥
 दीपक ज्ञान धरे कर अपने, पिय को मिलन चली ।
 बिहसत बदन रु मगन छत्रीली, ज्योँ फूली कँवल कली ॥ ७ ॥
 देख पिया को रूप मगन भइ, आनंद प्रेम भरी ।
 कहै कबोर मिली जब पिय से, पिय हिय लागि रही ॥ ८ ॥

॥ शब्द १३ ॥

सबद की चोट लगी है तन में ।

घर नहिँ चैन चैन नहिँ बन में ॥ १ ॥

ढूँढ़त फिरोँ पीव नहिँ पावोँ ।

औषधि मूर खाइ गुजरावोँ ॥ २ ॥

तुम से वैद न हम से रोगी ।

बिन दीदार क्यों जिये बियोगी ॥ ३ ॥

एकै रंग रंगी सब नारी ।

ना जानोँ को पिय की प्यारी ॥ ४ ॥

कहै कबीर कोइ गुरुमुख पावै ।

बिन नैनन दीदार दिखावै ॥ ५ ॥

॥ शब्द १४ ॥

चली मैं खोज मैं पिय की, मिटी नहिँ सोच यह जिय की ॥१॥

रहै नित पासही मेरे, न पाऊँ यार को हेरे ॥ २ ॥

बिकल चहुँ ओर को धाऊँ, तबहु नहिँ कंत को पाऊँ ॥३॥

धरूँ केहि भाँति से धीरा, गया गिरि हाथ से हीरा ॥४॥

कटी जब नैन की भाईँ, लख्यो तब गगन मैं साईँ ॥५॥

कबीरा सबद कहि भासा, नैन मैं यार को बासा ॥ ६ ॥

॥ शब्द १५ ॥

राखि लेहु हम तैं बिगरी ॥ टेक ॥

सोल धरम जप भगति न कीन्ही, हैं अभिमान टेढ़ पगरी ॥१॥

अमर जानि संची यह काया, सो मिथ्या काँची गगरी ॥२॥

जिन निवाज साज सब कीन्हे, तिनहिँ बिसारि और लगरी ॥३॥

(१) नाम के आधार से जिऊँ । (२) जाला । (३) पगड़ी । (४) दया करके ।

संधिक' साध कबहु नहिं भेट्यौ, सरन परै जिनकी पग'री ४
कहै कबीर इक दिनतो सुनिये, मत घाले' जम की खव'री

॥ शब्द १६ ॥

दरस तुम्हारे दुर्लभ, मैं तो हुइ दिवानी ॥ टेक ॥
ठाँव ठाँव पूजा करै, मिलि सखी सयानी ।
पिय कै मरम न जानहीं, सब भर्म भुलानी ॥ १ ॥
बैस' गई पिय ना मिले, जरि जात जवानी ।
आइ बुढ़ापा घेरि लियो, अब का पछितानी ॥ २ ॥
पानन सी पियरी भई, दिन दिन पियरानी ।
आग लगै उहि जोवना, सोवै सेज विरानी ॥ ३ ॥
अजहूँ तेरो ना गयो, सुमिरो सननामा ।
कहै कबीर धर्मदास से गहु पद निर्वाना ॥ ४ ॥

॥ शब्द १७ ॥

दरमाँदा' ठाढ़ो तुम दरवार ॥ टेक ॥

तुम बिन सुरत करै को मेरी, दरसन दीजै खोल किवार ॥१॥
तुम सम धनी उदार न कोई, सर्वन सुनियत सुजस तुम्हार ॥२॥
माँगौँ कौन रंक' सब देखौँ, तुम ही मेरो निस्तार' ॥३॥
कहत कबीर तुम समरथ दाता, पूरन पद को देत न बार' ॥४॥

॥ शब्द १८ ॥

सुनहु अहो मेरी राँध' परोसिन, आज सुहागिन अनंद भरो ॥टेक॥
सबद बान सतगुरु ने मारयो, सोवत तैं धन चौँक परी ।
बहुत दिनन तैं गई मैं खेलन, बिन सतगुरु अब भटकि मरी ॥१॥

(१) मालिक से मेला कराने वाला । (२) चरन । (३) डालो । (४) खड्ड ।
(५) उमर । (६) दीन । (७) दरिद्र । (८) उबार । (९) देर । (१०) एक दिल ।

या तन मैं बट मार बहुत हैं, छिन छिन रोकत घरी घरी ।
जब प्रीतम कि धुनि सुनि पाई, छाड़ि सखिन भर बिलग खड़ी ॥२॥
पाँच पचीस किये बस अपने, पिया मिलन की चाह धरी ।
सबद बिबेक चुनरिया पहिरे, ज्ञान गली मैं भई खड़ी ॥३॥
दीपक ज्ञान लिये कर अपने, निरखि पुरुष भइ मोद'भरी ।
मिटि गौ भर्म दूरि भयो धोखे, उ अटि महल मैं खबरपरी ॥४॥
देखि पिया को रूप मगन भइ, निरखि सेज पर धाय चढ़ी ।
करत बिलास पिया अपने संग, पौँढ़ि सेज पर प्रेम भरी ॥५॥
सुख सागर से बिलसन लागी, बिछुरे पिय धन' मिलि जो गई ।
कहै कबीर मिली जब पिय से, जनम जनम को अमर भई ॥६॥

॥ शब्द १६ ॥

अब तोहि जान न द्यौँ पिउ प्यारे ।

ज्यौँ भावै त्यों रहो हमारे ॥ १ ॥

बहुत दिनन के बिछुड़े पाये ।

भाग भले घर बैठे आये ॥ २ ॥

चरनन लागि करौँ सेव काई ।

प्रेम प्रीति राखौँ अरु काई ॥ ३ ॥

आज बसौ मम मंदिर चाखे ।

कहै कबीर पढ़ाँ नहिं धोखे ॥ ४ ॥

॥ शब्द २० ॥

अबिनासी दुलहा कब मिलिहौ, भक्तन के रछपाल' ॥ टेक

जल उपजी जल ही से नहा, रटन पियास पियास ।

मैं बिरहिनि ठाढ़ी मग जोऊँ, प्रीतम नुम्हरी आस ॥१॥

(१) आनंद । (२) स्त्री । (३) रक्षा करने वाले । (४) राह देखूँ ।

छोड़यो गेह' नेह लगि तुम से, भई चरन लैलीन ।
 तालाबेलि' होन घट भीतर, जैसे जल बिन मान ॥२॥
 दिवस न भूख रैन नहिं निद्रा, घर अँगना न सुहाय ।
 सेजरिया बैरिनि भइ हम को, जागत रैन बिहाय' ॥३॥
 हम तो तुम्हरी दासी सजना, तुम हमरे भरतार ।
 दीनदयाल दया करि आओ, समरथ सिरजनहार ॥ ४ ॥
 कै हम प्रान तजतु हैं प्यारे, कै अपनी करि लेव ।
 दास कबीर बिरह अति बाढ़यो, अब तो दरसन देव ॥५॥

॥ शब्द २ ॥

हम तो एक ही करि जानो ॥ टेक ॥
 दाय कहै तेहि को दुबिधा है, जिन सत नाम न जानो ॥१॥
 एकै पवन एक ही पानी, एकै जोति समानो ॥ २ ॥
 इक मटो कै घड़ा गढ़ैया, एकै कोहँरा' सानो ॥ ३ ॥
 माया देखि के जगत लुभानो, काहे रे नर गरबानो' ॥४॥
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, गुरु के हाथ काहे न बिकानो ॥५॥

॥ शब्द २२ ॥

मैं देख्यो तोरी नगरा अजब जोगिया ॥ टेक ॥
 जोगी कै मढ़ैया अजब अनूप ।
 उलटी नीम दई महबूब ॥१॥
 जट बिन लट बिन अँग न भभूत ।
 लखि न पढ़ै जोगी ऐसो अवधूत ॥ २ ॥
 जोगिया की नगरी बसौ मत कोय ।
 जो रे बसै सो जोगिया होय ॥ ३ ॥

कह कबीर जोगो बरनो न जाय ।

जहँ देखो गुहगम पतियाय ॥ ४ ॥

॥ शब्द २३ ॥

मेरी रँगो चुनरिया धो धुबिया ॥ १ ॥

जनम जनम के दाग चुनर के, सतसँग जल से छुड़ा धुबिया २
सतगुरु ज्ञान मिले फल चारी, सबद कै कलप चढ़ा धुबिया ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, गुरु के चरन चित ला धुबिया ॥ ४ ॥

॥ शब्द २४ ॥

चुनरिया पचरँग हमें न सुहाय ॥ टेक ॥

पाँच रंग कै हमरी चुनरिया,
नाम बिना रँग फोक दिखाय ॥ १ ॥

यह चुनरी मेरे मैके से आई,
अपने गुरु से ल्यौ बदलाय ॥ २ ॥

चुनरि पहिरि धन निकसी बजरिया,
काल बली लिहले पछुवाय ॥ ३ ॥

तेरी चुनर पर साहिब रीझे,
जम दहिजरवा फिर फिर जाय ॥ ४ ॥

कहै कबीर सुनो भाई साधो,
को अब आवै को घर जाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द २५ ॥

कौन रँगरेजवा रँगै मेरी चुनरी ॥ टेक ॥

पाँच तत्त कै बर्ना चुनरिया,
चुनरी पहिरि के लागै बड़ सुंदरी ॥ १ ॥

टेकुआ तागा कर्म कै धागा,
 गर बिच हरवा हाथ बिच मुँदरी ॥ २ ॥
 सारहो सिंगार बतीसो अभरन,
 पिय पिय रटत पिया सँग घुमरी ॥ ३ ॥
 कहै कबीर सुनो भाई साधो,
 बिन सतसंग कौन बिधि सुधरी ॥ ४ ॥

॥ शब्द २६ ॥

हुआ जब इस्क मस्ताना । कहै सब लोग दीवाना ॥१॥
 जिसे लागी सोई जाना । कहे से दर्द क्या माना ॥२॥
 कीट को ले उड़ी भृङ्गी । किया उन आप सौँ रंगी ॥३॥
 सुषमना तत्त जनकारा । लखै कोइ नाम का प्यारा ॥४॥
 म तेरा दास हूँ बंदा । तुम्ही के नेह मैं फंदा ॥ ५ ॥
 ममत की खान मैं डूबा । कहे कस मिले महबूबा ॥६॥
 साहिब टुक मिहर से हेरो । दास को जक्त से फेरो ॥७॥
 कबीर तालिबा' तेरा । किया दिल बीच मैं डेरा ॥ ८ ॥

॥ शब्द २७ ॥

सुन सतगुरु की तान नौँद नहिँ आती ।
 बिरहा मैं सूरत गई पछाड़े खाती ॥ टेक ॥
 तेरे घट मैं हुआ अँधेर भरम की राती ।
 भइ नै पिय से भेंट रही पछिताती ॥ १ ॥
 सखि नैन सैन से खोजि ढूँढ़ि लेआती ।
 मेरे पिया मिले सुख चैन नाम गुन गाती ॥ २ ॥

तेरि आवागवन की त्रास सबै मिटि जाती ।
छबि देखत भइ है निहाल काल मुरझाती ॥ ३ ॥
सखि मानसरोवर चलो हंस जहँ पाँती ।
कहै कबीर बिचारि सीप मिलि स्वाँती ॥ ४ ॥

॥ शब्द २८ ॥

तलफै बिन बालम मोरा जिया ॥ टेक ॥
दिन नहिँ चैन रैन नहिँ निँदिया ।
तलफ तलफ के भोर किया ॥ १ ॥
तन मन मोर रहट अस डोलै ।
सूनी सेज पर जनम छिया' ॥ २ ॥
नैन थकित भये पन्थ न सूकै ।
साँई वेदरदी सुधि न लिया ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो ।
हरो पीर दुख जोर किया ॥ ४ ॥

॥ शब्द २९ ॥

खालिक खूबै खूब ही, मोहिँ मिलन दुहेला' ।
महरम कोई ना मिलै, बन फिहूँ अकेला ॥ १ ॥
धिरह दिवाना मैं फिहूँ, दिल मैं लौ लागी ।
मरम न पाया दास ने, तन तपन न भागी ॥ २ ॥
मैं तरसत तोहि दरस को, तुम दरस न दीन्हा ।
नैन चहँ दीदार को, भये बहुत अधीना ॥ ३ ॥
सुरत निरस्त करि निरखिया, तन मन भये धीरा ।
नूर देखि दिलदार का, गुन गावै कबीरा ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३० ॥

प्रेम सखी तुम करो विचार ।

बहुरि न आना यहि संसार ॥ १ ॥

जो नोहि प्रेम खिलनवा चाव ।

सीस उतारि महल मैं आव ॥ २ ॥

प्रेम खिलनवा यही सुभाव ।

तू चलि आव कि मोहिं बुलाय ॥ ३ ॥

प्रेम खिलनवा यही बिसेख' ।

मैं तोहि देखूँ तू मोहिं देख ॥ ४ ॥

खेलत प्रेम बहुत पचि हारी ।

जो खेलिहै सो जग से न्यारी ॥ ५ ॥

दीपक जरै बुझै चहे बाति ।

उतरन न दे प्रेम रस माति ॥ ६ ॥

कहत कबीरा प्रेम समान' ।

प्रेम समान' और नहिं आन ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३१ ॥

साचा साहिब एक तू, बंदा आसिक तेरा ॥ टेक ॥

निसिदिन जप तुझ नाम का, पल बिसरै नाहीं ।

हर दम राख हजूर मैं, तू साचा साई ॥ १ ॥

गफलत मेरी मेटि के, मोहिं कर हुसियारा ।

भगति भाव बिस्वास मैं, देखौं दरस तुम्हारा ॥ २ ॥

सिफत तुम्हारी क्या करौं, तुम गहिर गँभीरा ।

सूरत मैं मूरत बसै, सोइ निरख कबीरा ॥ ३ ॥

(१) बड़ाई । (२) समाया । (३) बराबर ।

॥ शब्द ३२ ॥

ननदी जाव रे महलिया, आपन बिरना' जागाव ॥टेक॥
 भौजी सोवै जगाये न जागै, लै न सकै कटु दाव ।
 काया गढ़ में निसि अँधियारिया, कौन करै वा को भाव ॥१॥
 मन कै अगिन दया कै (दीपक, बाती प्रेम जगाव ।
 तत्त कै तेल चुवै दीपक में, मदन' मसाल जराव ॥ २ ॥
 भरम कै ताला लगे मन्दिर में, ज्ञान की कुंजी लगाव ।
 कपट किवारिया खोलि केरे, यहि बिधि पिय को जगाव ॥३॥
 ब्रम्हंड पार वह पति सुंदर है, अब से भूलि जिन जाव ।
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, फिरि न लगै अस दाव ॥४॥

॥ शब्द ३३ ॥

घूँघट का पट खोल रे, तो को पीव मिलैंगे ॥टेक॥
 घट घट में वहि साईँ रमता ।
 कटुक' बचन मत बोल रे, (तो को पीव) ॥१॥
 धन जोवन का गर्ब न कीजै ।
 झूठा पँचरँग चाल' रे, (तो को पीव) ॥२॥
 सुन्न महल में दियना बारि ले ।
 आसा से मत डोल रे, (तो को पीव) ॥३॥
 जोग जुगत से रंगमहल में ।
 पिय पाये अनमोल रे, (तो को पीव) ॥४॥
 कहै कबीर अनंद भयो है ।
 बाजत अनहद डोल रे, (तो को पीव) ॥५॥
 ॥ शब्द ३४ ॥
 सैयाँ बुलावे में जैहाँ ससुरे ।
 जलदी से महरा डोलिया कस रे ॥ १ ॥

(१) भाई । (२) काम । (३) कटुवा । (४) पाँच तत्वों का शरीर ।

नैहर के सय लोग छुटत रे ।

कहा कहँ अब कछु नहिँ बस रे ॥ २ ॥

बीरन' आवो गरे तोरे लागौं ।

फेर मिलब है न जानौं कस रे ॥ ३ ॥

चालनहार भडँ मै अचानक ।

रहौं बाबुल' तोरी नगरी सुबस रे ॥ ४ ॥

सान सहेली ता पै अकेली ।

संग नहीं कोउ एक न दस रे ॥ ५ ॥

गवना चाला तुराव' लगे है ।

जो कोउ रोवै वा को न हँस रे ॥ ६ ॥

कहै कबीर सुनो भाई साधो ।

सैयाँ के महल मै बसहु सुजस रे ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३५ ॥

गुरु दियना बारु रे, यह अंध कूप संसार ॥ टेक ॥

माया के रँग रची सय दुनियाँ, नहिँ सूझ परत करतार ॥ १ ॥

पुरुष पुरान बसै घट भीतर, तिनुका ओट पहार ॥ २ ॥

मृग के नाभि बसत कस्तूरी, सूँघत भ्रमत उजार' ॥ ३ ॥

कहै कबीर सुनो भाई साधो, छूटि जात भ्रम जार ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३६ ॥

पायौ सतनाम गरे कै हरवा ॥ टेक ॥

साँकर खटोलना रहनि हमारी, दुबरे दुबरे पाँच कहरवा ॥ १ ॥

ताला कुंजी हमै गुरु दीन्हो, जय चाहौं तब खोलौं किवरवार ॥ २ ॥

(१) भाई । (२) बाप । (३) पंजाबी बोली में "तुरो" का अर्थ "चलो" है ।

(४) जंगल में दौड़ता है ।

प्रेम प्रीति कै चुनरी हमरी, जय चाहैँ तय नाचौँ सहरवा ३
कहै कबीर सुनो भाई साधो, अहुरि न ऐवै एहि नगरवा ॥४॥

॥ शब्द ३७ ॥

भजन में होत अनंद अनंद ।

बरसत बिसद' अमी के बादर, भींजत है कोइ संत ॥१॥

अगर बास जहँ तत की नदिया, मानो धारा गंग ।

करि असनान मगन होइ बैठो, चढ़त सबद के रंग ॥२॥

रोम रोम जा के अमृत भीना, पारस परसन अंग ।

सबद गह्यो जिव संसय नाहीं, साहिय भये तेरे संग ॥३॥

सोई सार रख्यो मेरे साहिय, जहँ नहिं माया अहं ।

कहै कबीर सुनो भाई साधो, जपो सोहं सोहं ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३८ ॥

नाम अमल उतरै ना भाई ॥ टेक ॥

और अमल छिन छिन चढ़ि उतरै,

नाम अमल दिन बढ़ै सवाई ॥ १ ॥

देखत चढ़े सुनत हिये लागै,

सुरत किये तन देत घुमाई ॥ २ ॥

पियत पियाला भये मतवाला,

पायौ नाम मिटो दुखिताई ॥ ३ ॥

जो जन नाम अमल रस चाखा,

तर गड़ गनिका सदन कसाई ॥ ४ ॥

कहै कबीर गूँगे गुड़ खाया,

धिन रसना' क्या करै बढ़ाई ॥ ५ ॥

होली

॥ शब्द १ ॥

मैं तो वा दिन फाग मचैहैं, जा दिन पिय मेरे द्वारे ऐहैं ॥ टेक
 रंग वही रंगरेजवा वाही, सुरंग चुनरिया रंगैहैं ॥ १ ॥
 जोगिनि होइ के घन घन हूँहैं, वाही नगर मैं रहिहैं ॥ २ ॥
 बालपने गल सेलही बनेहैं, अंग भभून लगैहैं ॥ ३ ॥
 कहै कथीर पिय द्वारे ऐहैं, केसर माथ रंगैहैं ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

ये अँखियाँ अलसानी हो, पिय सेज चलो ॥ टेक ॥
 खंभ पकरि पतंग अस डोलै, बोलै मधुरी बानी ॥ १ ॥
 फूलन सेज बिछाइ जो राख्यौ, पिया बिना कुम्हिलानी ॥ २ ॥
 धीरे पाँव धरौ पलंगा पर, जागन ननद जिटानी ॥ ३ ॥
 कहै कथीर सुनो भाइ साधो, लोक लाज बिलछानी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

होरी खेलत फाग बसंत, सतसंग होइ रहु जोधा ॥
 तन मन भेंटि मिलौ जिव साचे, अंतर बिछोह न राखौ ।
 मगन होइ सेवा मैं सन्मुख, मधुर बचन सत भाखौ ॥ १ ॥
 होइ दयाल संत घर आवैं, चरनामृत करि पावौ ।
 महा प्रसाद सीत मुख लेवौ, या बिधि जनम सुधारौ ॥ २ ॥
 सील संतोष सदा सम द्विष्टी, रहनि गहनि मैं पूरा ।
 जा के दरस परस भय भाजै, होइ कलेस सब दूरा ॥ ३ ॥
 निसि बासर चरचा चित चंदन, आन कथा न सुहावै ।
 सीतल सबद लिये पिचुकारी, भरम गुलाल उड़ावै ॥ ४ ॥

(१) छोड़ी ।

सबद सरूप अखंडित अविचल, निर्भय बेपरवाई ।
कहै कथीर ताहि पग परसौ, घट घट सब सुखदाई ॥५॥

॥ शब्द ४ ॥

उड़िजा रे कुमतिया काग उड़िजा रे ॥ टेक ॥
तुम्हरो बचन मोहि नोक न लागै । सवन सुनत दुख जागै १
कोडल बोल सुहावन लागै । सब सुनि सुनि अनुरागै ॥२॥
हमरे सैयाँ परदेस बसतु हैं । मोर चित चरनन लागै ॥३॥
कहै कथीर सुनो भाई साधो । गुरू मिलैं बड़ भागै ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

आई गवनवाँ की सारी, उमिरि अबहीं मोरी बारी ॥ टेक ॥
साज समाज पिया लै आये, ओर कहरिया चारी ।
बम्हना बेदरदी अचरा पकरि के, जेअत गँठिया हमारी ।
सखी सब पारत गारी ॥ १ ॥

विधि' गति बाम कछु समझ परत ना, बैरि भई महतारी ।
रोइ रोइ अँखियाँ मोर पाँछन, घरवाँ से देत निकारी ।
भई सब कौ हम भारी ॥ २ ॥

गवन कराइ पिया लै चाले, इत उन बाट निहारी ।
छूटत गाँव नगर से नाता, छूटे महल अटारी
करम गति तरै न टारी ॥ ३ ॥

नदिया किनारे बलम मोर रसिया, दीन्ह धुँवट पटटारी ।
थरथराय तन काँपन लागे, काहू न देखि हमारी ।
पिया लै आये गोहारी ॥ ४ ॥

कहै कबीर सुनो भाई साधो, यह पद लेहु बिचारी ।
अथ के गीना बहुरि नहिँ औना, करिले भैट छँकवारी ।
एक बेर मिलि ले प्यारी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

खेलै फाग सबै नर नारी, हाथ लकुट' मुख में गारी ॥ टेक ॥
घर से निकसीं बनी' सुन्दरी, भाँति भाँति पहिरे सारी ।
अधिर गुलाल लिये भर भोरी, मिलन चलीं पिय की प्यारी ॥ १ ॥
अपने अपने भुंडन मिल करि, गावन धिरध तरुन चारी ।
पहुँचीं जाइ जहँ पिय मन्दिर है, घर बैठे मूरति धारी ॥ २ ॥
को चितवै को बोलै का सौं, निरजिव रूप कहूँ का री ।
निहुरि निहुरि सब पैयाँ परतु हैं, यह देखो अचरज भारी ॥ ३ ॥
सबै सखी मिलि मुरुह' चली हैं कोइ न गहै संग पिय प्यारी ।
सुरनर मुनि सब ही अस भूले, परम पुरुष की गतिन्यारी ॥ ४ ॥
ये सब भरम छे! डि दे बौरी, क्यों अब जनम जुआ हारी ।
कहै कबीर आपन पति चीन्हो, सुख सागर चेतन सारी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ ॥

बावरो सखी ज्ञान है मेरा ॥ टेक ॥

मातु पिता मोहिँ नितहि सिखावैं, घरजै बेगै बेरा ।
जौन कौल करि आयो पिय से, सो गुन एक न हेरा,
कहैं औगुन बहूतेरा ॥ १ ॥
आय गयो अनुहार' रे सजनी, कियो दरबजवैं डेरा ।
जल्दी डोलिया फँदाय माँगे बलमू, लावै न तनिकी देरा,
देखैं सब लोग घनेरा ॥ २ ॥

(१) छड़ी । (२) बनी ठनी । (३) बूढ़ी, जवान और लड़की । (४) मुड़ ।
(५) पूरा । (६) बुलानेवाला ।

रोय.रोय सय पूछन लागीं, कय करिहौ तुम फेरा ।
सात समुद्र पार तोरा सासुर, लौटय कठिन करेरा,
जहाँ कहूँ नाच न बेड़ा ॥ ३ ॥

कहै कथोर जय पियसे मिलौंगी, जिया न्यौछावर मेरा ।
आवागवन न हूँ या नगरी, यह लेखा सय केरा,
भूठ दुनिया का यसेरा ॥ ४ ॥

॥ शब्द ८ ॥

कैसे खेलौं पिया संग होगी, दुविधारा मचाय रही रे ॥ टेक ॥
पाँच पचीसो फाग रच्यो है, समता रंग बनाय रही रे ।
नाचन काल करम के आगे, संसा भाव बनाय रही रे ॥ १ ॥
करिके सिंगार कुमति यनि बैठो, भरम के घुँघरू बजाय रही रे ।
तीनों ताल मृदंग बजावैं, मैं मैं रागिनि छाय रही रे ॥ २ ॥
कपट कटोरा मद विष भरि भरि, नृसना मन को बकाय रही रे ।
याहि जीव को बस करि अपने, हंस को काग बनाय रही रे ॥ ३ ॥
जानि बूझि के मुनो भाई साधो, संत जनन ने पीठ दुई रे ।
दास कथोर कहै कर जारी, हमरी तो ऐसिही बीति गई रे ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

नित मंगल होरो खेला, नित असंत नित फाग ॥ टेक ॥
दया धर्म की केसर घोरो, प्रेम प्रीति पिचुकार ।
भाव भगति से भरि सतगुरु तन, उमँग उमँग रँग डार ॥ १ ॥
छिमा अथोर चरच' चित चंदन, सुमिरन ध्यान धमार ।
ज्ञान गुलाल अगर कस्तूरी, सुफल जनम नर नार ॥ २ ॥

(१) किड़क कर ।

चरनामृत परसाद चरन रज, अपने सीस चढ़ाव ।
 लोक लाज कुल कान छाड़ि के, निरमय निसान बजाव ॥३॥
 कथा कीरतन मँगल महोछव, कर साधन की भीर ।
 कभी न काज बिगरिहै तेरो, सत सत कहत कबीर ॥४॥

॥ शब्द १० ॥

मन तोहिं नाच नचावै माया ॥ टेक ॥
 आसा डोरिलगाइ गले बिच, नट जिमि कपिहि' नचाया ।
 नाचत सीस फिरै सचही को, नाम सुरत बिसराया ॥१॥
 काम हेतु तुम निसि दिन नाचे, का तुम भरम झुलाया ।
 नाम हेतु तुम कबहूँ न नाचे, जो सिरजल' तेरी काया ॥२॥
 भ्रु प्रहलाद अचल भये जा से, राज बिभीवन पाया ।
 अजहूँ चेत हेन कर पिउ से, हे रे निलज बेहाया ॥ ३ ॥
 सुख सम्पति सब साज बड़ाई, लिखि तेरे साथ पठाया ॥
 कहै कबीर सुनो भाई साथे, गनिका बिवान चढ़ाया ॥४॥

॥ शब्द ११ ॥

पिय बिन होरी को खेलै, बावरी भइ डोलै ॥ टेक ॥
 बाया हमारे व्याह रच्यो है, बर बालक हूँ स्यानी ।
 सैयाँ हमारे भूलै पलना, हमहिं झुलावनहारी ॥ १ ॥
 नौवा भूले बरिया भूले, भूले पंडित ज्ञानी ।
 मातु पितादोउ अपनी गरज के, हमरो दरद न जानी ॥२॥
 अनब्याही मन हैस' करतु हैं, ब्याही तौ पछतानी ।
 गौनो से मौने होइ बैठी, समुझ समुझ मुसकानी ॥३॥
 वै मुसकानी वै हुलसानी, बिचलत ना दोउ नैना ।
 दास कबीर कहै सोइ लिख गइ, सखी सहेलि की सैना ॥४॥

(१) बंदर को । (२) पैदा किया । (३) चाव ।

॥ शब्द १२ ॥

गगन मँडल अरुभाई, नित फाग मची है ॥ टेक ॥
ज्ञान गुलाल अघोर अरगजा, सखियाँ लै लै धाई ।
उमँगि उमँगि रँग डारि पिया पर, फगुवा देहु भलाई ॥ १ ॥
गगन मँडल बिचहोरी मची है, कोइ गुरु गम तँ लखि पाई ।
सबद डोर जहँ अगर ढरतु है, सोभा बरनिन जाई ॥ २ ॥
फगुवा नाम दियौ मोहिँ सतगुरु, तन की तपन बुझाई ।
कहै कबीर मगन भइ बिरहिनि, आवागन नसाई ॥ ३ ॥

॥ शब्द १३ ॥

बिरहिनि झकोरा मारि, को बूझै गति न्यारि ॥ टैक ॥
चोखा चन्दन अघिर अरगजा, करनी कै केसर घोरी ।
प्रेम प्रीति कै भरि पिचुकारी, रोम रोम रँगी सारी ॥ १ ॥
इँगला पिँगला रास रचो है, सुखमन बाट बहोरी ।
खेलत हैं कोइ संत बिरहिया, जोग जुगति लगी तारी ॥ २ ॥
वाजत ताल मृदंग भाँझ डफ, तुरही तान नफोरी ।
सुरत निरत जहँ नाचन निकसे, बाढत रंग अपारी ॥ ३ ॥
फागुन के दिन आनि लगे री, अब कैसे काह करो री ।
दास कबीर आतम परमातम, खेलत बहियाँ मिरोरी ॥ ४ ॥

॥ शब्द १४ ॥

का सँग होरी खेलैं हो, बालम पर देसवा ॥ टेक ॥
आई है अब रितु वसंत की, फूलन लागे टेसुवा ।
बस्त्र रँगिले पहिरन लागे, बिरहिनि ढारत अँसुवा ॥ १ ॥
भरि गाये ताल तलैया सागर, बोलन लागे मेघवा ।
उमड़ी नदी नाव कहँ पाँऔ, केहि बिधि लिखौँ सँदेवा ॥ २ ॥

(१) एक बाजा शहनाई का सा जो मूँह से बजाया जाता है । (२) मँडक ।

जो जो गये बहुरि नहिं आये, कैसन है वह देसवा ।
 आवत जावत लखै न कोइ, येही मोहिं अँदेसवा ॥ ३ ॥
 बालापन जावन दोउ घीते, पावन लागे केसवा ।
 कहै कथीर निज नाम सम्हारी, लै सनगुरु उपदेसवा ॥ ४ ॥

॥ शब्द १५ ॥

कोइ मो पै रंग न डारी, मैं तो मइ हूँ धीरी ॥ टेक ॥
 इक तो धीरी दूजे बिरह की मारी, तीजे नेह लगोरी ॥ १ ॥
 अपने पिया संग होरी खेलैं, येही फाग रचोरी ॥ २ ॥
 पाँच सुहागिनि होरी खेलैं, कुमति सखी से न्यारी ॥ ३ ॥
 कहै कथीर सुनो भाई साधो, आवागवन निवारी ॥ ४ ॥

॥ शब्द १६ ॥

ऐसी खेल ले होरी जोगिया, जा मैं आवागवन तजि डारी ॥
 ज्ञान ध्यान कै अधिर गुलाल लै, सुरति किये पिचुकारो ।
 भक्ति भभूत लै अँग पर डारी, मृग मुद्रा नृतकारी ॥ १ ॥
 सील सँतोष कै पहिरि चालना, छिमा टोप सिर धारी ।
 बिरह वैराग कै कानन मुद्रा, अनहद लाओ तारी ॥ २ ॥
 प्रीत प्रतीति नारि संग लैलै, केसर रंग बना री ।
 ब्रम्ह नगर मैं होरी खेली, अलख रंग भरि भारी ॥ ३ ॥
 काम क्रोध अरु मोह लोभ कै, कोच दूर तजि डारी ।
 जनम मरन की दुविधा मेटौ, आसा तृप्ता मारी ॥ ४ ॥
 निर्गुन सगुन एकहि जानौ, भरम गुफा मत जा री ।
 आनंद अनुभव उर मैं धारी, अनहद मृदंग बजा री ॥ ५ ॥
 जल थल जीव औ जन्तु चराचर, एकहि रूप निहारी ।
 दास कधीर से होरी मचाओ, खेला जग मैं धमारी ॥ ६ ॥

● ॥ शब्द १७ ॥

खेलौ नित मंगल होरी, नित बसंत नित मंगल होरी ॥ टेक
दया धरम की केसर घोरी, प्रेम प्रीति पिचुकारी ।
भाव भक्ति छिड़कै सतगुरु पै, सुफल जनम नर नारी ॥१॥
प्रीति प्रतीति फूल चित चंदन, सुमिरन ध्यान तुम्हारी ।
ज्ञान गुलाल अगर कस्तूरी, उमँग उमँग रँग डारी ॥२॥
चरनामृत परसाद चरन रज, अपने सीस चढ़ाई ।
लोक लाज कुल करम मेटि के, अभय निसान घुमाई ॥३॥
कथा कीरतन नाम गुन गावै, करि साधन की भीर ।
कौन काज बिगख्यो है तेरो, यों कथि कहत कबीर ॥४॥

॥ शब्द १८ ॥

कोइ है रे हमारे गाँवको, जा से परचा पूछौं ठाँव को ॥ टेक
बिन बादर बरखै अखँड धार, बिन बिजुरी चमकै अति अगार ॥१॥
ससिभानु बिना जहँ है कप्रास, गुरु सचद तहँ कियो निवास ॥२॥
नृच्छ एरु तहँ अति अनूप, साखा पत्र न छाँह धूप ॥३॥
बिन फूलन भँवरा करि गुंजार, फल लागे तहँ निराधार ॥४॥
ऊँच नाच नहिँ जाति पाँति, त्रिगुन न व्यापै सदा सांति ॥५॥
हर्ष सोग नहिँ राग दोष, जरा मरन नहिँ बय मोष ॥६॥
अखँड पुरी इक नग्र नाम, जहँ बसै साध जन सहज धाम ॥७॥
मरै न जीवै आवै न जाय, जन कबोर गुरु मिलै धाय ॥८॥

॥ शब्द १९ ॥

मानुष तन पायो बड़े भाग, अथ बिचारि के खेला फाग ॥ टेक
बिन जिभ्या गावै गुन रसाल, बिन चरनन चालै अधर चाल ॥१॥
बिन कर बाजा बजै बैन, निरखि देखि जहँ बिना नैन ॥२॥

धिन ही मारे मृतक होइ, धिन जाँरे हूँ खाक सोई ॥३॥
 धिन माँगे धिन जाँचे देइ, सो सालिम' बाजी जीन लेइ॥
 धिन दीपक बरै अखंड जाति, पाप पुन नहिँ लागे छोति'५
 चन्द सूर नहिँ आदि अंत, तहँ कधीर खेलै बसंत ॥६॥

॥ शब्द २० ॥

खेलैं साध सदा होरी, तहँ दुन्द उपाधि नहीं खोरी' ॥टेक॥
 तालमूल सुर सदा घाट धरि, पछिम दिसा चढ़ि गहि डोरी।
 खोलि कपाट' सहज घर पाया, सुन्दर रूप सुरत गोरी ॥१॥
 निरत' सखी चतुर सय गावैं, बाजत तुरही दै दै तारी ।
 छिरकत खीर रंग चित चंचल, प्रेम केसर भरि पिचुकारी ॥२॥
 जहँ राजत राम आप मन मूरति, अति रसाल' कूत्र धारी ।
 सुर नर मुनि तहँ होत कुलाहल, ज्ञान गुलाल उड़त भारी ॥३॥
 कोइ निरगुन कोइ सरगुन राचा', आप बिसारि चले सयही
 कहै कधीर चेतुनर प्रानी, सयद सरूप मिल्यो अग्रही ॥४॥

॥ शब्द २१ ॥

मन मिलि सतगुरु खेले होरी ॥ टेक ॥

संसय सकल जात छिन माहों, आवागवन कै फंदा तोरी १
 चित चंचल इसधिर करि राखो, सूरत निरत एक ठौरो ॥२॥
 बाजत ताल मृदंग भाँझ डफ, अनहद धुनि कै घनघोरी ॥३॥
 गावत राग सयै अनुरागी, सार सयद अंतर मोड़ी ॥ ४ ॥
 ज्ञान ध्यान की करि पिचुकारी, केसर गुरु किरपा घोरी ॥५॥
 अगर बास महके चहुँ ओरी, सेत अघोर लै भरि भोरी ॥६॥
 अजर अमर फगुवा नित पावै, कहै कधीर गये जम जोरी' ७

(१) पूरन । (२) छूत । (३) ईर्ष्या । (४) किवाड़ । (५) नाचती है । (६) भारी ।

(७) भीना । (८) बल, जुलूम ।

॥ शब्द २२ ॥

सखीरी ऐसी होली खेल, जा मैं हुरमत लाज रहै री ॥टेक॥
 सील सिंगार करौ मेरी सजनी, धीरज माँग भरो री ।
 ज्ञान गुलाल उड़ाओ तन से, समता फँट कसो री ॥ १ ॥
 मची धमार नगर तेरे मैं, अनहद धीन बजो री ।
 गुरु से फगुवा माँग सखी री, हिरदय सांति धरो री ॥२॥
 खेनी गज बनज औ बछरा, चेला सिष्य करोरी ।
 नाव भरी है पार होन को, कलोदह मैं परो री ॥ ३ ॥
 संसकिरत भाषा पढ़ि लीन्हा, ज्ञानी लोग कहो री ।
 आस तृस्ना मैं बहि गयो सजनी, जम के डंड सहो री ॥४॥
 मान मनी की मेटुकी सिर पर, नाहक बोझ मरो री ।
 मेटुकी पटकि मिलो सतगुरु से, दास कबीर कहो री ॥ ५ ॥

॥ शब्द २३ ॥

खेलि ले दिन चार पियारी, ये होरी रस खूब मचा री ॥
 ज्ञान की ढोल बिबेक मजोरा, राग उठै भनकारो ।
 जंत्रो संत भली बिधि जानै, याजत अनहद तारी,
 न जानै कारन अनाड़ी' ॥ १ ॥
 कर्म नाम की जेवरी' तोड़ी, धर्म गुलाल उड़ा री ।
 लोभ मोह के कंगन तोड़े, भर्म भाँडा फोड़ा री,
 कपट जड़ मूल उखाड़ी ॥ २ ॥
 अर्थ उर्थ बिच फाग रचो है, सुखमन सुरत सम्हारी ।
 पिया प्यारी खेलैं अपने पिया संग, छिरकै रंग अपारी,
 दुगन की चितवन न्यारी ॥ ३ ॥

हारी आवै फिरि फिरि जावै, यह तन बहुरि न पावै ।
पूर्ण प्रताप दया सतगुरु की, आवागवन नसावै,

यात यह कठिन करारी ॥ ४ ॥

सबै संग मिलि हारी खेलै, गगन में फाग रचा री ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, बेद न पावै पारी ।

सेस की रसना' हारी ॥ ५ ॥

॥ शब्द २४ ॥

जहँ बारह मास बसंत होय, परमारथ बूझै साध कोय ॥ टेक ॥
बिन फूलन फूल्यो अकास, ब्रम्हा दिक सिवलियो निवास ॥ १ ॥
सनकादिक रहै भँवर होई, लख चौरासो जीव सोई ॥ २ ॥
सातो सागर पिये हैं घोर, आन जुरे तैंतिस करार ॥ ३ ॥
अमर लोक फल लियो है जाय, कहै कबीर जाने सो खाय ॥ ४ ॥

॥ शब्द २५ ॥

सत साहिब खेलै ऋतु बसंत । कोटिदास सुर मुनि अनंत । टेक
हैंसैं हंस जगमगैं दंत । सेत पुहुप बरखैं अनंत ॥ १ ॥
अग्र सद्यद की बास माहिं । निराख हंस सबदै समाहिं ॥ २ ॥
नौ खेलै तैंतोस तीन । लोक बेद बिष संग लीन ॥ ३ ॥
खेलै प्रकृति पचीस संग । न्यारा न्यारा धरैं रंग ॥ ४ ॥
सध नर खेलै गुनन माहिं । अधर बस्तु कोउ लखै नाहिं ॥ ५ ॥
जुगल जोरि दोउ रहै साध । जुग जुग लिख जो दोन्ह हाथ ॥ ६ ॥
बाकी निकसै पकरि लेइ । बहुरि बहुरि जम त्रास देइ ॥ ७ ॥
कहै कबीर नर अजहुँ चेत । छाड़ खेल धर सद्यद हेत ॥ ८ ॥

॥ शब्द २६ ॥

सखि आज हमारे गृह बसंत ।

सुख उपज्यौ अब मिले कंत ॥ टेक ॥

पिया मिले मन भयो अनंद, दूरि गये सब दोष दुंद ।
अब नहिं व्यापै संस' साग, पलपल दरसन सरसभोग ॥१॥
जहँ बिनकर बाजे बजै बैन, निरखि देखतहँ बिनानैन ।
धुनि सुन थाक्यो चपलचित्त, पल न बिसारौ देखाँ नित ॥२॥
जहँ दीपक जेहि बरै आगि, सिवसनकादिक रहै लागि ।
कहै कबीर जहँ गुरु प्रताप, तहँ तो नाहीं पुन पाप ॥३॥

॥ शब्द २७ ॥

तुम घट बसंत खेलो सुजान । सत्त सबद मैं धरो ध्यान ॥ टेक ॥
एक ब्रम्ह फल लगे दाय । सुबुधिकु बुधि लखि लेहु साय ॥ १ ॥
बि५ फल खावै सब संसार । अमृत फल साधु करै अहार ॥२॥
पाँच पचीस जहँ फूले फूल । भर्म भँवर डारि रहे भूल ॥ ३ ॥
काम क्रोध दोउ लागे पात । नर पसु खाहिं कोइ ना अघात ॥४॥
जहँ नौ द्वारे औ दस जुवार । तहँ सींचन हारा है मुरार ॥५॥
मेरे मुक्ति बाग मैं सुख निधान । देखै सो पावै अयन जान ६
संत चरन जो रहै लाग । वह देखै अपना मुक्ति बाग ॥७॥
कहै कबीर सुख भयो भोग । एक नाम बिन सकल रोग ॥ ८ ॥

॥ शब्द २८ ॥

चाचरी खेलो हो, समझि मन चाचरि खेलो ॥ टेक ॥
चाचरि खेलो संत मिलि, चित चरन लगाई ।
सत संगत सत भाव करि, सुख मंगल गाई ॥ १ ॥

(१) संसय । (२) जैसे । (३) बैन । (४) भंडार । (५) घर ।

यह जग जम की खान है, या को न पतीजै ।
 सतगुरु सयद बिचारि ले, तो जुग जुग जीजै ॥ २ ॥
 जनम जनम भरमन रह्यो, जिय नेक न धूँकेव ।
 बीरासी के खेल मैं, निज पंथ न सूँकेव ॥ ३ ॥
 एक कनक और कामिनी, इन सँग मन बंधा ।
 अंत नरक ले जातु हैं, चीन्है नहिँ अंधा ॥ ४ ॥
 तीन लोक चाचरि रची, इन तीनों देवा ।
 सुर नर मुनि और देवता, करें इन की सेवा ॥ ५ ॥
 चौथा पद नहिँ जानहीं, भूले भ्रम माया ।
 सेवक की सेवा करें, साहिय बिसराया ॥ ६ ॥
 यह औसर अथ जातु है, चेतो नर प्रानी ।
 आदि नाम चित दृढ़ गहो, छूटे जम खानी ॥ ७ ॥
 खेला सुरत सम्हारि के, सुकिरत उर राखो ।
 प्रेम मगन बहु प्रीति से, अमृत रस चाखो ॥ ८ ॥
 नाद मृदंग सम्हारि, तार दोउ संग मिलावो ।
 आदी मूल बिचारि के, निज धुन उपजावो ॥ ९ ॥
 निसि बासर खेला सदा, जा तैं लो लगे ।
 पिय सेती परिचय करो, सकलै भ्रम भागै ॥ १० ॥
 सील सँतोष को अरगजा, सय अंग लगावो ।
 काम क्रोध मद लाभ, अथीर गुलाल उढावो ॥ ११ ॥
 नचै नवेली नारि, सबै मिलि के इक ठौरा ।
 चाचरि खेला प्रीति से, छूटे सय औरा ॥ १२ ॥

पिचुकारी भरि अगर बास, खेलो पिय संगी ।
 महकै बास सुबास, खेल लागे अति रंगी ॥ १३ ॥
 छूटै बिषय बिकार, सबै भीसागर केरा ।
 सुख सागर में घर करै, फिर होइ न फेरा ॥ १४ ॥
 खेल संत सुजान, सोई या गति को जानै ।
 अनजाने बादै सबै, कोइ नेक न मानै ॥ १५ ॥
 कहै कबीर बिचारि के, छाड़ो सब आसा ।
 ऐसी बाब्रि खेलई, सोई निज दासा ॥ १६ ॥

॥ अष्ट २६ ॥

मन रंगी खेलै घमार, तीन लोक में सार ॥ टेक ॥
 काहू को पाताल पठावा, काहू को आकास ।
 काहू को बैकुण्ठ देतु है, फिरि मृत लोक की आस ॥ १७ ॥
 सुर नर मुनि सबही को छलिया, काम क्रोध के संग ।
 छंतर और कहै कछु औरै, करत सयन मन भंग ॥ २ ॥
 निसि बासर ममता उपजावत, बाजी देन भुलाइ ।
 चौरासी पिचुकारी मारत, जनम जनम भरमाइ ॥ ३ ॥
 पट दरसन पाखंड छानवे, भर्म पथी संसार ।
 वेद पुरान सबै मिलि गावन, करम लगाये लार ॥ ४ ॥
 ज्ञानी गुनी चतुर कथि बाँधे, माया रसरी डारि ।
 पछा पछी खेलत सब कोऊ, डारे पकरि पछार ॥ ५ ॥
 आँधर करि राखे सबहिन को, नैनम डारि अघोर ।
 काल कुटिल जो छलयल मारे, नेक न या को पोर ॥ ६ ॥

खेलि न जानै खेलै निसि दिन, सुधि बुधि गई हिराय ।
 जिभ्या के लंपट नर भौंदू, मानुष जनम गँवाय ॥ ७ ॥
 चीन्हो रे नर प्रानी या को, निमि दिन करत अँदोर ।
 होइ साह सब को घर मूसन, तीनि लोक को चोर ॥ ८ ॥
 सतगुरु सबद सत्त गहि निज करि, जा तँ संसय जाइ ।
 आवागवन रहित हूँ तेरो, कहै कबीर समुझाय ॥ ९ ॥

॥ शब्द ३० ॥

मेरो साहिब आवनहार, होरी मैं खेलैंगो ॥ टेक ॥
 करनी के कलससँजोय सकल विधि, प्रीति पावरो डारी ।
 चरन पखारि चरनामृत लेइँ, मन को मान उतारी ॥ १ ॥
 तन मन धन सब अर्पन करिहौँ, बहु विधि आरत साज ।
 प्रेम मगन हूँ होरी खेलैँ, मेटैँ कुल को लाज ॥ २ ॥
 धोखा धूरि उड़ाइ सरोर तँ, ज्ञान गुलाल प्रकास ।
 पारस पान लेउँ सतगुरु से, मेटैँ दूसर आस ॥ ३ ॥
 दया धरम कै कैसर चोरैँ, भाव भगति पिचुकारी ।
 सत्त सुक्रित अघोर अरगजा, देहैँ पिय पर डारी ॥ ४ ॥
 दास कबीर मिले मोहिँ सतगुरु, फगुवा दोन्हो नाम ।
 आवागवन की मिटी कल्पना, पायो आनंद धाम ॥ ५ ॥

—:—

मंगल

॥ शब्द १ ॥

अब हम आनंद को घर पाये ।

जब तँ दया भई सतगुरु की, अभय निसान उड़ाये ॥१॥

काम क्रोध की गागर फोड़ी, ममता नीर बहाये ।

तजि परपंच वेद विधि किरिया, चरन कँवल चिन लाये ॥२॥

पाँच तत्त कर तन कै गुदरिया, सुरत कै टोप लगाये ।

हृद घर छोड़ बेहृद घर आसन, गगन मंडल मठ छाये ॥३॥

चाँद न सूर दिवस ना रजनी, तहाँ जाइ लौ लाये ।

कहै कबीर कोइ पिय की प्यारो, पिया पिया रहि लाये ॥४॥

॥ शब्द २ ॥

अखंड साहिब का नाम, और सब खंड है ।

खंडित मेरु सुमेरु, खंड ब्रह्मंड है ॥ १ ॥

थिर न रहै धन धाम, सो जीवन धंध है ।

लख चौरासी जीव, पड़े जम फंद है ॥ २ ॥

जा का गुरु से हेत, सोई निर्वन्ध है ।

उन साधन के संग, सदा आनन्द है ॥ ३ ॥

चंचल मन थिर राखु, जवै भल रंग है ।

तेरे निकट उलट भारि पीव, सो अमृत गंग है ॥ ४ ॥

दया भाव चित राखु, भक्ति को अंग है ।

कहै कबीर चित चेत, सो जगत पतंग है ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

सुनो सुहागिनि नारि, प्यार पिय से करे ।

ये बिले' व्योहार निन्हें, तुम परिहरें ॥ टेक ॥ १ ॥

(१) बायल, बेमनलव ।

दिनाँ चार को रंग, संग नहिं जायगा ।
 यह तो रंग पतंग', कहाँ ठहरायगा ॥ २ ॥
 पाँच चोर बड़ जोर, कुसंगी अति घने ।
 ये ठगियन जिव संग, मुसत घर निसि दिने ॥ ३ ॥
 सोवत जागत रैन, दिवस घर मूसहीं ।
 ठाढ़े खड़े पुठवार', भली बिधि लूटहीं ॥ ४ ॥
 इन ठगियन को राव', पकड़ि सो लाजिये ।
 जो कहुं आवै हाथ, छाड़ि नहिं दीजिये ॥ ५ ॥
 चौथे घर डक गाँव, ठाँव पिव को बसै ।
 बासा दस के मट्ठ, पुरुष डक तहँ हँसै ॥ ६ ॥
 होत है सिंध बमोर, संख धुनि अति घनी ।
 तन्ती' की भनकार, बजत है भिनभिनी ॥ ७ ॥
 महरम होय जो संत, सोई भल जानई ।
 कहै कबीर समुझाय, सत्त करि मानई ॥ ८ ॥

॥ शब्द ४ ॥

सुरत सरोवर न्हाइ के मंगल गाइये ।
 दर्पन सबद निहारि, तिलक सिर लाइये ॥ १ ॥
 चल हंसा सतलोक, बहुत सुख पाइये ।
 परस पुरुष के चरन, बहुरि नहिं आइये ॥ २ ॥
 अमृत भोजन तहाँ, अमो अचवाइये ।
 मुख में सेत तबूल, सबद लौ लाइये ॥ ३ ॥
 पुहुप अनूपम वास, घर हंस चलीजिये ।
 अमृत कपड़े ओढ़ि, मुकुट सिर दोजिये ॥ ४ ॥

(१) पर लफड़ी जिस से कच्चा लाल रंग निकला है। (२) ज़बरदस्त।
 (३) सरबल। (४) मारंगी।

वह घर बहुत अनन्द, हंसा सुख लीजिये ।
 बदन मनोहर गात, निरखि के जीजिये ॥ ५ ॥
 दुति' बिन मसि' बिन अंक, सो पुस्तक बाँचिये ।
 बिन कर ताल बजाय, चरन बिन नाचिये ॥ ६ ॥
 बिन दीपक उँजियार, अगम घर देखिये ।
 खुलि गये सबद किवाड़, पुरुष से भेटिये ॥ ७ ॥
 साहिय सन्मुख होइ, भक्ति चित लाइये ।
 मन मानिक संग हंस, दरस तहँ पाइये ॥ ८ ॥
 कहै कबीर यह मंगल, भागन पाइये ।
 गुरु संगत लौ लाय, हंसा चलि जाइये ॥ ९ ॥

॥शब्द ५ ॥

अगमपुरी को ध्यान, खबर सतगुरु करी ।
 लीजे तत्त बिचार, सुरत मन मैं धरी ॥ १ ॥
 सुरत निरत दोउ संग, अगम को गम कियो ।
 सबर बिबेक बिचार, छिमा चित मैं दियो ॥ २ ॥
 गुरु के सबद लौ लाय, अगोचर घर कियो ।
 सबद उठै भनकार, अलख तहँ लखि लियो ॥ ३ ॥
 अलख लखे लौ लाय, डोरि आगे धरे ।
 जगमगार वह देन, कल हवा करो ॥ ४ ॥
 सतगुरु डोरी लाय, पुकारैं जीव को ।
 हंसा चले सँभालि, मिलन निज पाव को ॥ ५ ॥
 मंगल कहै कबीर, सो गुरुमुख पास है ।
 हंसा आये लोक, अमर घर बास है ॥ ६ ॥

॥ शब्द ६ ॥

तुम साहिब बहुरंगी, रँग बहुतै किये ।
 कव के बिछुड़े हंस, बाँहि गहि अब लिये ॥ १ ॥
 प्रथम पठाये छाप, सुरत से लीजिये ।
 पाइ परवाना पान, चरन चित दीजिये ॥ २ ॥

॥ छंद ॥

पुरब पच्छिम देख दक्खिन, उत्तर रदै ठहराइ के ।
 जहाँ देखो गम्भ गुरु की, तहीं तत्त समाइ के ॥ ३ ॥
 सुरत उत्तर पास किलकै, पुहुप दीप तँ आइके ।
 लाइ लौ की डोरि बाँधै, संत पकरै जाइके ॥ ४ ॥
 पकर चरन कर जोरि, निछावर कीजिये ।
 तन मन धन औ प्रान, गुरु को दीजिये ॥ ५ ॥
 तब गुरु होहि दयाल, दया चित लावई ।
 गहि हंसा की बाँहि, सु घर पहुँचावई ॥ ६ ॥

॥ छंद ॥

दया करि जव मुक्ति दीन्हो, गह्यो तत्त बनाइ के ।
 परम प्रीतम जानि अपने, हृदय लिया समाइ के ॥ ७ ॥
 जरा मरन को भय नसायो, जवै गुरु दाया करी ।
 कर्म भर्म को छाड़ि जिय तँ, सकल व्याधा परिहरी ॥ ८ ॥

तुम मेरे परम सनेही, हंसा घर चलौ ।
 छाड़ि विषय भौसागर, हंस हंसन मिलौ ॥ ९ ॥
 सूरत निरत विचार, तत्त पद सार है ।
 बैठु हंस सत लोक, नाम आधार है ॥ १० ॥

॥ छंद

सत्त लोक अमान हंसा, सुखसागर सुख बास है ।
सत्त सुकिरत पुरुष राजै, तहाँ नहिँ जम त्रास है ॥११॥
अजर अमर जो हंस हूँ, सुनि सत्त सबद चित लाइ के ।
आवागवन से रहित होवै, कहै कबीर समुक्ताइ के ॥१२॥

॥ शब्द ७ ॥

देखि माया को रूप, तिमिर आगे फिरै ।
तेरी भक्ति गई बड़ि दूर, जीव कैसे तरै ॥ १ ॥
जुन्हरी डार रस होय, तहू गुड़ ना पकै ।
कोदक' कर्म कमाय, भक्ति बिन ना तरै ॥ २ ॥
ईखहि से गुड़ होय, भक्ति से क्रम कटै ।
जम को बंद न होय, काल कागद फटै ॥ ३ ॥
कहै कबीर विचारि, बहुरि नहिँ आवई ।
लोक लाज कुल मेदि, परम पद पावई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ८ ॥

साध संगत गुरुदेव, उहाँ चलि जाइये ।
भाव भक्ति उपदेस, तहाँ तैं पाइये ॥ १ ॥
अस संगत जरि जाव, न चरचा नाम की ।
दूलह बिना बरान, कहो किस काम की ॥ २ ॥
दुबिधा को करि दूर, सतगुरु ध्याइये ।
आन देव की सेव, न चित्त लगाइये ॥ ३ ॥
आन देव की सेव, भली नहिँ जीव को ।
कहै कबीर विचारि, न पावै पाव को ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

दुविधा को करि दूर, धनी को सेव रे ।
 तेरी भौसागर मैं नाव , सुग्त से खेव रे ॥ १ ॥
 सुमिरि सुमिरि गुरु नाम, चिरंजिव जीव रे ।
 नाम खाँड़ बिन मोल, घोल कर पोव रे ॥ २ ॥
 काया मैं नहि नाम, गुरु के हेत का ।
 नाम बिना बेकाम, मटोला खेन का ॥ ३ ॥
 ऊँचे बैठि कचहरी, न्याव चुकावते ।
 ते माटी मिलि गये, नजर नहि आवते ॥ ४ ॥
 तू माया धन धाम , देखि मत भूल रे ।
 दिना चार का रंग , मिलैगा धूल रे ॥ ५ ॥
 बार बार नर देह, नहीं यह बीर रे ।
 चेत सके तो चेत, कहै कव्यीर रे ॥ ६ ॥

॥ शब्द १० ॥

यह कलि ना कोइ अपना, का संग बोलिये रे ।
 ज्येँ मैदानी रुख, अकेला डोलिये रे ॥ १ ॥
 माया के मद माते, सुनै नहि कोई रे ।
 क्या राजा क्या रंक, बियाकुल दोई रे ॥ २ ॥
 माया का बिस्तार, रहै नहि कोई रे ।
 ज्येँ पुरइनि पर नीर, थीर नहि होई रे ॥ ३ ॥
 बिष बोयो संसार, अमृत कस पावै रे ।
 पुरय जन्म तेरो कीन्ह, दोस कित लावै रे ॥ ४ ॥
 मन आवै मन जावै, मनहि बटोरो रे ।
 मन बुड़वै मन तारै, मनहि निहोरो रे ॥ ५ ॥

(१) डेला । (२) मारि । (३) कोई । (४) समझाओ, राजी करो ।

कहै कबीर यह मंगल, मन समझावो रे ।
 समझि के कहैं पयाम', बहुरि नहिं आवो रे ॥ ६ ॥
 ॥ शब्द ११ ॥

करिके कौल करार, आया था भजन को ।
 अब तू मुख गँवार, कुँवे लगा परन को ॥ १ ॥
 पखो माया के जाल, रह्यो मन फूलि के ।
 गर्भ बास की त्रास, रह्यो नर भूलि के ॥ २ ॥
 ऊँची अटगिया पौल, चढ़ौ चढ़ि गिरि परौ ।
 सतगुरु बुधि लइ नाहिं, पार कैसे परौ ॥ ३ ॥
 सतगुरु होहु दयाल, बाँह मेरी गहौ ।
 बूढ़त लेव उबारि, पार अब के करौ ॥ ४ ॥
 दास कबीर सिर नाय, कहै कर जोरि के ।
 इक साहिब से जोरि, सवन से तैरि के ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२ ॥

आरत कीजै आतम पूजा, मत्त पुरष की और न दूजा ॥१॥
 ज्ञान प्रकास दीप उँजियारा, घट घट देखौ प्रान पियारा ॥२॥
 भाव भक्ति और नहिं भेवा, दया सखी करि ले सेवा ॥३॥
 सत संगत मिलि सबद विराजै, धोखा दुंद भरम सब भाजै ॥४॥
 काया नगरी देव बहाई, आनंद रूप सकल सुखदाई ॥५॥
 सुन्न ध्यान सब के मन माना, तुम बैठो आतम अस्थाना ॥६॥
 सबद सुरत ले हृदय बसावो, रूप क्रांति को दूरि बहावो ॥७॥
 कहै कबीर निज रहनि सम्हारी, सदा अनन्द रहै नर नारो ॥८॥

॥ शब्द १३ ॥

कहै कबीर सुनो हो साधो, अमृत बचन हमार ।
 जो भल चाहो आपनो, परखो करो बिचार ॥ १ ॥

जुगन जुगन सब से कही, काहु न दोन्हो कान ।
 सुर नर मुनि मद माते, झूठे भर्म भुलान ॥ २ ॥
 बरम्हा भूले परथमै, आद्या' का उपदेस
 करता चोन्हि पखो नहीं, लायो विरह बिदेस ॥ ३ ॥
 जे करता तैं ऊपजे, ता से परि गया बीच ।
 अपनी बुद्धि विवेक विन, सहज बिमाई' मोच ॥ ४ ॥
 अपनी फहम' रु उक्ति' करि, बिबि' अच्छर धरयो नाम ।
 सद्यद अनाहद थापिया, सिरजे वेद पुरान ॥ ५ ॥
 वेद कथे उन उक्ति तैं, बिस्नु कथे बहु रूप ।
 सहस नाम संकर कथे, जोग जुगन अँध कूप ॥ ६ ॥
 इनकी माड़नि मड़ि' रही, चहुँ दिसि रोकी बाट ।
 फैल गई सब सृष्टि में, समझ न मेंटो फाट' ॥ ७ ॥
 सनकादिक तप ठानिया, तत्त साधना कीन ।
 गगन सुन्न में पैठि के, केनहद धुन लौओन ॥ ८ ॥
 अपना तत्त जो साधि के, लीन्ही जाति निकास ।
 जाति निरंजन थापिया, भई सवन कि उपाम ॥ ९ ॥
 यहि में तैं सब मत चले, यही चल्यो उपदेस ।
 निश्चै गहि निर्भय रहौ, सुन परम तत्त संदेस ॥ १० ॥
 सनकादिक मुनि नारदा, व्यास रु गोरखदत्त ।
 यही भते सब भूति के, भूले कोटि अनन्त ॥ ११ ॥
 धू प्रह्लाद भमोखना, भर्थरि गोपीचंद ।
 जहँ लौं भक्ता जवन में, सब उरभे यहि फंद ॥ १२ ॥

(१) याग माया । (२) मोल लो । (३) समझ । (४) युक्ति । (५) दे । (६) दाय
 चल रही है । (७) फाँसी, जाल ।

या फंन्दा तैं नीकसहू, मानो यचन हमार ।
 उलटि अपनपौ चीन्हहू, देखहु नजरि पसार ॥ १३ ॥
 केहि गावो केहि ध्यावहू, छोड़हु सकल धमार' ।
 हम हिरदे सब के बसे, कस सेवो सून उजाड़ ॥ १४ ॥
 दूरहि करता थापि के, करी दूर को मान ।
 जो करता दूरे हुते, तौ को जग सिरजे आन ॥ १५ ॥
 जो जानो यहँ है नहीं, तौ तुम धावो दूर ।
 दूरि के ढोल सुहावने, निस्फल मरो बिसूर' ॥ १६ ॥
 दुर्लभ दरसन दूर के, नियरे सद सुख वास ।
 कहै कबीर मोहिँ व्यापिया, मत दुख पावे दास ॥ १७ ॥
 आप अपनपौ चीन्हहू, नखसिख सहित कबीर ।
 आनँद मंगल गावहू, होहि अपनपौ थोर ॥ १८ ॥

॥ शब्द १३ ॥

सतगुरु सबद कमान, सुरत गाँसो भई ।
 मारत हियरे बान, पीर भारी भई ॥ १ ॥
 निसि दिन सालै घाव, नींद आवे नहीं ।
 पिया मिलन की आस, नैहर भावै नहीं ॥ २ ॥
 चढ़ि गैलूँ गगन अटारी, तो दीपक बारि के ।
 होइ गैलै पुरुष से भेट, तो तन मन हारि के ॥ ३ ॥
 कागा बोली बोल, कहाँ लगि भाखिये ।
 कहै कबीर धर्मदास, तीन गुन त्यागिये ॥ ४ ॥

॥ शब्द १४ ॥

बंदी छोर कबीर, भक्ति मोहिँ दीजिये ।
 बाँहि गहे की लाज, गहर' मत कीजिये ॥ १ ॥

कागा बरन लुड़ाइ, हंस बुधि लाइये ।
 पूरन पद को देव, महा सुख पाइये ॥ २ ॥
 जो तुम सरनै आयौ, बचन डक मानिये ।
 भौसागर बहै जार, सुरत निज राखिये ॥ ३ ॥
 दसो द्वार बिकार, नवो नाटिका बहै ।
 सुरत नहीं ठहगाय, लगन कैसे लगै ॥ ४ ॥
 जैसे मान सनेह, सदा जल में रहै ।
 जल बिन त्यागै, प्रान लगन ऐसी लगै ॥ ५ ॥
 मेटौ सकल बिकार, भार मिर लेइयो ।
 तुमहि मैं रहौं समाइ, आपन करि लेइयो ॥ ६ ॥
 कहै कबीर बिचारि, सोई टकमार है ।
 हंस चलै सतलाक, तो नाम आधार है ॥ ७ ॥

मिश्रित

॥ शब्द १ ॥

समुझि बूझि के देखो गुइयाँ, भीतर यह क्या ब्याले है ॥१२
 बलि बलि जाउँ आपने गुरु की, जिन यह भेद को खाले है ॥
 आदम मैं वह आप समाया, जो सब रँग मैं घाले है ॥३॥
 कहत कबीर जगे का सुपना, कहि न सकै वह ब्याले है ॥४

॥ शब्द २ ॥

हम ऐसा देखा सतगुरु संत सिपाही ॥ टेक ॥
 सत्त नाम कौ पटा लिखायो, सतगुरु आज्ञा पाई ।
 घौरासी के दुख मिटे, अनुभौ जागीरी पाई ॥ १ ॥

सुरत सौंगरा' साँग' समुझ को, तन की तुपक बनाई ।
 दम को दारु सहज को सीसा, ज्ञान के गज ठहकाई ॥२॥
 सील सँतोष प्रेम की पथरी, चित चक्रमरु चमकाई ।
 जेग को जामा बुद्धि मुद्रिका, प्रीति पियाला पाई ॥३॥
 सत कै सेल्ह' जुगत कै जमधर', छिना ढाल ठनकाई ।
 मोह मोरचा पहिले माख्यो, दुहिधा मारि हटाई ॥ ४ ॥
 सत्त नाम कै लगा पलीता, हरहर होत हवाई ।
 गम गोला गढ़ भीतर मारयो, भरम के बुर्ज ढहाई ॥५॥
 सुरत निरत कै घेरा दीन्हो, बंद कियो दरवाजा ।
 सचद सूरमा भीतर पैठा, पकरि लियो मन राजा ॥६॥
 पाँचो पकरे कामदार जो, पकरी ममता माई ।
 दास कबीर चढ़यो गढ़ ऊपर, अभय निसान बजाई ॥७॥

॥ शब्द ३ ॥

दिन रातै गावो मेरी सजनी, सतगुरु को सिर नाइ हो ।
 फिर पाछे पछितैहो सजनी, जय जम पकरै आइ हो ॥१॥
 सुख सागर में पगै हो सजनी, दुख को देहु बहाइ हो ।
 भक्ति घाँवर पहरौ सजनी, रैन दिवस गुन गाइ हो ॥२॥
 निरभय अँगिया कसिलेउ सजनी, भयहिं भगावो दूरि हो ।
 प्रीतिलगी साहिब संग सजनी, डारि जगत पर धूरि हो ॥३॥
 प्रेम चुनरिया ओढ़ौ सजनी, सतगुरु दोन्ह रँगाइ हो ।
 जित देखौ तित साहिब सजनी, नैन न रह्यो समाइ हो ॥४॥
 फहम' फुलेल बनाइ के सजनी, सिर में दोन्हो डारि हो ।
 ज्ञान को कँगही लैके सजनी, कर्म केस निरवारु' हो ॥५॥

(१) सौंध की सूत को एक चीज़ बाँधने की । (२) बरछा । (३) बरछी ।
 (४) कटार । (५) समझ वृत्त । (६) छुलभाओ ।

समुझ की पटिया पारो सजनी, चुटिया गुहौ सम्हारि हो ।
 संतोष सहेलरि गुहिले आई, भयिया सहज अपार हो ॥६॥
 दया भाव की टिकुली सजनी, धिरह बीज अनुमार हो ।
 जा को दया न आवै सजनी, परै चौरसी धार हो ॥७॥
 सील कै सँदुर माँग भरु सजनी, सोभा अगम अपार हो ।
 धीरज अंजन आँजी सजनी, छिमा को बँदो लिलार हो ॥८॥
 बेसर बनी बुद्धि की सजनी, मोती बचन सुधार हो ।
 दीन गरीबी रहे गुरन से, सोई गले कै हार हो ॥९॥
 बाजूबन्द बिवेक के सजनी, बहूँटा ब्रम्ह विचारि हो ।
 चाल की चुरियाँ पहिरो सजनी, परख पटीला डारि हो ॥१०॥
 नेह निगरही दुहरी सजनी, कहना अकिल के ढारि हो ।
 मन की मुंदरी पहिरो सजनी, नाम नगीना सार हो ॥११॥
 नाम जपो निसिबासर सजनी, काटै जम कै फाँसि हो ।
 पहिरो चोप चुनरिया सजनी, चित मत करहु उदास हो ॥१२॥
 सत सुकिरत दोउ नूपुर सजनी उठै सयद कनकार हो ।
 पहिरि पचीसो बिलिया सजनी, धरि ल्यो पाँच सम्हार हो ॥१३॥
 तीनों गुन कै अनवट सजनी, गुरु से ल्यो बदलाइ हो ।
 काम क्रोध दोउ सम करि सजनी, अमरलोक कै जाइ हो ॥१४॥
 घर जो बाड़ा कुमति को सजनी, सहर से देव बहाइ हो ।
 पिया जो सोवै महल में सजनी, उन को लेव जगाइ हो ॥१५॥
 येहि बिधि सुन्दर साजि के सजनी, करि ल्यो सोरहो सिंगार हो ।
 पाँच सहेलरि संग ल्यो सजनी, गावो मंगलवार हो ॥१६॥
 पिय भार सोवै महल में सजनी, अगम अगोचर पार हो ।
 अकिल आरसी लैके सजनी, पिय को रूप निहार हो ॥१७॥

बूँधट खोलि कपट कै सजनी, हेरो गुरुन की ओरि हो ।
 पान लेहु मुक्ती को सजनी, जम से तिनुका तोरि हो ॥१८॥
 धिन सतगुरु चरचा के सजनी, सो पुनि बड़े लघार हो ।
 धिना पुरुष की तिरिया सजनी, उन कै झूठ सिंगार हो ॥१९॥
 सो दिन जिन जानो मोरि सजनो, जो गावै संसार हो ।
 यह तो दिन मुक्ती के सजनी, साधो लेहु बिचार हो ॥२०॥
 दास कधीर की धिनती सजनो, सुन लेहु संत सुजान हो ।
 आवागवन न होइ है सजनी, पावो पद निर्वाण हो ॥२१॥

॥ शब्द ४ ॥

अब कोइ खेतिया मन लावै ॥ टेक ॥

ज्ञान कुदर ले खंजर गोड़े, नाम को बीज बोधावै ।
 सुरत सरावन' नय कर फेरै, देखा रहन न पावै ॥ १ ॥
 मनसा खुरपी खेत निरावै, दूय बचन नहिं पावै ।
 कोस पचास इक बधुवा नीचे, जड़ सेखेदि बहावै ॥२॥
 काम क्रोध के बेल बने हैं, खेत चरन को आवैं ।
 सुरत लकुटिया ले फटकारै, भागत राह न पावैं ॥ ३ ॥
 उलटि पलटि के खेत को जातै, पूर किसान कहावै ।
 कहै कधीर सुनो भाई साधो, जय वाघर को पावै ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

अस कोइ मन हिं लोह सम' तावै ॥ टेक ॥

करम जारि के कोइला करि दे, ब्रम्ह अगिन परचावै ।
 ताय तूय के निर्मल करि ले, सोल के नीर बुझावै ॥ १ ॥
 इतनो जोरि जुगत करि लावै, लगन लुहार कहावै ।
 ज्ञान बिबेक जतन से करि ले, जा बिधि अजर भरावै ॥२॥

सुरत निरत की सँझसी करि ले, जुगत निहाई जंमवै ।
 नाम हथौड़ा दृढ़ करि मारै, करम की रेख मिटावै ॥३॥
 पाँच आत्मा दृढ़ करि राखै, यों करि मन समुझावै ।
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, भूआ अर्थ लगावै ॥ ४ ॥

॥ शब्द १ ॥

साधो यह मन है बड़ा जालिम ।

जा को मन से काम परो है, तिसही ह्वेहै मालुम ॥ १ ॥
 मन कारन जो उनको छाया, तेहि छाया में अटके ।
 निरगुन सरगुन मन की बाजो, खरे सयाने भटके ॥२॥
 मन ही चौदह लोक बनाया, पाँच तत्त गुन कोन्हे ।
 तीन लोक जोवन बस कोन्हे, परै न काहू चोन्हे ॥ ३ ॥
 जो कोउ कहै हम मन को मारा, जा के रूप न रेखा ।
 छिन छिन में कितनौ रंग ल्यावै, जे सपनेहु नहिं देखा ॥ ४ ॥
 रसातल डूकड़स ब्रम्हंडा, सच पर अदल चलावै ।
 पट रस में भोगी मन राजा, सो कैसे कै पावै ॥ ५ ॥
 सच के ऊपर नाम निहच्छर, तहँ लै मन को राखै ।
 तब मन की गति जान परै यह, सत कबीर मु व भाखै ॥६॥

॥ शब्द ७ ॥

यह मन जालिम जोर री, बरजे नहिं मानै ॥ टेक ॥
 जो कोइ मन को पकरा चाहै, भागत साँकर तोर ॥ १ ॥
 सुर नर मुनि सच पवि पवि हारे, हाथ न आवै चोर ॥२॥
 जो हंसा सतगुरु कै होई राखै ममता छोर ॥ ३ ॥
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, बचो गुरुन की ओट ॥४॥

॥ शब्द ८ ॥

वाह वाह सरनागति ता की है ॥ टेक ॥

बोल अबोल अडोल अचाहक, ऐसी गतिया जा की है ॥१॥

अंतरंगति मैं भया उजाला, बिन दीपक बिन बांती है ॥२॥
 सुरत सुहागिनि भइ मतवारी, प्रेम सुधा रस चाखी है ॥३॥
 निरखि निरखि अंतर पग धरना, अजब करोखे भाँकी है ॥४॥
 कहै कबीर इक नाम सुमिरि ले, आदि अंत जो साखी है ॥५॥

॥ शब्द ६ ॥

वाह वाह अमर घर पाया है ॥ टेक ॥
 दुख दद काल नहिं व्यापै, आनंद मंगल गाया है ॥१॥
 मूल बीज बिन बिछे बिराजै, सतगुरु अलख लखाया है ॥२॥
 कोटि भानु छवि भया उजारा, हंस हिरम्बर भाया है ॥३॥
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, आवा गवन मिटाया है ॥४॥

॥ शब्द १० ॥

ना मैं धर्मी नाहिं अधर्मी, ना मैं जती न कामी हो ।
 ना मैं कहता ना मैं सुनता, ना मैं सेवरु स्वामी हो ॥१॥
 ना मैं बंधा ना मैं मुक्ता, ना निबँध सरबंगी हो ।
 ना काहू से न्यारा हुआ, ना काहू को संगी हो ॥ २ ॥
 ना हम नरक लोक को जाते, ना हम सुरग सिधारे हो ।
 सबही कर्म हमारा कीया, हम कर्मन तैं न्यारे हो ॥ ३ ॥
 या मत को कोइ बिरला बूझै, सो सतगुरु हो बैठे हो ।
 मत कबीर काहू को थापे, मत काहू को मेटे हो ॥ ४ ॥

॥ शब्द ११ ॥

हीरा वहाँ भँजैये, जहाँ कोइ रतन पारखी पैये ॥ टेक ॥
 बस्तु हमारी अगम अगोचर, जाइ सराफा लैये ।
 जहाँ जाइ जम हाथ पसारै, तहाँ तुम बस्तु छिपैये ॥१॥

मूल के डाँड़ी तत्त के पलरा, ज्ञान के डोर लगैये ।
 मासा पाँच पचीस रती के, तोला तीन तुलैये ॥ २ ॥
 तोल ताल के जमा सुलाखा, तब वा के घर जैये ।
 जीहिर नाम अनादी के रे, तहँ तुम वस्तु दिखैये ॥ ३ ॥
 चलत फिरत मैं बहुतक ठग हँ, तिन को नहिँ दिखलैये ।
 कहै कबीर भाव के सोदा, पूरी गाँठि लगैये ॥ ४ ॥

॥ शब्द १२ ॥

अपनपो आपुहि तैं बिसरो ॥ टेक ॥
 जैसे स्वान' काच मंदिर मैं भ्रम से भूँकि मरो ॥ १ ॥
 ज्यों केहरि' बपु' निरख कूप' जल प्रतिमा' देखि गिरो ॥ २ ॥
 वैसे ही गज' फटिक' सिला' मैं दसनन' आनि अड़ो ॥ ३ ॥
 मरकट' मूठि' स्वाद नहिँ बहुरै, घर घर रटत फिरो ॥ ४ ॥
 कह कबीर नलनो' के सुगना' तोहि कवन पकरो ॥ ५ ॥

॥ शब्द १३ ॥

हरिदरजी का मरम न पाया, जिन यह चोला अजब बनाया १
 पानी की सुई पवन के धागा, आठ मास दस सीवत लागा २
 पाँच तत्त के गुदरी बनाई, चाँद सुरज दुइ थेगलो' लगाई ३
 जतन जतन करि मुकट बनाया, ताबिच होरालाल जड़ाया ४
 आपहि सीवे आप बनावे, प्रान पुरुष को ले पहिरावे ५
 कहै कबीर सोई जन मेरा, या चोले का करै निबेरा ॥ ६ ॥

॥ शब्द १४ ॥

हरि ठग जगत ठगौरी लाई ।

हरि के बियोगी कस जीवै भाई ॥ १ ॥

(१) कुत्ता । (२) बंध । (३) शरीर । (४) कुर्वा । (५) छाया । (६) हाथी ।
 (७) बिलौर । (८) चट्टान । (९) दाँत । (१०) बंदर । (११) मुट्ठी । (१२) नली
 जिससे तोता फसाया जाता है । (१३) मोता । (१४) पैवंद ।

को का को पुरुष कौन का की नारी ।

अकथ कथा जम दुष्ट पसारी ॥ २ ॥

को का को पुत्र कौन का को बापा ।

को रे मरै को सहै संतापा ॥ ३ ॥

ठगि ठगि मूल' सघन कौ लीन्हा ।

राम ठगौरी काहु न चीन्हा ॥ ४ ॥

कहै कबीर ठग से मन माना ।

गई ठगौरी जय ठग पहिचाना ॥ ५ ॥

॥ शब्द १५ ॥

जोगवै निस बारस जोग जती ॥ टेक ॥

जैसे सोना जोगवत सोनरा, जाने देन न एकर रती ॥१॥

जैसे कृपिन कनी को जोगवै, क्या राजा क्या छत्रपती ॥२॥

जैसे ब्रम्हा विस्नुहिं जोगवत, सिव को जोगवत पारधनी ॥३॥

जैसे नारि पुरुष को जोगवत, जरति पिया संग होत सती ॥४॥

कहै कबीर सुनो भाई साधो, कोइ कोइ बचि गये सूर सती ५

॥ शब्द १६ ॥

डुगडुगी सहर में बाजी हो ॥ टेक ॥

आदि साहिब अदली आये, पकरे पंडित काजी हो ॥१॥

कोतवालन के गुरुआ पकरे, पाँच पचीस समाजी हो ॥२॥

कहै कबीर सुनो भाई साधो, रैयत होगई राजो हो ॥३॥

॥ शब्द १७ ॥

रिमझिम बरसै बूंद सुरतिया ।

का से कहैं दिल आपन ब्रतिया ॥ १ ॥

अब सुन सजनी सेरोवर गैलै ।

सुखाइ कँवल कम्हिलाइ गैलै ॥ २ ॥

औघट घटिया लगलि मोरी नैया ।

ताहि पै चढ़लै पाँचो भैया ॥ ३ ॥

अब सुन सजनी भैलै मतवार ।

कस जाइय औघट के पार ॥ ४ ॥

चाँद सुरज तुम मोरे साथी ।

सैयाँ दरबख्वा हमार पत राखी ॥ ५ ॥

दास कबीर गावै निरगुन ज्ञानियाँ ।

समुझि बिचारि जिय लेइ सरनियाँ ॥ ६ ॥

॥ शब्द १८ ॥

कँवल से भँवरा विछुड़ल हो, जहँ कोइ न हमार ॥ १ ॥

भौजल नदिया भयावन हो, बिन जल कै धार ॥ २ ॥

ना देखूँ नाव न बेड़ा हो, कैसे उतरव पार ॥ ३ ॥

सत्त की नैया सिर्जावल हो, सुकिरत करि यार ॥ ४ ॥

गुरु के सबद की नहरिया हो, खेइ उरतव पार ॥ ५ ॥

दास कबीर निरगुन गावल हो, संत लेहु बिचार ॥ ६ ॥

॥ शब्द १९ ॥

आऊँगा न जाऊँग मरूँगा न जिऊँगा ।

गुरु के साथ अमी रस पिऊँगा ॥ १ ॥

कोइ फेरै माला कोइ फेरै तसबी ।

देखा रे लोगो दोनोँ कसबी ॥ २ ॥

कोई जावै मक्के कोई जावै कासी ।

दोऊ के गल बिच परि गइ फाँसी ॥ ३ ॥

कोइ पूजै मड़ियाँ कोइ पूजै गोरों ।

दोऊ की मतियाँ हरि लई चोरों ॥ ४ ॥

कहत कबीर सुनो नर लोई ।

हम न किसी के न हमारा कोई ॥ ५ ॥

॥ शब्द २० ॥

चली चल मग मैं का भरमावै ॥ टेक ॥

नई बहुरिया गौने आई, लहर लहर' होय ।

इन बातन मैं नफा नहीं है, सूधी सड़क टटोय' ॥ १ ॥

तोहूँ बहुरिया अजहूँ न मानै, डाखो खलक बिलोय ।

पिया मिले पीहर को रोवै, लाज न आवै तोहि ॥ २ ॥

सुंगी ऋषि तो बन के बासो, वो भी डारे खोय ।

नैन मारि पलकौं मैं राखे, पल मैं डारे बिगोय ॥ ३ ॥

सोहं नारी अधिक दुलारी, पिय की प्यारी होय ।

कहै कबीर सुनो भाई साधो, जबरदस्त की जोय ॥ ४ ॥

॥ शब्द २१ ॥

ज्ञान आरती इमरित बानी, पूरन ब्रम्ह लेख पहिचानी ॥

जिनके हुहुम पवन अरु पानी, तिनकी गति कोइ बिलें जानी ॥

तिरदेवा मिलि जाति बखानी, निरंकार की अकथ कहानी ॥

दृष्टि बिना दुनिया बौरानो, भरम भरम भटकै नर खानो ॥

जो आसा सब हिलिमिलिठानो, साहित्य छाड़ि जम हाथ बिकानो ॥

गगन बाव गरजै असमाना, निःचै धुजा पुरुष फहराना ॥

कहै कबीर सोइ संत सियाना, जिन जिन सरद गुरुन के माना ॥

॥ शब्द २२ ॥

हीरा नाम अमोल है, रहै घट घट थोरा ।

सिद्धो आसन सोधि के, बैठै वहि तोरा ॥ १ ॥

(१) पोशाक—भाव कपड़े की समझाल न हो सकने से लहर भरर चलने का है । (२) टटोल, ढूँढ़ ।

गंग जमुन के रेत पर, बहै भिरि भिरि नीरा ।
 पुरब सोधि पच्छिम गये, करिकै मन धीरा ॥ २ ॥
 बिरहिनि बाजे बाँसुरी, सुनि गइ मोर पोरा ।
 आठ पहर बाजत रहै, अस गहिर गँभीरा ॥ ३ ॥
 हीरा झलकै द्वार पर, परखै जोड़ सूरा ।
 कहै कबीर गुरु गम्भ से, पहुँचै केइ पूरा ॥ ४ ॥

॥ शब्द २३ ॥

जग में सोइ वैराग कहावै ॥ टेक ॥
 आसन मारि गगन में बैठै, दुर्मति दूर बहावै ॥ १ ॥
 भूख प्यास औ निद्र साधै, जियते तनहिँ जरावै ॥ २ ॥
 भीसागर के भरम मिटावै, चौरासी जिति' आवै ॥ ३ ॥
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, भाव भक्ति मन लावै ॥ ४ ॥

निरख प्रबोध की रमैनी

(१)

अस सतरुगुबोले सत बानी। धन धन सत्त नाम जिन जानी ॥
 नाम प्रतीति भई सत्र संता । एक जानि के मिटे अनंता ॥
 अनंत नाम जब एक समाना । तत्र ही साध परम पद जाना ॥
 बिरला संत परम गति जानै । एक अनंत सो कहा बखानै ॥
 सत्र तैं न्यारा सब के माहीं । माँझी सतगुरु दूजा नाहीं ॥
 सत्त नाम जा के धन होई । धन जीवन ताही को सोई ॥

॥ दोहा ॥

जिनके धन सतनाम है, तिन का जीवन धन्न ।

तिन को सतगुरु तारहीं, बहुरि न धरई तन्न ॥ १ ॥

(१) जीत कर ।

सत्तनाम की महिमा जानै । मन बच करमै सरना आनै ॥
 एक नाम मन बच करि लेई । बहुरि न या भवजल पग देई ॥
 जोग जज्ञ जप तप का करई । दान पुत्र तैं काज न सरई ॥
 देवो देवा भूत परेता । नाम लेत भाजै तजि खेता ॥
 टोना टामन पूजा पाती । नाम लेत सहजै तरि जाती ॥
 जो इच्छा आवै मन माहीं । पुरवै तुरत बिलंब कटु नाहीं ॥
 सो सतनाम हृदय अनुरागी । सो कहिये साचा बैरागी ॥
 जब लग नाम प्रतीत न करई । तब लग जनम जनम दुख भरई ॥

॥ दोहा ॥

करीर महिमा नाम की, कहना कही न जाय ।

चार मुक्ति औ चार फल, और परम पद पाय ॥ २ ॥
 सत्तनाम है सब तैं न्यारा । निर्गुन सगुन सबद पसारा ॥
 निर्गुन बीज सगुन फल फूला । साखा ज्ञान नाम है मूला ॥
 मूल गहे तैं सब सुख पावै । डाल पात में मूल गँवावै ॥
 सतगुरु कही नाम पहिचानी । निर्गुन सगुन भेद बखानी ॥

॥ दोहा ॥

नाम सत्त संसार में, और सकल है पोच' ।

कहना सुनना देखना, करना सोच असेच ॥ ३ ॥
 सबही झूठ झूठ करि जाना । सत्तनामको सत कर माना ॥
 निसिबासर इक पल नहि न्यारा । जाने सतगुरु जानन हारा ॥
 सुरत निरत ले राखै जहवाँ । पहुँचै अजर अमर घर तहवाँ ॥
 सत्तलोक को देय पयाना । चार मुक्ति पावै निर्वाणा ॥

॥ दोहा ॥

सत्तलोक सब लोक-पति, सदा समीप प्रमान ।

परम जोति से जोति मिलि, प्रेम सरूप समान ॥ ४ ॥

अंस नाम तँ फिरि फिरि आवै । पूरन नाम परम पद पावै ॥
 नहिँ आवै नहिँ जाय सो प्रानी । सत्तनाम की जेहि गति जानी ॥
 सत्तनाम मँ रहै समाई । जुग जुग राज करै अधिकाई ॥
 सत्त लोक मँ जाय समाना । सत्त पुरुष से भया मिलाना ॥
 हंस सुजान हंस ही पावा । जोग संतायन भया मिलावा ॥
 हंसा सुघर दरस दिखलावा । जनम जनम की भूख मिटावा ॥
 सुरत सुहागिन आगे ठाढ़ी । प्रेम सुभाव प्रीति अति बाढ़ी ॥
 पुहुप दोप मँ जाइ समाना । घास सुग्रास चहूँ दिसि आना ॥

॥ दोहा ॥

सुख सागर सुख बिलसही , मानमरोवर न्हाय ।

कोटि काम सी कामिनी , देखत नैन अघाय ॥५॥

सूरत नाम सुनै जय काना । हंसा पावै पद निर्याना ॥
 अथ तो कृपा करी गुरु देवा । ता तँ सुफल भई सद्य सेवा ॥
 नाम दान अथ लेख सुभागी । सत्तनाम पावै बड़ भागी ॥
 मन घचक्रमचित निस्चय राखै । गुरु के सद्यद अमीर सचाखै ।
 आदि अंत कै भेदै पावै । पवन आड़ मँ ले बैठावै ॥
 सद्य जग भूट नाम इक साचा । स्वास स्वास मँ साचा राचा ॥
 भूटा जानि जगत सुख भोगा । साचा साधू नाम सँ जोगा ॥
 यह तन माटी इन्द्री छारी । सत्तनाम साचा अधिकारी ॥
 नाम प्रताप जुगै जुग भखी । साध संत ले हिरदे राखी ॥

॥ दोहा ॥

महिमा बड़ी जो साध की, जा के नाम आधार ।

सतगुरु केरी दया तँ, उतरे भौजल पार ॥ ६ ॥

(२)

प्रथम एक जो आपै आप । निराकार निर्गुन निर्जाप ॥
 नहिँ तय भूमी पवन अकासा । नहिँ तय पावक नीर निवासा ॥

नहिँ तब पाँच तत्त गुन तीनी । नहिँ तब सृष्टी माया कीनी ॥
 नहिँ तब आदि अंत मधितारा । नहिँ तब अंध धुंध उजियारा ॥
 नहिँ तब ब्रम्हा बिस्नु महेसा । नहिँ तब सूरज चाँद गनेसा ॥
 नहिँ तब मच्छ कच्छ बाराहा । नहिँ तब भादौ फागुन माहा ॥
 नहिँ तब कंस कृष्ण बलि बावन । नहिँ तब रघुपति नहिँ तब रावन ॥
 नहिँ तब सरगुन सकल पसारा । नहिँ तब धारे दस औतारा ॥
 नहिँ तब सर सुति जमुना गंगा । नहिँ तब सागर समुद्र तरंगा ॥
 नहिँ तब तीरथ ब्रत जग पूजा । नहिँ तब देव दैत अरु दूजा ॥
 नहिँ तब पाप पुन्य गुरु सीखा । नहिँ तब पढ़ना गुनना लीखा ॥
 नहिँ तब बिद्या वेद पुराना । नहिँ तब भये कतेय कुराना ॥

॥ दोहा ॥

कहै कधीर बिचारि के, तब कछु किरतम नाहिँ ।
 परम पुरुष तहँ आपही, अगम अगोचर माहिँ ॥७॥
 करता एक अगम है आप । वा के कोई माय न आप ॥
 करता के बंधू नहिँ नारी । सदा अखंडित अगम अपारी ॥
 करता कछु खावै नहिँ पीवै । करता कबहूँ मरै न जीवै ॥
 करता के कछु रूप न रेखा । करता के कछु बरन न भेषा ॥
 जा के जाति गोत कछु नहिँ । महिमा बरनि न जाय मो पाहीं ॥
 रूप अरूप नहीं तेहि नाँव । बर्न अबरन नहीं तेहि ठाँव ॥

॥ दोहा ॥

कहै कधीर बिचारि के, जाके बरन न गाँव ।
 निराकार और निर्गुना, है पूरन सब ठाँव ॥ ८॥
 करता किर्तिम बाजी लाई । उंकार तेँ सृष्टि उपाई ॥
 पाँच तत्त तीन गुन साजा । तातेँ सब किर्तिम उपराजा ॥
 किर्तिम धर्ती किर्तिम अकास । किर्तिम चंद सूर परकास ॥

किर्तिम पाँच तत्तुगुन तोनी । किर्तिम सृष्टि जु माया कीनी ॥
 किर्तिम आदि अंत मध तारा ॥ किर्तिम अंध कूप उजियारा ॥
 किर्तिम सर्गुन सकल पसारा ॥ किर्तिम कहिये दस औतारा ॥
 किर्तिम कंस किर्तिम प्रलयावन ॥ किर्तिम रघु यति किर्तिम रावन ॥
 किर्तिम कच्छ मच्छ वाराहा ॥ किर्तिम भादौ फागुन माहा ॥
 किर्तिम सागर समुद्र तरंगा ॥ किर्तिम सरसुति जमुना गंगा ॥
 किर्तिम सिम्रिति वेद पुराना ॥ किर्तिम काजी कतेब कुराना ॥
 किर्तिम जोग जज्ञ व्रत पूजा ॥ किर्तिम देवी देव जो दूजा ॥
 किर्तिम पाप पुन गुर सीषा ॥ किर्तिम पढ़ना मुनना लोखा ॥

कहै कबीर बिचारि के, किर्तिम करता नहिं होय ।

यह बाजी सब किर्तिम है, साच मुनो सब कोय ॥ ६ ॥
 करता एक और सब बाजी । ना कोई पोर मसायख काजी ॥
 बाजी ब्रम्हा बिस्नु महेसा । बाजी इन्द्र रुचन्द गनेसा ॥
 बाजी जल थल सकल जहाना । बाजी जानु जमौ असमाना ॥
 बाजी बरनो सिम्रित वेदा । बाजीगर का लखै न भेदा ॥
 बाजी सिद्ध साधक गुर सीषा । जहाँ तहाँ यह बाजी दीखा ॥
 बाजी जोग यज्ञ व्रत पूजा । बाजी देवी देवल दूजा ॥
 बाजी तीरथ व्रत आचारा । बाजी जोग जज्ञ ब्योहारा ॥
 बाजी जल थल सकल किवाई । बाजी से बाजी लिपटाई ॥
 बाजी का यह सकल पसारा । बाजी माहिं रहै संसारा ॥
 कहै कबीर सब बाजी माहीं । बाजीगर को चीन्है नाहीं ॥

॥ कबीर शब्दावली द्वितीय भाग समाप्त ॥

फ़िहरिस्त छपी हुई पुस्तकों की

जीवन-चरित्र हर महात्मा के उन की बानी के आदि में दिया है

कबीर साहिब का साखी संग्रह	...	...	...	III)
कबीर साहिब की शब्दावली, भाग पहला II), भाग दूसरा	..	..	..	II)
.. .. भाग तीसरा I), भाग चौथा	...	...	...	=)
.. .. ज्ञान-गुदड़ी, रेखते और भूलने	...	...	...	I)
.. .. अखरावती	..	...	...	-)II
भनी धरमदास जी की शब्दावली और जीवन-चरित्र	...	...	...	I=)
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की शब्दावली और जीवन-चरित्र भाग १	...	...	...	III)
.. .. भाग २, पद्मसागर ग्रंथ सहित	...	...	...	III)
.. .. रत्न सागर मय जीवन-चरित्र	...	...	...	III=)
.. .. घट रामायन मय जीवन चरित्र, भाग १	...	...	...	१)
.. .. भाग २	...	...	...	१)
गुरु नानक की प्राण-संगली सटिप्पण, और जीवन-चरित्र, भाग पहिला	...	...	...	१)
.. .. भाग दूसरा	...	...	...	१)
दादू दयाल की बानी, भाग १ "साखी" १-) भाग २ "शब्द"	...	...	...	III-)
सुंदर बिलास	...	...	...	II=)
पलटू साहिब भाग १—कुंडलिया	...	...	...	II)
.. भाग २—रेखते, भूलने, अरिल, कबित्त, सवैया	...	...	...	II)
.. भाग ३—भजन और साखियाँ	...	...	...	II)
जगजीवन साहिब की बानी भाग पहला II-) भाग दूसरा	...	...	...	II-)
दुलन दास जी की बानी	...	...	...	=)
चरनदासजी की बानी और जीवन-चरित्र, भाग १ II)II, भाग २	...	...	...	I=)II
गुरीबदास जी की बानी और जीवन-चरित्र	...	...	...	III=)
रैदास जी की बानी और जीवन-चरित्र	...	...	...	I-)II
दरिया साहिब (बिहार वाले) का दरिया सागर और जीवन-चरित्र	...	...	...	I-)
.. .. के चुने हुए पद और साखी	...	...	...	=)II
दरिया साहिब (मारवाड़ वाले) की बानी और जीवन-चरित्र	...	...	...	I)II
भीष्मा साहिब की शब्दावली और जीवन-चरित्र	...	...	...	I=)

गुलाल साहिब (भीखा साहिब के गुरु) की बानी और जीवन-चरित्र ...	॥१॥
बाबा मलूकदास जी की बानी और जीवन-चरित्र	३)
गुसाईँ तुलसीदास जी की बारहमासी	॥
यारी साहिब की रत्नावली और जीवन-चरित्र	१॥
बुल्ला साहिब का शब्दसार और जीवन-चरित्र	२॥
केशवदास जी की अमीघूँट और जीवन-चरित्र	१)
धरनोदासजी की बानी और जीवन-चरित्र	॥
मीरा बाई की शब्दावली और जीवन-चरित्र	१-॥
सहजो बाई का सहज-प्रकाश और जीवन-चरित्र	१-
दया बाई की बानी और जीवन-चरित्र	२॥
संतबानी संग्रह, भाग १ [साखी]	१)

[प्रत्येक महात्मा के संक्षिप्त जीवन-चरित्र सहित]

.. .. भाग २ [शब्द] १)

[एसे महात्माओं के संक्षिप्त जीवन-चरित्र सहित जो भाग १ में नहीं दी हैं]

दूसरी पुस्तकें

लोक परलोक हितकारी सपरिशिष्ट [जिसमें ऐतिहासिक]	तसवीर सहित
सूची व १०२ स्वदेशी और विदेशी संतों, महात्माओं और विद्वानों और ग्रंथों के अनुमान ६५० चुने हुए वचन	
१६२ पृष्ठों में छपे हैं]	सजिल्द १॥
(परिशिष्ट लोक परलोक हितकारी)	वेजिल्द ॥२॥
अहिल्याबाई का जीवन चरित्र अंग्रेजी पद्य में	३)

नागरी मीरीज़

सिद्धि	॥
उत्तर ध्रुव की भयानक यात्रा	॥
“गायत्री सावित्री” स्त्रियों के लिए अत्यन्त उपयोगी और शिक्षाप्रद पुस्तक	॥

दाम में डाक महसूल व रजिस्ट्री शामिल नहीं है वह इसके ऊपर लिया जायगा।

मनेजर, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद।

